बालतंत्रम्

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई - ४.

॥ श्रीः ॥

अथ बालतंत्रम्

(नानाविधौषधोपचारप्रयोगसंदर्भितम्)

विद्वद्वरकल्याणवैद्यविरचितम्

रोहतकजिलान्तर्गतबेरीनिवासिपण्डित-

वरनन्दकुमारराजवैद्यविरचितया

हिन्दीटीकया समेतम्



मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : अगस्त २०१९, संवत् २०७६

मूल्य : १०० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

श्रीः

अथ बालतंत्रस्थविषयानुक्रमणिका

इति बालतंत्रस्यविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीः

अथ बालतंत्रम्

भाषाटीकासमेतम्

विघ्नव्रततिविध्वंसकारिणं दुःखहारिणम् ।। कल्याणोऽहं नमस्कुर्वे विघ्नेशं ग्रंथसिद्धये ।। १ ।। प्रयोगसारप्रमुखागमेषु प्रोक्तेशु शास्त्रेषु च सुश्रुताद्यैः ।। यदुक्तमेकत्र नियुक्तमस्मिन् ग्रंथे मया तत्खलु बालतंत्रे ।। २ ।। अष्टौ दोषास्तु नारीणां नवमः पुरुषस्य च ।। रक्तात्पित्तात्तथावाताच्छ्लेष्मणः संनिपातकात् ।। ३ ।। ग्रहदोषविकारेण देवतानां प्रकोपनात् ।। अभिचारकृताच्चैव रेतोहीनः पुमांस्तथा ।। ४ ।। काकवंध्या मृतवत्सागर्भस्राव्यस्तु याः स्त्रियः ।। आदिवंध्याश्च गीयंते दोषैरेभिन चान्यथा ।। ५ ।।

दोहा – इष्टदेव के चरण को, नुत के बारंबार ।
बालतंत्र भाषा करूं, संस्कृत के अनुसार ।। १ ।।
जिले रोहतक वेरीपुरी है गो हमरो ग्राम ।
पंडित नंदकुमारजी, वैद्य हमारो नाम ।। २ ।।

विघ्नोंके विस्तारोंके नाश करनेवाले दुःखोंके हरनेवाले एतादृशविघ्नोंके ईश गणेशजी महाराजको ग्रंथकी आदिमें कल्याण नामक मैं वैद्य ग्रंथकी सिद्धिके लिये अर्थात निर्विघ्नतासे समाप्तिके लिये नमस्कार करता हूं ।। १ ।। सुश्रुतादिक मुनियोंके कहे हुए प्रयोगसारसे लेकर बहुत तंत्र हैं, उनके जो सार सुश्रुतादिकोंने कहा है वही सार इस बालतंत्रग्रंथमें नियुक्त किया है ।। २ ।। स्त्रियोंके आठ दोष होते हैं और नवमदोष पुरुषका होता है, रक्तसे १ पित्तसे २ वातसे ३ कफसे ४ संनिपातसे ५ ग्रहके दोषसे ६ देवताओंके कोपसे ७ अभिचारसे अर्थात् गुरु वृद्ध देवताओंके शापसे ८ ऐसे आठ प्रकारके स्त्रियोंके विकार होते हैं और पुरुषका वीर्यहीनताका एक दोष होता है ऐसे नव विकारोंसे संतानका अवरोध होता है अब स्त्रियोंके वंध्यापनके तीन भेद और कहते हैं, प्रथम काकवंध्या १ जिस स्त्रीके एक सन्तान होकर फिर नहीं हो. उसको काकवंध्या कहते हैं, दूसरी मृतवत्सा जिसके संतान हो होके मर जावें, उसको मृतवत्सा कहते हैं, तीसरी गर्भस्राषी जिस स्त्रीके गर्भस्थित हो होकर स्रव जाये गर्भ पूरा न हो उसको गर्भस्रावी कहते हैं, ऐसी तीन प्रकारकी वंध्या आठ प्रकारकी वंध्याओंसे अलग हैं. और एक आदिवंध्या जिसके

गर्भमात्र भी स्थित न हो. ये सब वंध्या अपने उदरके दोषसे होती हैं और कारणसे नहीं होती हैं। ३, ४॥

पुष्पं तु जायते यस्याः फलं चापि न विद्यते॥ तस्या दोषविकारांश्च ज्ञात्वा कर्म समारभेत्॥ ६॥ यस्याः पित्तहतं पुष्पं प्राज्ञस्तदुपलक्षयेत्॥ पक्वजंबूफलाकारं कृष्णं स्रवति शोणितम्॥ ७॥ कटिशूलं भवेत्तस्या उदरं परिदह्यते॥ प्रदरं च करोत्युष्णमेतत्पित्तस्य लक्षणम्॥ ८॥ प्रत्यौषधं प्रवक्ष्यामि येन गर्भोभिजायते॥ उत्पलं तगरं कुष्ठं यष्टीमधुकचंदनम्॥ एतानि समभागानि छागीक्षीरेण पेषयेत्॥ ९॥ पिबेन्नारी त्रिरात्रं वा यावत्स्रवति शोणितम्॥ ततो योन्यां विशुद्धायामिमां दद्यान्महौषधिम्॥ १०॥ लक्ष्मणां क्षीरसंयुक्तां नस्ये पाने प्रदापयेत्॥ तेन सा लभते पुत्रं रूपवंतं महाकविम्॥ ११॥

जिस स्त्रीके फूल आवे फल नहीं लगे अर्थात् ऋतुमती होवे गर्भाधान नहीं हो उसका आर्तव दूषित होता है प्रथम उसके विकारोंको देखके पश्चात् चिकित्सा करनी चाहिये॥ ६॥ जिस स्त्रीका फूल पित्तसे दूषित है उसका आर्तव वैद्यको देखना चाहिये. जैसा पका हुआ जामुनका फल होता है ऐसा काला रुधिर ऋतुकालमें योनिद्वारा स्रवे॥ ७॥ और कटिमें शूल हो पेटमें जलन हो हाथ पैर गरम रहें रुधिर नरम गिरे इतने लक्षण पित्तदूषित आर्तवके हैं। ८॥ अब इसकी औषध कहते हैं, जिससे यह विकार शांत हो और गर्भ स्थित हो—कमलगट्टा तगर, कूट, मुलहटी, सफेदचन्दन ये द्रव्य सब समान लेकर कूटकर बकरीके दूध में पीस कर कपडे से छान कर तीन दिन ऋतुकालमें स्त्री पान करे या जितनें दिन आर्तव जारी रहे उतने दिन तक पान करे इससे योनि शुद्ध हो जाने पर इस महौषधीको दे॥ ९॥ १०॥ लक्ष्मणा जडीको गौके दूधमें पीस कर छानकर १२ दिन तक सूंघने व पीने से स्त्री रूपवान, गुणी पुत्र को प्राप्त करती है॥ ११॥

यस्या वातहतं पुष्पं फलं तस्या न विद्यते॥ अतिसूक्ष्मतरं रक्तं कुसुंभोदकसन्निभम्॥१२॥ कटिशूलं भवेत्तस्या योनिशूलं तथा ज्वरम्॥ १३॥ सहकारस्य मूलं च मूलं व्याघ्रीभवं तथा॥ बृहतीजंबुमूलेक्षीरेणालोडचसापिबेत्॥ १४॥ सप्ताहंपंचरात्रंवायावत्स्रवति शोणितम्॥ ततोयोन्यांविशुद्धायांलक्ष्मणां क्षीरसंयुताम्॥ १५॥ नस्येपानेचदातव्यंतेनसालभते सुतम्॥ यस्याः श्लेष्महतं पुष्पं तस्या नापि भवेत्फलम्॥ १६॥ बहुलं पिच्छिलं रक्तं नातिरक्तं बहेत्तदा॥ नाभिमंडलमूलेतुशूलंभवतिदारुणम्॥ १७॥ अर्कमूलंप्रियगुंचकुसुमंनाग-

केसरम् ।। बलांचातिबलांचैवछागीक्षीरेण पेषयेत् ।। १८ ।। त्रिफला-त्रिकटुंचैवचित्रकंसमभागिकम् ।। अजाक्षीरेणसंपिष्ट्वा चालोडचयुवती-पिबेत् ।। १९ ।। त्रिरात्रं पंचरात्रंवायावत्स्रवतिशोणितम् ।। ततो योन्यां विशुद्धायां लक्ष्मणां नसि दापयेत् ।। २० ।।

जिस स्त्रीके वायुपीडित फूल आवे उसके फल नहीं लगे अर्थात् गर्भधारण नहीं करे, उसके लक्षण कहते हैं, खून बहुत सूक्ष्म रक्त कुसुंभके रंग सदृश आवे ।। १२ ।। और कटिमें शूल रहे अर्थात् दर्द रहे और योनिमें शूल रहे ज्वर रहे इतने लक्षण वायुपीड़ित ऋतु आनेके हैं । १३ ।। अब उसकी चिकित्सा लिखते हैं। आंबकी जडकी छाल दोनों कटेलियोंकी जड जामुनके जडकी छाल यह सममात्रा लेकर गौके दूधमें पीसकर वह स्त्री पीवे ।।१४।। पांच दिन तथा सात दिन जब तक रक्त स्रवे तब तक पीवे, पीछे योनि शुद्ध होनेसे लक्ष्मणा जडी दूधके साथ पीवे और संघे ।। १५ ।। यह उपाय करनेसे वह स्त्री रूपवान् गुणवान् पुत्रको प्राप्त हो । जिस स्त्रीके कफविकारसे पीडित फूल आवे उसके भी फल नहीं लगता है ।। १६ । अब उसके लक्षण कहते हैं, रक्त चिकना और घना पडता है और बहुत लाल नहीं अर्थात् प्याजी रक्त पड़ता है और नाभि में भयंकर दर्द रहता है । ।। १७ ।। अब उसकी चिकित्सा लिखते हैं, आककी जड, मेहँदी, लौंग, नागकेशर, खरेंटीकी जड, गंगेरनकी छाल यह सब औषधी सममात्रा लेकर बकरीके दूधमें घोटकर वह स्त्री पीवे ।। १८ ।। अथवा हरड, बहेडा, आंवला, सोंठ, मिरच, चीता, यह सब औषधी सममात्रा लेकर बकरीके दूधमें पीस कर घोल छान कर पीवे ।। १९ ।। तीन दिन तथा पांच दिन जितने दिन खून स्रवे उतने दिन पीवे, फिर योनि शुद्ध होने से लक्ष्मणा जडी बकरीके दूधमें घोट कर पीवे और सूंघे उस स्त्रीके गर्भ हो, रूपवान् गुणवान् पुत्र हो ।। २० ।।

संनिपातहतं पुष्पं ज्वरस्तीव्रश्च जायते ।। शोणितं तु भवेत्कृष्णंचा-त्युष्णंपिच्छिलंबहु ।। २१ ।। कुक्षिदेशे तथायोन्यांकटयांशूलंचजायते ।। गात्रभंगोभवेत्तस्या बहुनिद्राचजायते ।। २२ ।। गंधर्वहस्तमूलं च, सह-कारंत्रिवृत्तकम् ।। उत्पलंतगरंकुष्ठंयष्टीमधुकचंदनम् ।। २३ ।। अजा-क्षीरेणपिष्टंतुसप्तरात्रंततःपिबेत् ।। रजोहात्पंचरात्रंचयावत्स्रवति शोणि-तम् ।। २४ ।। ततोयोन्यांविशुद्धायांश्वेतार्कक्षुद्रिणींतथा ।। लमक्षणांवं-ध्यकर्कोटींश्वेतांचगिरिकर्णिकाम् ।। २५ ।। गवां क्षीरेणसंपिष्यनसिपा-नंप्रदापयेत् ।। दक्षिणेलभुतेपुत्रं वामेपुत्रीं न संशयः ।। २६ ।।

जिस स्त्रीके सन्निपातदोषसे दूषित ऋतु आवे उसके लक्षण कहते हैं, वह

स्त्री ऋतुमती हो जब बडा तीव्रज्वर हो, रक्त काला आने और बहुत गर्म और चिकना आवे ।। २१ ।। और कूखमें योनिमें कटिमें शूल हो अर्थात् पीडा हो और हडफोड रहे नींद ज्यादा आवे यह लक्षण त्रिदोष विकार ऋतु आनेमें होते हैं।।२२।। अब उसकी चिकित्सा कहते हैं, अरंडकी छाल, आमकी छाल, निसोत, कमलगट्टा, तगर, कूठ, मुलहठी, सफेदचन्दन ।। २३ ।। यह सब समान औषधी लेकर बकरीके दूधमें पीसकर ७ सात दिन पीवे अथवा जिस रोज ऋतुमती हो, उस रोजसे ५ पांच रोजतक पीवे, अव्वल यह मत है जहांतक खून गिरेव हांतक पीवे ।। २४ ।। फिर योनि शुद्ध होनेपर, सफेद आमकी जड, छोटी कटाईकी जड़, लक्ष्मणा जडी, बांझक कौडी, सफेद फूलकी विष्णुक्रांता ।। २५ ।। यह सब समान औषधी लेकर गौके दूधमें घोट छानकर नासिकासे वैद्य पिलावे दाहिनी नासिकासे पीवे तो पुत्र होवे और बाईं तरफकी नासिकासे पीवे तो पुत्री होय इसमें कुछ संदेह नहीं ।। २६ ।।

पूर्वोक्तदोषहीनायाग्रहदोषो न संशयः ।। जन्मपत्रीं समालोक्य-ग्रहपूजां समाचरेत् ।। २७ ।। व्रतं तयाप्रकर्तव्यंमध्यमस्यग्रहस्य च ।। विकारेण यदा वंध्या स्फुटं चिह्नं तदा भवेत् ।। रोगनाशे भवेद्गर्भोना-त्रयाकार्या विचारणा ।। २८ ।। देवताकोपवंध्यायास्तस्याश्चिह्नंवदाम्य-हम् ।। अष्टम्यां च चतुर्दश्यामावेशोवेदना तथा ।।२९।। गोत्रदेवींस-माराध्यदुर्गामंत्रंततोजपेत् ।। गणनाथंसमभ्यर्च्यपुत्रंसालभलेध्रु वम्।।३०।। कृत्याकृतंयदादोषंशरीरेवेदना भवेत् ।। दुर्गामंत्रंजपेन्नारीततोगर्भोभवे-द्ध्रु वम् ।।३१।। अन्यद्वंध्याष्टकं वक्ष्येसर्वतंत्रेषु गोपितम् ।। त्रिपक्षीशुभ्र-तीसज्जात्रिमुखीव्याघ्रिणीबकी ।। ३२ ।। कमलीव्यक्तिनीचैवता-सांचिह्नं वदाम्यहम् ।। त्रिपक्षीनामयावंध्यात्रिपक्षेपुष्पिता भवेत् ।।३३।।

पूर्व कहे हुए दोष रक्त, वायु, पित्त, कफ सन्निपात इन दोषोंके लक्षणों रहित स्त्री हो और गर्भधारण न करे तो ग्रहदोष होता है इसमें कुछ संदेह नहीं. अब उसकी या उसके पतिकी जन्मपत्रिका देखकर अवरोधक ग्रहका जप,पूजन, दान,हवन करावे तब सन्तान होवे ।। जो मध्यम ग्रह हो उसका व्रत उस स्त्रीके करना चाहिये । ।। २७ ।। जिस विकार से वंध्वा होती है उस विकारके लक्षण प्रकट होते हैं । उस विकारकी चिकित्सा करनेसे रोग निवृत्त होने पर गर्भस्थित हो जाता है इसमें कुछ ज्यादा विचार नहीं है ।। २८ ।। जो स्त्री देवताके कोपसे बांझ हुई हो उसके लक्षण कहते हैं : अष्टमीमें या चतुर्दशीमें उसके शरीरमें वेदना हो या इन तिथियोंमें ऋतु-मती हो, पीडा हो ।।२९ ।। तो उस स्त्री को गोत्रदेवीका आराधन कराना चाहिये, दुर्गापाठ करना चाहिये और गणेशजीका व्रत संकटाचतुर्थीका व्रतविधान करे

तब उस स्त्री को निश्चित पुत्र प्राप्ति होती है ।। ३० ।। और किसी स्त्रीने स्त्रीपर कुछ करा दिया हो उसका उपाय यह है :—छ: मास तक दुर्गापाठ करावे और देवीके प्रक्षालनके जलसे शिर, नाभि, कुच धोवे तो दोष मिटे । गुरुदेवके शापसे संतान नहीं हो तो गुरुदेवकी पूजा भक्तिकर आशीर्वाद लेवे और मनोवांछित भोजन वस्त्रदान देने पर सन्तान होये और जीवे । इतने लक्षण उपाय आठ प्रकारकी वन्ध्याके कहे हैं । ३१ ।। अब और भी आठ प्रकारकी वंध्या कहते हैं जो सर्व तन्त्रोंमें गुप्त हैं अब उनके नाम भेद लक्षण उपाय अलग २ कहते हैं । त्रिपक्षी १ शुभ्रति २ सज्जा ३ त्रिमुखी ४ व्याघ्रिणी ५ बकी ६ कमली ७ व्यक्तिनी ८ यह आठ प्रकारकी वंध्या हैं । अब इनके अलगअलग लक्षण कहते हैं । जो स्त्री तीन पक्षमें ऋतुमती हो उसको त्रिपक्षी कहते हैं । ३२ ।। ३३ ।।

द्वेजीरकेश्वेतवचाकर्कोटयाश्चफलंसमम् ।। तण्डुलोदकसंपिष्टं-चोत्थितासूर्यसम्मुखी ।। ३४ ।। त्रिदिनं च पिबेन्नारीदुग्धभक्तंचभोज-नम् ।। तेनगर्भोभवेन्नार्याः सत्यमेतन्नसंशयः ।। ३५ ।। शुभ्रतीनामया-वंध्याचिह्नंतस्यावदाम्यहम् ।। गात्रसंकुचनंनित्यंदेहेचैवविवर्णता ।।३६।। गर्भस्तस्यानजायेतसज्जावंध्या च कथ्यते ।। अप्रमाणैश्चदिवसैस्तस्याः पुष्पं प्रजायते ।। ३७ ।।

अब त्रिपक्षीकी चिकित्सा लिखते हैं। स्याहजीरा फेदजीरा, खुरासानीवच, ककौडाका फल ये औषधियां सब समान लेकर चावलोंके पानीसे पीसकर प्रभात समय स्नानकर सूर्यके सामने खडी होकर ३ दिन तक पीवे और दूध चावल भोजन करे तो उस स्त्रीके अवश्य गर्भ रहे यह सत्य वार्ता है, इसमें कुछ संदेह नहीं ।। ३४ ।। ३५ ।। अब शुभ्रती नामक वंध्याके लक्षण कहते हैं, गात्र सकुचा रहे और देहका रूप रंग विवर्ण हो जावे ।। ३६ ।। शुभ्रती नामक वंध्याके गर्भ स्थित नहीं होता है, इस ग्रन्थकी यह मान्यता है और तंत्रोंमें शुभ्रती वंध्याका इलाज लिखा है सो यहांभी लिखते हैं । नागकेशर टंक ३ हाऊबेर, टंक ३ मोर-शिखा टंक ३ मिसरी टंक १८ ये औषधियां पीस कपडछान कर पूडी टंक ३ तीन-की बनावे प्रातःकाल स्नानकर सूर्य सन्मुख खडी हो एक वर्णी गायके दूधसे पुडिया लेवे चावल दूधका भोजन करे और वस्तुका त्यागकरे, शुभतीवंध्याके संतान हो ।। अब सज्जानामक वंध्याके लक्षण कहते हैं, सज्जा वंध्याके ऋतु अप्रमाणित दिनोंमें आता है कभी ऋतु देरमें आता है। कभी ऋतु जलदी आता है उह स्त्रीको सज्जा वंध्या कहते हैं ।। ३७ ।।

जीरेवचांसमंगांचगृह्णीयाच्छुभवासरे कर्कोटींभृंखलाकारींपिष्ट्वा तडुलवारिणा ।। दिनत्रयंयतानारीसूर्यस्यसम्मुखीपिबेत् ।। ३८ ।। सदु-

ग्धंषष्टिकान्नंचभक्षयेद्दिनसप्तकम् ।। तेनगर्भोभवेन्नार्यास्त्रिमुखीनामकथ्यते ।। ३९ ।। तस्याश्चिह्नंप्रवक्ष्यामिमैथुनेसलिलंस्रवेत् ।। भोजनेमैथुनेलौल्यं गर्भस्तस्या न विद्यते ।। ४० ।। व्याघ्रिण्याउत्तरेकालेऽपत्यमेकंप्रजायते ।। त्रिपक्ष्युक्तंप्रदातव्यमौषधंपुत्रदायकम् ।। ४१ ।। बक्यसृक्स्रवतेश्वेतंदश-मेऽष्टमकेदिने ।। असाध्या सातुविज्ञेया औषधं नैव कारयेत् ।। ४२ ।।

अब सज्जा वंध्याकी चिकित्सा कहते हैं। स्याहजीरा, सफेदजीरा, खुरासानीवच, मंजीठ, ककोडी, हडजोडी ये दवाएं शुभ दिन सब समान लेकर चावलोंके जलमें बारीक पीस छानकर प्रातःकाल स्नानकर सूर्यके सामने खडी हो दिन ३ तीन तक यत्नसे नारी पीवे ।। ३७ ।। ३८ ।। दूध सांठी चावल दिन ७ भोजन करे इससे सज्जानाम वंध्याके गर्भ रहे संतान होवे अब त्रिमुखीनाम वंध्याके लक्षण कहते हैं ।। ३९ ।। मैथुन समयमें भोग करते योनिसे जल स्रवे और भोजनसे और मैथुनसे तृप्त न हो, भोजन मैथुनमें चित्त बहुत रखे, उस त्रिमुखी वंध्याके गर्भ स्थित नहीं होता है ।। ४० ।। अब व्याघ्रिणी वंध्याके लक्षण कहते हैं :– जिस स्त्रीके एक सन्तान अवस्था चढकर हो दूसरी होवे नहीं उसको व्याघ्रिणी वंध्या कहते हैं उसकी चिकित्सा वही है जो त्रिपक्षी वंध्याके लिये कही है, वही पुत्र देनेवाली औषधी देनी चाहिये ।। ४१ ।। अब बकी नाम वंध्याका लक्षण कहते हैं, बकी वंध्याके सफेद खून धातु सदृश आठवें दशवें दिन गिरे उसको बकी वंध्या कहते हैं यह असाध्य होती है इस वंध्याकी औषधी वैद्य न करे ।। ४२ ।।

सलिलंस्रवतेयोन्याः कमलिन्यांनिरंतरम् ।। असाध्या साचविज्ञेया-औषधंनैवकारयेत् ।। ४३ ।। व्यक्तिनी नामवंध्यायाःप्रमेहोभवति स्फुटम् ।। रक्तापामार्ग जंबीजंशर्करामर्द्दकीफलम् ।। ४४ ।। औषधीं-रत्नमालांचगोदुग्धेनप्रपेषयेत् ।। त्रिसप्तदिवसं पीत्वा प्रमेहं नाशये-द्ध्रुवम् ।। ४५ ।। कृष्णागुरुं केसरं च कर्कोटीं सरलां तथा ।। द्वेजी-रकेसवत्सागोक्षीरेणालोड्य सा पिबेत् ।। ४६ ।। दिनत्रयं दुग्धषष्टिभो-जनंगर्भधारकम् ।। लक्षणानि परिज्ञाय ह्यौषधीं कारयेत्सुधीः ।। ४७ ।।

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे षोडशवंध्याप्रतीकारो नाम प्रथमः पटलः ।। १ ।।

अब कमलिनी वंध्याके लक्षण, कहते हैं, कमलिनी वंध्याकी योनिसे निरंतर पानी बहता है उस स्त्रीका वंध्यत्व असाध्य होता है उसकी औषध वैद्य नहीं करे उसके सन्तान होनी असंभव है ।। ४३ ।। अब व्यक्तिनी वंध्याके लक्षण कहते हैं। व्यक्तिनी वंध्याको प्रकटतासे प्रमेह होता है श्वेत धातु नित्य गिरती है सिद्धांत वार्ता यह है स्त्रियोंके प्रमेह होता नहीं है और यहां प्रमेह लिखा इसका यह तात्पर्य

है सोमनामक प्रदर हो जाता है अब इसका इलाज यह है कि लाल चिरचिराके बीज, मिसरी, आंवला, रतनजोत ये औषधियां सब बरोबर लेकर गौके दूधमें पीसकर छानकर दिन २१ तक पीवे तो व्यक्तिनीका प्रमेह निश्चय दूर हो जावे ।। ४४ ।। ४५ ।। प्रमेह दूर होने पर काला अगर, केसर, ककोडा, मोरशिखा, स्याहजीरा, सफेदजीरा ये सब औषधियां समान लेकर बछड़ेवाली गौके दूधमें पीस छानकर तीन ३ दिन पीवे ।। ४६ ।। तीन दिन गर्भधारण करनेवाली इस औषधीका सेवन करे और दूध चावलका भोजन करे, अवश्य गर्भ रहे, संतान हो इस बालतंत्रग्रंथमें सोलह प्रकारकी वंध्या कही हैं, उनके लक्षण, देखकर विचारकर वैद्यवर औषधी करे, जिससे यशको प्राप्त हो ।। ४७ ।।

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्र भाषाटीकायां प्रथमः पटलः ।। १ ।

पूर्वोक्तचिह्नहीनानां प्रतीकारं वदाम्यहम् ।। द्वेजीरके श्वेतवचावटपिप्पलबंदकी ।। १ ।। श्रृंगालकंठरोमाणिकर्कोटीफलमूलके ।। सहस्रमूलीं सवत्सागोक्षीरेणार्थदिनत्रयम् ।।२ ।। सूर्यस्य सम्मुखं पीत्वा क्षीरषष्टिकभोजनात् ।। गर्भोभवतिवंध्यायाध्रुवमस्मिन्नसंशयः ।। ३।। पुष्येवाशततारायांशंखपुष्पींसमाहरेत् ।। पिष्ट्वातद्रसमादायऋतुस्नाताचतत्पिबेत् ।। वंध्या गर्भंदधात्याशुनात्रकार्याविचारणा ।। ४ ।। श्वेतकुलित्थसंभूतंमूलंनागबलोद्भवम् ।। अपराजिता मृतुस्नातागोदुग्धेनसमंपिबेत् ।। दिनत्रयंतथासप्तगर्भोभवतिनान्यथा ।। ५ ।। अश्वगंधाभवंमूलंगोघृतेनसमन्वितम् ।। ऋतुस्नातापिबेन्नारीत्रिदिनैर्गर्भधारकम्।।६।।

अब पूर्वपटलमें कही हुई जो वंध्या हैं उनके लक्षणोंसे रहित वंध्याओंके और प्रतीकार कहते हैं। सफेदजीरा स्याहजीरा, खुरासानी वच, बडकी डाढी, पीपलकी डाढी, स्याल के गलेका केश, ककौडीकी जड और फल, शतावर यह सब दवा समान लेकर कूट कपडछान कर ६ मासे बच्छावाली गौके दूधके साथ ३ दिन तक लेवे ।। १ ।। २ ।। स्नान कर सूर्यके सन्मुख खडी हो पीवे और दूध चावलका भोजन करे तो वंध्या स्त्रीके गर्भस्थित हो इसमें कुछ संदेह नहीं ।। ३ ।। पुनरुपायः। पुष्य नक्षत्रमें अथवा शतभिषा नक्षत्रमें धोलफूलीको पंचांगसमेत लाकर पीसकर उसका रस निकालकर ऋतुमती स्त्री स्नान करके पीवे तो वह वंध्या शीघ्रगर्भको धारण करे। इसमें कुछ संदेह नहीं ।। ४ ।। पुनरुपायः १ और तंत्रको लिखते हैं। गोरशिखाजडीको प्रथम दिन संध्याको निमंत्रित करे। अगले दिन प्रातःकाल पुष्य नक्षत्र आदित्यवार अथवा हस्त नक्षत्र आदित्यवार ऐसे

योगके दिन उपाड लावे फिर पीसकर एकवर्णी गौके दूधके साथ ऋतुस्नान कर सूर्य सन्मुख खडी होकर आर्द्रकेशों आर्द्रकपडों यह औषधी लेवे दुग्ध चावलका भोजन करे वंध्याके गर्भ रहे संतान हो। पुनरुपायः। सफेदकुलथी गंगेरणकी जडकी छाल, अपराजिताकी जड यह सब समान औषधी ऋतुस्नान करके कपिला गौके दूधके साथ पीवे दिन तीन तक तथा दिन सात तक तो वंध्या स्त्रीके गर्भ रहे, संतान हो ॥ ५ ॥ पुनरुपायः। असगंध नगौरी कूट कपडछान करके गौके घीमें मिलाय ऋतुस्नान कर दिन तीन चाटे तो वंध्यास्त्रीको गर्भ रहे संतान होवे ॥ ६ ॥

सुश्वेतकंटकीमूलंतन्मयूरशिखाभवम् ॥ त्र्यहंगोपयसानारीपिबेग्दर्भोभवेद्ध्रुवम् ॥ ७ ॥ बीजपूरस्यबीजानि गोदुग्धेनचपेषयेत् ॥ पिबेग्दर्भोभवेन्नार्यास्त्रिदिनंषष्टिकादनात् ॥ ८ ॥ मेषीदुग्धीभवंमूलंगोदुग्धेनचसंपिबेत् ॥ ऋतुत्रये ततो गर्भोभवत्येव न संशयः ॥ ९ ॥ त्रिफलापिप्पलीद्राक्षालोध्रंजीर्णोगुडस्तथा ॥ वर्तिःकृतायोनिमध्येक्षिप्तागर्भकरीमता ॥ १० ॥ पिपप्लीदेवतादारुलाक्षागुग्गुलुर्निर्मिता ॥ वर्तिकायोनिमध्येतुक्षिप्ताशो धनकारिणी ॥ ११ ॥ शुण्ठीमुस्ताहरिद्रेद्वेबलाहिंगुमिसी परम् ॥ एषांवर्तिः कृता योनौक्षिप्ताशोधनगर्भकृत ॥ १२ ॥

सफेद कटेलीकी जड मोरशिखाकीजड इन औषधियोंका चूर्णकर गौके दूधके साथ वंध्या स्त्री ३ दिन पीवे तो निश्चय गर्भ रहे और संतान हो ॥ ७ ॥ पुनरुपायः। विजौराके बीजोंको गौके दूधमें पीसे फिर दूधमें छानकर ३ दिन वंध्या स्त्री पीवे। और सांठीचावलका भोजन करे गर्भ स्थित हो संतान हो ॥ ८ ॥ पुनरुपायः। मेढासिंगी और दूधीकी जड ये औषधियां कूट कपडछान कर गौके दूधसे ३ दिन वंध्या स्त्री ऋतुमती हो उस समय पीवे तो गर्भस्थित हो इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ ९ ॥ अब गर्भ धारण करनेवाली बत्तियोंको कहते हैं, बडी हरडें, बहेडा, आंवला, पीपल, मुनक्कादाख, लोद, पुराना गुड इन औषधियोंको कूट कपडछान कर फिर जलमें पीसकर कपडाके दवा लगाके बत्ती ३ अंगूठा समान मोटी आठ अंगुल लंबी बनाकर ऋतु समय योनिमें रक्खे, योनि शुद्ध हो, कोष्ठ शुद्ध हो, स्त्री गर्भधारण करे संतान हो ॥ १० ॥ अन्यावर्तिः ॥ पीपल, देवदार, लाख, गुग्गुलु इन दवाइयोंकी वत्ती करके अंगुल ८ की योनिमें रखे योनि शुद्ध हो, गर्भधारण करे, संतान हो ॥ ११ ॥ अन्वावर्तिः। सोंठ, नागरमोथा, हलदी, दारुहलदी, खरैंटी, हींग, सौंफ, गूगल, ये औषधियां सब समान लेकर बडी बारीक पीसकर कपडे पर लगाकरके बत्ती बनाकर योनिमें रक्खे तो योनि शुद्ध हो गर्भस्थित हो ॥ १२ ॥

गंधकं शंखचूर्णं च सममात्रां मनःशिलाम् ।।ज लेनसह संपिष्य-निक्षिपेद्योनिमंडले ।। १३ ।। वेदनाशोफकण्डूश्चहरत्येवनसंशयः ।। १४ ।। बलासिताढ्यातिबलामधूकंवटस्यशुंगंगजकेसरं च ।। एतन्मधुक्षीरगव्यैर्निपीतंवन्ध्यापिपुत्रंनियतं प्रसूते ।। १५ ।। एरंडधात्रीफलमातुलुंगबीजानि मूलं सितकंटकार्याः ।। दिनत्रयं क्षीरयुतंप्रपीतमेतत्सुखंगर्भवरं प्रधत्ते ।। १६ ।। अश्वगन्धाकषायेण पयः सिद्धं घृतान्वितम् ।। प्रातः पीत्वाऋतुस्नाता धत्तेगर्भंनसंशयः ।। १७ ।। पुष्योद्धृतंसद्विधिलक्ष्मणायामूलंतथान्यत्सहदेविकायाः ।। घृतान्वितंकन्यकयाप्रपिष्टंदुग्धेनपीतं प्रकरोतिगर्भम् ।। १८ ।।

योनिलेप कहते हैं आंवलासारगंधकर, शंखका चूना दोनोंके बराबर मनशिल इन तीनों दवाइयोंको जलमें पीसकर योनिके बीचमें रख दे अर्थात् लेप करने से योनिकी पीडा मिटे सोजा दूर हो खुजली योगिकी दूर हो इसमें कुछ संदेह नहीं ।। १३ ।। १४ ।। पुनर्वन्ध्योपायः । खरैंटी, मिसरी, सदहदेई, मुलैठी, बडकी दाढी, नागकेसर ये औषधियां सर्वसमान लेकर कूट कपड छानकर दूधमें सहद और घी मिलाकर दवा खाकर ऊपरसे यह दूध पीवे सातदिन तक करने पर अवश्य पुत्रको उत्पन्न करे ।। १५ ।। पुनरुपायः । अरंडकी गिरी आंवला, बिजौरेके बीज, सफेद कटेलीकी जड़ ये सब दवाई कूट कपडछान कर ऋतुस्नान किये पीछे वंध्या स्त्री दिन ४ गौके दूधके साथ पीवे तो सुखपूर्वक गभको धारण करे ।। १६ ।। पुनरुपायः । अगसंधका कषाय करके सिद्ध किये हुए दूधको धृत डालके ऋतुस्नाता पुनरुपायः । असगंधका कषाय करके सिद्ध किये हुए दूधको घृत डालकर ऋतुस्नाता वन्ध्या स्त्री प्रातःकाल पीवे तो गर्भको धारण करे इसमें कुछ सन्दह नहीं ।। १७ ।। पुनरुपायः ।। पुष्यनक्षत्रमें विधिपूर्वक लक्ष्मणा जडीकी जड लावे और सहदेईकी जड लावे फिर गौके घृतमें कन्याके पास पिसवाके गोली बांधकर गौके दूधके साथ वंध्या स्त्री पीवे तो गर्भ रहे ।। १८ ।।

पत्रमेकं पलाशस्यगर्भिणीपयसान्वितम् ।। पीत्वापुत्रमवाप्नोतिवीर्यवंतंनसंशयः ।। १९ ।। कुरंटमूलं धातक्याःकुसुमानिवटांकुराः ।। नीलोत्पलंपयोयुक्तमेतद्गर्भप्रदंध्रुवम् ।। २० ।। संयोज्यकर्षंवृभस्यमूलंतैलंप्रपीतं कुण्डवप्रमाणम् ।। स्त्रियापयोभक्तभुजा दिनांतेसुतंप्रदत्तेनियतंप्रशस्तम् ।। २१ ।। पुत्रसंजीविकामूलंशिवलिंगीफलान्वितम् ।। पुष्पोद्धृतंपयोमिश्रंपीतंगर्भप्रदंध्रुवम् ।। २२ ।। पुत्रसंजीविकामूलविष्णुक्रांतेशलिंगिकाः ।। पीत्वापुत्रमवाप्नोतिनकन्याजायतेस्फुटम् ।। २३ ।।

रसः प्रपीतःसितकंटकार्यामूलस्यपुष्पंत्रिदिनंजलेन ।। मयूरमूलस्यचनासिकायादत्तेसुतंदक्षिणसंपुटेन ।। २४ ।।

पुत्र होनेका उपाय ।। गर्भवती स्त्री पुनर्वसु नक्षत्रके दिन संध्यासमयमें पलाश वृक्षको निमंत्रित करे; प्रभात समय सूर्योदयमें जाकर पलाश वृक्षके पत्ते ३०० तीन सौ तोड लावे छायामें सुखाले फिर एक पत्ता रोज प्रातःकाल पीसकर गौके दूधके साथ जब तक संतान हो तब तक पीवे तो बड़ा पराक्रमी पुत्र प्राप्त हो, इसमें कुछ सन्देह नहीं ।। १९ ।। गर्भ रहनेका और उपाय कहते हैं—कुरंडकी जड़, धायके फूल, बडकी गोभां नीलोफर ये सब कूट कपडछान कर गौके दूधके साथ पीवे तो गर्भको पैदा करे इसमें संदेह नहीं ।। २० ।। पुनरुपायः ।। बांसेकी जड एक कर्ष १६ मासे मीठे तेलमें मिलाकर पीवे और संध्या समयमें दूध भातका भोजन करे तो वंध्यास्त्री श्रेष्ठ पुत्रको पैदा करे ।। २१ ।। पुनरुपायः ।। जीया पोताकी जड, शिवलिंगीका फल, पुष्यनक्षत्रमें लावे फिर गौके दूधके साथ यह औषधी पीई हुई निश्चय करके गर्भको पैदा करती है इसमें कुछ संदेह नहीं ।। २२ ।। जीयापोताकी जड, विष्णुक्रांता, शिवलिंगी यह औषधिऋतुस्नान किये पीछे गौके दूधके साथ पीवे तो गर्भधारण करे पुत्र हो कन्या नहीं उत्पन्न हो ।। २३ ।। अन्योपायः ।। सफेदकटेलीकी जडका रस दाहिनी नासिका से पीवे अथवा सफेद कटेहलीका फल जलमें पीसकर दाहिनी नासिका से पीवे अथवा मोरशिखाकी जड़का रस दाहिनी नासिकासे पीवे ३ दिन तो यह औषधी पुत्रको उत्पन्न करती है इसमें सन्देह नहीं ।। २४ ।।

मंजिष्ठामधुकंकुष्ठंत्रिफलाशर्करावचा ।। अजमोदा हरिद्रेद्वेहिंगुतिक्तकरोहिणी ।। २५ ।। काकोलीक्षीर काकोलीमूलंचैवाश्वगंधजम् ।। जीवकर्षभकौमेदे रेणषुकाबृहतीद्वयम् ।। २६ ।। उत्पलंचंदनंद्राक्षा पद्मकंदेवदारुच ।। एभिरक्षमितैर्भागैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ।। २७ ।। चतुर्गुणेनपयसायुक्ततन्मृदुनाग्निना ।। एतत्सर्पिर्नरः पीत्वा स्त्रीषु नित्यं प्रवर्तते ।। २८ ।। पुत्रान्संजनयेच्छ्रेष्ठाञ्छ्रीयुक्तान्प्रियदर्शनान् ।। वंध्या च लभतेगर्भंनात्रकार्याविचारणा ।। २९ ।। याचैवाऽस्थिरगर्भास्याद्यावाजनयतेमृतम् ।। स्वल्पायुषं प्रसूतेवायाचकन्याः प्रसूयते ।। ३० ।। कल्याणेयोगुणः प्रोक्तोगुणः सोप्यत्रवैभवेत् ।। हितमेतत्कुमाराणां सर्वग्रहविशोषणम् ।। ३१ ।। सिद्धकल्याणकंनाम घृतमेतन्महद्वरम् ।। वीर्यमस्य शतं वारं दृष्ट्वा च कथितं मया ।। ३२ ।।

मंजीठ, मुलहठी, कूट, हरड, बहेडा, आंवला, मिसरी वच, अजमोद, हलदी दारुहलदी, हींग, कुटकी ।। २५ ।। काकोली, क्षीरकाकोली, असगंध, गौरी, जीवक

ऋषभ, मेदा, महामेदा, रेणुकबीज, खडीकटेहलीकी जड, पसरकटेलीकी जड, ।। २६ ।। कमलगट्टा, सफेदचंदनका बुरादा, मुनक्का दाख, पदमाख देवदार, ये सब दवाइयां एक एक तोला लेकर सेर भर घीमें पकावे ।। २७ ।। चार सेर गौका दूध डालकर दवाइयोंका कल्क करके मंद मंद अग्निसे पकावे फिर सब दूध जलजावे औषधी सिकजावे तब अग्निसे उतारले, ठंढा होनेसे घृत छानके शुद्ध-पात्रमें रखदे, यह घृत एक तोला रोज पुरुष पीवे तो स्त्रियोंमें नित्य प्रवर्त रहे बलहीन नहीं हो ।। २८ ।। इस घृतके प्रतापसे पुरुष बडे सुंदर और श्रेष्ठ और लक्ष्मीयुक्त पुत्रोंको उत्पन्न करे और वांझ स्त्री गर्भको धारण करे, इसमें कुछ विचार नहीं यह निश्चय है ।। २९ ।। जो स्त्री गर्भधारण न करे अथवा जो स्त्री मरी संतानको पैदा करती हो, अथवा स्वल्प आयुवाली संतानको पैदा करती हो अथवा जो स्त्री कन्याओंको पैदा करनेवाली हो, उन्हींको यह घृत हितकारी है ।। ३० ।। जो कल्याणघृतमें गुण कहे हैं वही गुण इसके भी हैं और बालकोंको भी यह हित है, सर्व बालग्रहोंको दूर करनेवाला है ।। ३१ ।।यह सिद्ध कल्याण नाम करके बडा श्रेष्ठ घृत है, सौबार इस घृतका गुण देखकर कल्याणवैद्यने कहा है ।। ३२ ।। इति सिद्धकल्याण घृतम् ।।

गुडपलावलेहंचकृत्वातंडुलवारिणा ।। लीढ्वागर्भंन धत्तेस्त्रीसुरतै-करताभवेत् ।। ३३ ।। आरनालपरिपेषितंत्र्यहंवाणिपुष्पसहितं तु कामिनी ।। सत्पुराणगुडमुष्टिसेविनोगर्भमेवधरतेकदापि न ।। ३४ ।। पीतंज्योतिष्मतीपत्रंराजिकोग्रासनंत्र्यहम् ।। शीतेनपयसा पिष्टंकुसुमं जनयेद्ध्रुवम् ।। ३५ ।। शुंठीगुडेनसंपिष्टा भक्षयेद्दिनसप्तकम् ।। तेनगर्भो-भवेन्नार्याःसत्यंसत्यं मयोदितम् ।। ३६ ।।

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे साधारणवंध्यौषधकथननाम
द्वितीयः पटलः ।। २ ।।

गर्भ निरोध उपाय : –पुराना गुड ४ तोले लेकर चावलोंके पानी से अवलेह बनावे ७ दिन उसको चाटे उतनाही अंदाज हररोज चाटे तो वह स्त्री नित्य विषयमें रत रहने पर भी गर्भ धारण न करे ।। ३३ ।। अन्योपायः ।। जो स्त्री बणीके फूलको अर्थात् वाडीके फूलकी कांसीको ३ दिन कांजीके पानीसे घोटकर पीवे और एक मुष्टि पुराना गुडका सेवन करे तो गर्भको धारण कदाचित् नहीं करे ।। ३४ ।। स्त्रीके ॠतु आनेका उपायः मालकांगनीके पत्ते, राई, वच, विजयसार, ठंढे जालसे पीसकर कपडेसे छानकर ३ दिन पीवे तो गये हुए फूल फिर आने लगे निश्चत करके इसमें संदेह नहीं ।। ३५ ।। पुनर्गर्भोपायः ।। सोंठ और गुड दोनों

पीसकर ७ दिनतकस्त्री खावे तो स्त्रीके अवश्यगर्भ रहे कल्याणवैद्य कहता है यह वार्ता मैं सत्य कहता हूं ।। ३६ ।।

इति श्रीपण्डितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां द्वितीयः पटलः ।। २ ।।

शुक्रहीनस्यबैपुंसः कथयाम्यौषधीमहम् ।। माक्षिकंधातुमाक्षीकंलोहचूर्णशिलाजतु ।। पारदंचविडंगंचपथ्याभागसमन्वितम् ।। १ ।। घृतेनभावयित्वातुपात्रेकृत्वातुलोहजे ।। विडालपदमात्रंतुभक्षयेच्चदिनेदिने ।। २ ।। तस्यव्याधिजरामृत्युर्वर्षेणैकेन नश्यति ।। कामयेत्स्त्रीसहस्रंतुबहुशुक्रोबहुप्रजः ।। ३ ।। कपिकच्छुभवंमूलंक्षीरपिष्टंपिबेन्नरः ।। अक्षयंजायतेशुक्रंकामयेत्स्त्रीसहस्रशः ।। ४ ।। माषोयवः श्वदंष्ट्रावावानरीशतमूलिका ।। पयसापेषयेत्तेनपक्वयद्घृतपूपकम् ।। ५ ।। दिनांतेभक्षयेदेकं ततः क्षीरं पिबेन्नरः ।। षण्मासाम्यंतरेचैववृद्धोपितरुणायते ।। ६ ।। मासमेकंप्रयोगेणशुक्रवृद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।। ७ ।।

जिस पुरुषके शरीरमें धातु न हो, उसका उपाय लिखते हैं–– शहद, सोनामक्खीकी भस्म, लोहसार, शिलाजीत, रससिंदूर, वायविडिंग, बडी हरडकी छाल, ये दवा सर्वसमान लेकर गौके घीकी भावना देकर लोहके बर्तनमें अर्थात् हमामदस्तेमें या खरलमें, सर्वदवाका एक जिगर करके नित्य एक वर्ष खावे ऐसा ग्रन्थका लेख है, हमारा मत यह है शरीरके बल माफिक खावे, वर्षभरके सेवन करनेसे रोग वृद्ध अवस्था, मृत्यु, सब नष्ट हो जाती हैं और हजारों स्त्रियोंके संग रमण करनेकी ताकत हो जाती है बहुत शुक्र शरीरमें पैदा हो जाता है और बहुतसी संतान होने लग जाती हैं ।। १ ।। २ ।। ।। ३ ।। पुनरुपायः ।। कौंच वृक्षकी जड दूधमें पीसकर जो पुरुष पीया करे तो उस पुरुषके शरीरमें अक्षयवीर्य पैदा होता है और वह पुरुष हजारों स्त्रियोंकी इच्छा करने लगता है ।। ४ ।। पुनरुपायः ।। उडद, जौ, गोखरू, कौंचके बीज, सफेद मुसली ये औषधियां सर्व समान लेकर कूट कपडछान करके दूधमें बारीक पीसकर उसका घेवर बनाले ।। ५ ।। फिर रात्रिको उसमेंसे ४ तोले खाकर ऊपरसे दूध गरम पीवे तो ६ छः महीने सेवन करनेसे वृद्ध पुरुष जवानके माफिक हो जाता है । ६ ।। और एक महीना खानेसे निश्चय शरीरमें वीर्यकी वृद्धी हो जाती है इसमें संदेह नहीं है ।। ७ ।।

धातकीत्रिफलाचूर्णंरसेनेक्षुजकेनतु ।। भावयित्वा ततः पश्चान्मधुशर्करसंयुतम ।। ८ ।। जीर्णकायोपि तल्लीढ्वापिबेत्क्षीरंततोनिशि ।।

कामयेत्स्त्रीसहस्राणि कामाग्निस्तस्यवर्द्धते ।। ९ ।। कपिकच्छुकमूलानितिलाश्चैवाश्वगंधिका ।। विदारीकंदसंचूर्णंषष्टिकातंडुलानिच ।।१०।। एतानिपयसापिष्ट्वाघृतेनसहपाययेत् ।। दिनेदिनेचसंभक्षेद्यदिनारीगृहे भवेत् ।। ११ ।। विदारीगोक्षुरंचैवपयसासहभक्षितम् ।। जीर्णकायेप्रदातव्यं सुरताग्निप्रदीपनम् ।। १२ ।। माषायवोऽश्वगंधाच वानरीशतमूलिका ।। कोकिलाक्षस्यबीजानिशाल्मल्लीचशतावरी ।। सघृतंपयसापीत्वाषण्ढोपिरमयेत्स्त्रियः ।। १३ ।। यवमाषोद्भवंचूर्णंशर्कराक्षीरमिश्रितम् ।। जीर्णांतेचपिबेत्क्षीरंशुक्रवृद्धिस्ततोभवेत् ।। १४ ।।

धायके फूल, हरड वडी, बहेडा, आंवला यह चारों दवा समान लेकर ईखके रसकी भावना देवे पीछे धूपमें सुखाकर बराबरकी मिसरी मिलाकर शहदमें चाटे ।। ८ ।। जिस पुरुषका शरीर जीर्ण भी हो गया हो वह भी रात्रिमें इस चूर्णको सहदमें चाटकर ऊपरसे दूध पीवे तो हजारों स्त्रियोंकी इच्छा करने लगे और कामाग्नि उसके अत्यंत बढ जाती है ।। ९ ।। कौंचवृक्षकी जड, सफेद तिल, असगंध, विदारीकंदका चूर्ण सांठी चावल ।। १० ।। यह सब समान औषधी लेकर कूट कपडछान करके ६ मासेकी फंकी लेकर ऊपर गरम दूधमें घी डालकर पीवे यह योग तब नित्य खावे जब घरमें स्त्री होवे. नहीं तो नित्य सेवन करना नहीं चाहिये ।। ११ ।। विदारीकंद और गोखरू इन दोनोंका चूर्ण दूधके संगखाना चाहिये यह चूर्ण वृद्ध पुरुषोंके भी कामाग्निको उत्पन्न कर सकता है ।। १२ ।। अन्योपायः ।। उडद, यव, असगंध, कौंचके बीज, सफेद मुसली, तालमखाना, सिंभलकी मुसलीं, सतावर यह औषधी सर्व समान लेकर कूट कपडछान करके घृतमें मरकोइके दूधके साथ पीवे तो नपुंसक पुरुष भी स्त्रियोंके संग रमण करने लग जाता है ।। १३ ।। अन्योपायः ।। यव और उडद इन दोनोंका चूर्ण मिसरी सहित दूधके साथ पीवे और यह हजम हुए पीछे फिर दूधको पीवे तो वीर्यकी वृद्धि हो देह पुष्ट हो नामर्द मर्द हो जावे ।। १४ ।।

धात्रीफलोद्भवंचूर्णरसेनेक्षोः सुभावितम् ।। विबुधो बहुधापश्चात्पेषयित्वापुनः पुनः ।। १५ ।। मधुशर्करयायुक्तंसमभागेनकारयेत् ।। पुरुषाणांचनारीणांप्रयोक्तव्यंसुताप्तये ।। १६ ।। शतावरींतुनिष्पीडचरसप्रस्थद्वयं हरेत् ।। तैलंतेनपचेत्प्रस्थंक्षीरं दत्त्वाचतुर्गुणम् ।। १७ ।। तत्तैलंचपचेद्धीरः शनैर्मृद्वग्निनाशुभम् ।। औषधीनांततोपागंदायपयेत्कर्षमात्रकम् ।। १८ ।। शतपुष्पादेवदारुमांसीशैलेयकंवचा ।। चंदनंतगरंकुष्ठमे- ।। लाचांशुमती बला ।। १९ ।। रास्नाचैवाश्वगंधाचविडंगंमरिचानि च

पीलुपर्णीचत्वक्त्वक्पत्रंतथागंधर्वहस्तिका ।। २० ।। सैंधवंचमसंदद्याद्विश्वभेषजमेवच ।। २१ ।। एषां कल्कैः पचेद्धिमाञ्शृंगवेररसेततः ।। सिद्धंज्ञात्वासमुत्तार्यमर्द्दयेच्छुभवासरे ।। २२ ।। कुब्जायेवामनाश्चैवपंगुपादजडाश्चये ।। महावातेन ये भग्नाहितंतेषां विसर्पणाम् ।। २३ ।। संकोचनेतुगात्राणांसन्निपाते चदारुणे ।। गंबिरोगेचहृद्दृच्छूलेहितमेताच्छिरोग्रहे ।। २४ ।। शमयेत्वक्षिशूलानिकर्णशूलान्यनेकशः ।। रोगानन्तर्गलोत्थांश्चसर्वानितव्यपोहति ।। २५ ।। येषांशुष्यतिवैकामोयेषांचित्तभ्रमोभवेत् ।। क्षीणेन्द्रियाश्चयेमर्त्याजरयाजर्जरीकृताः ।। २६ ।। मंदमेधाविनोयेचश्रुतिर्येषांप्रणश्यति ।। भुक्तंनजीर्यते येषामग्निर्मन्दतरोभवेत् ।। २७ ।। याचवंध्याभवेन्नारीकाकवंध्याचयाभवेत् ।। योनिरोगगताकाचिद्गर्भंगृह्णातियानवा ।। २८ ।। प्रमेहेषुचसर्वेषुह्यंडबृद्धिगदेषुच ।। भ्रमेषुपांडरोगेषुकामलायामिदंहितम् ।। २९ ।। अपस्मारंगंडमालां वातशोणितमेवच ।। पिटकाः सर्वकुष्ठांश्च दद्रुं पामां विर्चचिकाम् ।। विनिहंतिज्वरान्सर्वान्वातपित्तकफोत्थितान् ।। ३० ।। मासमेकंपिबेद्यस्तु यौवनस्थःपुनर्भवेत् ।। कामाग्निजननंचैतद्बलवीर्यविवर्द्धनम् ।। ३१ ।। नस्येपानेतथाभ्यंगेनरोनित्यंचसेवयेत् ।। एनतच्छतावरीतैलंनरनारीहितावहम् ।। ३२ ।। इति शतवारी तैलम् ।।

पुनरुपायः ।। सूखे आवलोंके चूर्णमें ऊखके रसकी भावना देवे, पीछे छायामें सुखाकर फिर भावना देवे, इस तरह वैद्य बारबार ७ भावना दे ।। १५ ।। पीछे समान भाग शहद मिसरी मिलाकर अवलेह पकाले फिर पुरुषको या नारीको खवावे तो शरीरमें बल बढ़े, धातु बढे, संतान हो ।। १६ ।। अब शतावरी तेलको कहते हैं। हरी शतावरको लेकर कूटकर रस २ सेर निकाले फिर वह रस और तिलोंका तेल १ सेर पचावे और उसमें ४ सेर गौका दूध डाले ।। १७ ।। फिर उस तेलको वैद्य मंदाग्निसे शनैः शनैः पकावे और ये दवाइयां एक एक तोला लेकर कल्कबनाकर उसमें पचते समय डाल दे ।। १८ ।। सौंफ, देवदार, बालछड, छालछरीला, वच, लालचंदन, तगर, कूट, इलायची, अंशुमती, खरेटी ।। १९ ।। रासना, असगंध, वायविडंग, स्याहमिरच, पीलुपर्णी, दालचीनी, पत्रज, एरंडकी जडकी छाल ।। २० ।। सेंधानमक सोंठ यह सब दवा समान एक एक तोला लेनी चाहिये ।। २१ ।। इन दवाइयोंका कल्क करके बुद्धिमान् वैद्य तेलको पकावे फिर अदरखका अर्क देकर पकाना चाहिये जब पकजावे तब अग्निसे उतार लेवे, सुन्दर पात्र में छानकर रख देवे अच्छे शुभ वारसे मालिश करना सुरू करे, इतनी

बीमारियोंको दूर करता है ।। २२ ।। जो मनुष्य कूबडे हैं और बौने हैं और पांगले हैं और जिनके पैर रह ये हों और महावात करके तो भग्न हों, अर्थात् अर्द्धाङ्ग-वात जिसके हो और जिसके विसर्प रोग हो, उनको यह तैल बडा हितकारी है ।। २३ ।। अंगसकुचरोगमें, संनिपातमें, वायुगांठमें, हृदयशूल में, शिरके दर्दमें और शिरके भारीपनेमें यह तैल बहुत बडा हितकारी है ।। २४ ।। नेत्रकी शूलको और कानकी शूलको यह बहुत जलदीडालनेसे शमन कर देता है और गलेके अन्दरके जितने रोग हैं सबको नष्ट कर देता है ।। २५ ।। जिन पुरुषों का काम सूख जाता है अर्थात् नपुंसक हो जाते हैं और जिनका चित्तभ्रम होता है और जिनोंकी इंद्रियमें कम ताकत हो जाती हैं और जो वृद्धावस्थासे बिलकुल कम ताकत हैं, उनको यह बडा हितकारी है ।।२६।। जिन पुरुषोंकी बुद्धि कम है, और जो सुनता नहीं है और जिनके भोजन किया हुआ हाजमा नहीं होता है और जिनोंका जठराग्नि मंद है, उन्होंके वास्ते यह तेल बडा हितकारी है ।। २७ ।। जो स्त्री वांझ होती है और जिन स्त्रियोंके एक संतान पुत्री होवे फिर नहीं हो और जिन स्त्रियोंके योनिरोग हैं, अथवा जो स्त्री गर्भको नहीं ग्रहण करती है उनको यह तैल बडा हितकारी, है ।। २८ ।। संपूर्ण प्रमेहोंमें, अंडवृद्धि रोगमें, भ्रममें, पीलियामें और कमलवायमें यह तैल बहुत हितकारी है ।। २९ ।। मृगीको, बेलको, वातरक्तको, फुनसियोंको सर्वकुष्ठोंको, दादको, पामाको, व्योचीको, और सब तरहके बुखारोंको यह तेल नष्ट कर देता है ।। ३० ।। जो पुरुष एक मास इसको पीवे तो वह वृद्ध भी हो परंतु फिरसे जवान हो जावे, यह तैल कामको तेज करता है और बलवीर्यको बढाता है ।। ३१ ।। सूंघनेमें और पीनेमें और मालिश करनेमें इस तेलको नित्य वर्तन चाहिये; यह जो शतावरी तैल है सो पुरुष स्त्रीको सर्वथा हितका देनेवाला है ।। ३२ ।। इति शतावरी तैलम् ।।

पिप्पलीलवणोपेतौबस्तांडौक्षीरसर्पिषा ।। साधितौ भक्षयेद्य-स्तुसगच्छेत्प्रमदाशतम् ।। ३३ ।। बस्तांडसिद्धेपयसिसाधितानसकृत्तिलान् ।। यः खादेत्सपुमान्गच्छेत्स्त्रीणांशतमपूर्ववत् ।। ३४ ।। चूर्णंविदा-र्याश्चितंस्वरसेनैवभावितम् ।। सर्पिःक्षौद्रयुतंलीढ्वा दशगच्छेन्नरोङ्गनाः ।। ३५ ।। एवमामलकीचूर्णंस्वरसेनैवभावितम् ।। शर्करामधुसर्पिर्भ्यांयु-क्तंलीढ्वापयः पिबेत् ।। एतेनाशीतिवर्षोपियुवेव रमतेसदा ।। ३६ ।। स्वयंगुप्तेक्षुरकजबीजचूर्णंसशर्करम् ।। धातोस्तेननरः पीत्वापयसानक्षयं-व्रजेत् ।। ३७ ।। उच्चटाचूर्णमप्येवंक्षीरेणोह्यममुच्यते ।। शतावर्यच्चटा-चूर्णंपीतंक्षीरेणचोत्तमम् ।। ३८ ।। कर्षन्मधूकचूर्णस्यघृतक्षौद्रसमन्वितम् ।।

पयोनुपानंयोलिह्यान्नित्यंवेगशतोभवेत् ।। ३९ ।। मुसलीकंदचूर्णंच-गुडूचीसत्त्वसंयुतम् ।। वानरीगोक्षुराभ्यांचशाल्मलीशर्करामलैः ।। आलो-डचघृतदुग्धाभ्यांपाययेत्कामवृद्धये ।। ४० ।।

अब और नपुंसकका उपाय कहते हैं।

बकरेके अंडकोश लेकर पीपल नमकडालकर दूध और घीमें उनको पकाके जो पुरुष खावे तो वह शतस्त्रियोंको सेवन करने लग जाता है ।।३३।। अन्योपायः ।। बक-रेके अण्डोंसे सिद्ध किये हुए दूधमें सिद्ध किये हुए तिलोंकोजो पुरुषखावे वह शतस्त्रियोंके संग गमन कर सकता है और ऐसी ताकतसे गमन करे मानो पहिले कियाही नहीं है ।। ३४ ।। पुनरुपायः ।। विदारीकंदका चूर्ण कपडछान करके और विदारीकंदके रसकी ७ भावना देकर फिर बराबरकी मिसरी मिलाकर घीमें मरकोइके रखदे जिसमेंसे १ तोला शहदमें चाटे तो वह पुरुष दश स्त्रियोंके संग रमण करने लग जाता है ।। ३५ ।। पुनरुपायः ।। सूखे आवलोंका चूर्ण कपडछान कर हरे आवलोंके रसकी ७ भावना देकर छायामें सुखाकर बराबरकी मिसरी मिलावे; फिर घीमें मरकोइके शहदमें १ तोला चाटे ऊपर गौका दूधगरम-मीठा डालकर पीवे, तो अस्सी वर्षका वृद्ध भी जवानोंकी तरह रमणकरने लग जाता है ।। ३६ ।। पुनरुपायः कौंचके बीज और तालमखाना इन दोनोंका चूर्ण कपडछान करके बराबरकी मिसरी मिलाकर १ तोला फंकी लेकर ऊपरसे दूध पीवे तो उस पुरुषकी धातु क्षीण नहीं होवे ।। ३७ ।। पुनरुपायः ।। सफेदघुंघचीका चूर्ण कपडछान कर दूधके साथ पिया हुआ ताकत देनेमें बडा श्रेष्ठ है और शता-वरी, सफेद घुंघची इन दोनोंका चूर्ण दूधके साथ पिया हुवा निहायत उमदा है। ।। ३८ ।। अन्योपायः ।। मुलहठीका चूर्ण १ तोला घी मिलाकर शहदमें चाटे और ऊपरसे दूध पीवे तो १०० स्त्रियोंके संग सौ वेग करने लग जावे ।। ।। ३९ ।। अन्योपायः ।। सफेद मुसलीका चूर्ण और उसीके समान गिलोय सत और कौंचके बीज, गोखरू, सिंभलकी मुसली, मिसरी, आंवला सब समान लेकर कूट कपड़छान कर घीमें मरकोइके दूधके साथ पीनेसे कामवृद्धि हो इंद्री प्रबल हो धातु पुष्ट हो ।। ४० ।।

गोक्षुरकःक्षुरकःशतमूलीवानरिनागबलातिबलाच ।। चूर्णमिदं पयसा सह पेयं यस्य गृहे प्रमदाशतमस्ति ।। ४१ ।। वाराहीकंदशृङ्गा-टकपलयुगलं चूर्णितं किंचिदाज्ये भ्रष्टं जातदिलत्वक्सुरकुसुमकणाके-सराणां पलं च ।। श्वेतासर्वैः समानांपयसिदशगुणेसाधुपक्त्वा महिष्याः कामोद्बोधायकार्य्यास्तदनुचवटकाःकामुकैः शुक्रवृद्ध्यै ।।४२।।

एनांसदासेव्यमानोवृद्धोपितरुणायते ।। तरुणीनांशतंयातितरुणस्यतुकाकथा ।। ४३ ।। लघुशाल्मलिमूलेनतामूलीसुचूर्णिताम् ।। सर्पिषापयसापीत्वा-नरश्चटकवद्भवेत् ।। ४४ ।। वृद्धशाल्मलिमूलस्य रसं शर्करया पिबेत् ।। एतत्प्रयोगात्सप्ताहाच्छुक्रवृद्धिः प्रजायते ।। ४५ ।।

गोखरू, तालमखाना, सफेद मुसली, कौंचके बीज, गंगेरणकी छाल, सह-देईकी जड इन दवाइयोंको कूट कपडछान करके बराबरकी मिसरी मिलाकर फिर यह चूर्ण दूधके साथ जिसको पीना चाहिये जिसके घरमें शतस्त्री हों। अर्थात् सौ स्त्रियोंको सेवन करनेकी ताकत करता है ।। ४१ ।। अन्योपायः ।। वाराहीकंद, सिंघाडे ये दोनों पल २ ग्रहण करके कूट कपड़छान करके घीमें जरा भूने फिर तेजपात, दालचीनी लौंग, पीपल छोटी केसर यह एक एक पल ग्रहण करे, फिर सबकी बराबरकी मिसरी ७ पल लेकर उसमें मिलादे फिर भैंसका दूध दशगुणा ७० पल लेकर उसमें खूब पकाकर खोवा बनाले और उसकी दो दो तोलेकी गोली बनाले। कामवृद्धि के लिये पुरुष नित्य खाये तो धातुवृद्धि हो ।। २४ ।। इन गोलियोंको नित्य सेवन करनेसे वृद्ध पुरुष भी जवान हो जाता है और जवान पुरुष सेवन करे तो क्या कहना है ।। ४३ ।। पुनरुपायः ।। छोटी सिंभलकी मुसली और सफेद मुसली इनको कूट कपडछान कर बराबर मिसरी मिलाकर १ तोलाकी फंकी लेकर ऊपरसे गरम दूधमें घी डालके पीये तो पुरुष चिडाकी तरह कई बार विषय करे ।। ४४ ।। अन्योपायः ।। बड़ी सिंभलकी मुसलियोंका रस ४ तोले लेकर उसमें मिसरी एक तोला डालकर ७ दिन पीनेसे वीर्यकी वृद्धि हो और कामदेवकी वृद्धि हो ।। ४५ ।।

त्रैकक्षीरविदारिकाकुरबकश्वेताढकार्द्धार्द्धकं प्रस्थं शाल्मलिमूलजा-तरसतो नीत्वा तथाग्नौ पचेत् ।। चातुर्जातफलान्वितो मधुयुतःकार्यःपरं शुक्रलोलेहोऽयंपलितांतकोबलकरः ख्यातोवलीनाशकः ।। ४६ ।। शता-वरी गोक्षुरकं च दर्भंश्रृंगाटकंनागबलात्मगुप्ता ।। सितासमानं निशि चूर्णमेषां दुग्धेन पीतं प्रकरोति पुष्टम् ।। ४७ ।। विशदाफलबीजानां-चूर्णंपीतंनिशामुखे ।। पयसावर्षमात्रेणषंढत्वंनाशयेद्ध्रुवम् ।। ४८ ।। खस-फलशुंठीक्वाथः षोडशशेषः सितायुतः पीतः ।। कुरुते रतौ न पुंसो रेतः पतनं विनाम्लेन ।। ४९ ।। जातीफलार्ककरहाटलवंगशुंठी कंकोल-कुंकुमकणामृगनाभिजानि ।। एतैः समानमहिफेनमनेन तुल्यां श्वेतां निधाय मधुना वटकं विदध्यात् ।।५० ।। माषद्वयोन्मितममुं निशि

भक्षयित्वामिष्टंपयस्तदनुमाहिषमाशु पीत्वा ।। कुर्वन्तुकामुकजनान्-तुबिंदुपातंचेतांसितेनचकितानिकलावतीनाम् ।। ५१ ।।

अन्योपायः ।। त्रिफला, क्षीरकाकोली, विदारीकन्द, कुरबक वृक्षकी छाल और मिसरी, सब औषधी आधा आधा आढक लेनी चाहिये और सिंभलकी मुसलियोंका रस १ सेर लेकर अग्निके ऊपर शनैः शनैः पकाये फिर जरा गाढा हो जाने पर उसमें तज, पत्रज, इलायची; नागकेसर इन दवाइयोंका चूर्ण करके डाल देना चाहिये । अवलेह पक जानेपर नीचे उतारकर अनुपान से शहद मिलाना चाहिये । यह अवलेह बहुत ज्यादा शुक्र पैदा करनेवाला है और सफेद बालोंको स्याह कर देता है बलकारक यह अवलेह विख्यात है और शरीरकी गुलझटोंको दूर करता है ।। ४६ ।। पुनरुपाय :।। शतावर, गोखरू, डाभकी जड, सिंघाडे, गंगेरणकी छाल, कौंचके बीज,; सब दवा समान लेकर कूट कपडछान कर बराबरकी मिसरी मिलाकर १ तोला चूर्ण रातको फांककर ऊपरसे दूध पीवे तो धातु पुष्ट हो । ।। ४७ ।। अन्योपायः ।। शालममिसरीको कूट कपडछान कर रात्रिको ६ मासे फांककर ऊपरसे दूध पीवे एक वर्षभर सेवन करनेसे नपुंसक पुरुषका नपुंसकपना दूर हो । धातु बढे, इंद्री प्रबल हो ।। ४८ ।। अब बंधेजका उपाय लिखते हैं ।। पोस्तेके डोडे और सोंठ तोला तोला लेकर सोलह गुना पानी चढाकर अष्टांश शेष रहनेपर मिसरी १ तोला डालकर पीने से विषय करते समय जब तक खटाई न खाये वीर्यपात नहीं होता ।। ४९ ।। पुनरुपायः ।। जायफल, आककी जड अकर्करा, लौंग, सोंठ, कंकोल, केशर, पीपल, कस्तूरी इन सबके बराबर अफीम, अफीमके बराबर मिसरी लेनी चाहिये सबको कूट कपडछान कर शहदमें गोली बना लेनी चाहिये ।। ५० ।। रात्रिको २ मासे खाकर ऊपर भैंसका दूध पीठा मिलाकर गरम पीये तो वीर्यपात पुरुष न करे और स्त्रियोंका चित्त प्रसन्न हो जावे ।। ५१ ।।

आर्द्रेचरटीछत्रेनव्येकंदेसुदर्शनाख्यस्य ।। साधितमतसीतैलंबिंदुजवंनाभिलेपतोधत्ते ।। १ ।। इतिग्रंथान्तरस्य योगः ।। कांचनस्यफलमूलदलानां पूगचूर्णसहितेनरसेन ।। लिंगलेपमसकृत्प्रहरार्द्धंबिंदुवेगधरणायनिबद्धम् ।। ५२ ।। अहिफेनंदुग्धशुद्धं रक्तिकात्रितयोन्मितम् ।। बिंदुवेगंध्रुवंधत्तेसितयानिशिसेवितम् ।। ५३ ।। सूकरविशश्चमधुनालिंगलेपःकृतःसुरतावसरे ।। द्रावयतिवारवनितावारंवारमनेकधानियतम् ।। ५४ ।। चूर्णितैर्मधुसंयुक्तैर्महाराष्ट्रीफलच्छदैः ।। लिंगलेपेन सुरतेद्रवोभवतियोषिताम्।।५५।।कासीसंस्फाटिकामाजुफलंक्षौद्रेणघर्षयेत्।।

तेनलिंगेकृताल्लेपाद्रतौद्रवतिचांगना ।। ५६ ।। मोचरसामलकीत्वक्का-कमाचीभिरनुनिशं सुभगा ।। स्वभगेविधायवर्ति सुरते कांतसुखंकुरुते ।। ५७ ।। भगस्यक्षालनंकृत्वातक्रेणामलकशृतैः ।। रतेपिकामिनीकामं-बालेवकुरुतेऽनिशम् ।। ५८ ।।

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे पुरुषवीर्यवृद्धिकथनं नाम तृतीयः पटलः ।। ३ ।।

अब धातुबंदके लिये लेप कहते हैं, धतूरा वृक्षके फल जडपत्तोंके रसमें सुपारीका चूर्ण खूब बारीक पीसकर लिंगपर लेप करे चार घड़ी पीछे विषय करे धातुका बंधेज रहे स्त्रीका चित्त प्रसन्न हो ।। ५२ ।। अन्योपायः ।। अफीमको दूधमें शोधले पीछे अफीम ३ रत्ती, मिसरी १ तोलामें रखकर रात्रिको सेवन करके ऊपर से दूध पीवे तो वीर्यका वेग स्थित हो, स्त्री पुरुष आनंद प्राप्त हो ।। ५३ ।। अब स्त्री प्रवण लेप कहते हैं ।। सूकरकी विष्ठाको शहदमें मिलाकर विषय करते समय लिंगपर लेप कर विषय करे तो स्त्री वारंवार द्रवे और इंद्री शिथिल न पडे ।। ५४ ।। जल पीपलीके फल, पत्ते लेकर खूब बारीक कूट कपडछान कर, शहदमें मिलारक इंद्रियपर लेपकरके विषय करनेसे स्त्रीद्रव जाती है ।। ५५ ।। हीरा-कसीस, फटकड़ी, माजूफल इनको कूट कपडछानकर शहदमें रगडकर लिंगपर लेप करके विषय करंतो स्त्री द्रव जाती है ।। ५६ ।। अब योनिसंकोचन लिखते हैं ।। तज, मोचरस आंवलासूतका, काकमाची इन दवाइयोंको कूट कपडछान कर जलमें पीस बत्ती बनावे फिर स्त्री अपनी योनिमें रक्खे तो विषय समय में पुरुषको बडा आनंद प्राप्त होता है । योनि अत्यन्त संकोचको प्राप्त हो जाती है ।। ५७ ।। जो स्त्री अपने भगको गौकी छाछसे या आंवलोंका काढा बनाकर नित्य धोये तो उसकी भगनिहायत तंग हो जाती है और विषयमें वह स्त्री बालास्त्रीकी माफिक आनन्द देती है ।। ५८ ।।

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां तृतीयः पटलः ।। ३ ।।

शुद्धार्तवां दोषविमुक्तशुक्रःसुगंधलेपैः परिलिप्तगात्रः ।। प्रशस्त-नक्षत्रदिने प्रहृष्टां नारीमुपेयाद्दयितः सुतार्थी ।। १ ।। सेवेतवाजीकरणां-श्चनित्यंदुग्धंपिबेच्छर्करयाविमिश्रम् ।। दानेनमानेनचभूसुराणांमोदंविद-ध्याद्विधिनोपयुक्तः ।। २ ।। दिनेषुयुग्मेषुपुमान्प्रदिष्टःप्रोक्तान्यथास्त्रीत-दनल्पबुद्धिः ।। विचार्यसर्वंसुखितः प्रमत्तः प्रवृद्धशुक्रोदयितामुपेयात्

॥ ३ ॥ आहाराचारचेष्टाभिर्यादृशीभिःसमन्वितौ ॥ स्त्रीपुंसौसमुपेयातां तयोः पुत्रोपितादृशः॥४ ॥ रक्ताधिक्येभवेन्नारीशुक्राधिक्येभवेत्पुमान् ॥ रक्तशुक्रसमेनैवभ्भवतीहनपुंसकम् ॥५॥ रक्तेशुक्रमकाले चपतितंनिष्फलं भवेत् ॥ शुक्रक्षयेनरेषंढेनारीगर्भंदधातिन ॥ ६ ॥ विचार्य्यैवं सुधीः-पश्चात्प्रयोगान्कारयेत्सदा ॥ गर्भार्थंचप्रदातव्यान्मंत्रेणानेनमंत्रितान् ॥७॥ प्रणवःकामराजंचदेवकीसुतसंवदेत् ॥ गोविंदेतिपदंब्रूयाद्वासुदेवपदं ततः ॥८॥ जगत्पते समुच्चार्य्यदेहिमेतनयं ततः ॥ ततो देवपदं चोक्तं त्वामहंशरणं गतः ॥ ९ ॥

अब संतान उत्पत्ति करनेकी रीति लिखते हैं ॥ निर्दोष वीर्यावाला पुरुष अच्छे २ सुगंधिके अतर लेपन लगाकर शास्त्रोक्त दिन देखकर बडे प्यारसे, ऋतुदोषसे शुद्ध हुई स्त्रीको पुत्रकी इच्छा करता हुआ सेवन करे ॥ १ ॥ स्त्रीसेवनविधिसे युक्त पुरुष बाजीकरण योगोंको नित्य सेवन करे और मिसरी मिलाकर नित्य गरम दूध पीये, और ब्राह्मणोंको दान दे और उनका मान करे, फिर चित्तमें आनंदको धारण करना चाहिये ॥ २ ॥ जिस दिन स्त्री रजस्वला हो उस दिन युग्मरात्रियोंमें विषय करनेसे पुत्रकी संतान होती है, और अयुग्म रात्रिमें विषय करनेसे पुत्रीकी संतान होती है। इसी कारणसे बुद्धिमान् पुरुष सर्व वार्ताको विचारकर वाजीकरण द्रव्योंसे वीर्य अधिक करके स्त्रीसे गमन करे ॥ ३ ॥ जैसा आहार और जैसा आचार और जैसी चेष्टाओं से युक्त स्त्री पुरुष भोग करेंगे तो उनके पुत्र भी वैसाही आहार और वैसाही आचार और वैसीही चेष्टावाला होगा ॥ ४ ॥ रजकी अधिकतर गर्भमें होनेसे लडकी होती है और वीर्यकी अधिकता होने से लडका होता है। और रज वीर्य दोनों समान हों तब नपुंसक अर्थात् हीजडा होता है ॥ ५ ॥ रजमें वीर्य पडे या असमय पडे तो वह वीर्य निष्फल हो जाता है गर्भ स्थित नहीं हो और पुरुष धातुहीन हो या नपुंसक हो तब स्त्री गर्भधारण नहीं करती॥ ६ ॥ ऐसे विचारकर बुद्धिमान्को वाजीकरण प्रयोगोंको इस मन्त्रसे मंत्रित करके सेवन करना चाहिये ॥ ७ ॥ मन्त्रका उद्धार करते हैं—प्रथम ओंकार, उसके बाद कामबीज क्लीं, उसके बाद देवकीसुत, उसके बाद गोविंद और, उसके बाद वासुदेव पद देना चाहिये ॥ ८ ॥ और उसके आगे जगत्पते यह पद उच्चारण करना चाहिये, देहि में तनयं यह पद और इससे आगे देव यह पद, उसके बाद त्वामहं शरणं गतः यह पद देना चाहिये। बस मंत्र हो गया। अब समस्तमंत्रका स्वरूप लिखते हैं॥ "ॐ क्लीं देवकीसुत गोंविद वासुदेवजगत्पते। देहि मे तनयं देव त्वामहं शरणं गतः॥" यह मन्त्र है इससे मंत्रित करदेने चाहिये॥ ९ ॥

अष्टोत्तरशतंजप्त्वा औषधं च प्रदापयेत् ।। औषधीग्रहणे मन्त्राः कथ्यंते च मया शुभाः ।। १० ।। गत्वौषधीसमीपंतुमूलेकृत्वासमंबुधः ।। कीलकं खादिरं ग्राह्यंमंत्रेणानेनमंत्रितम् ।। ११ ।। हुंनारायणायस्वाहा प्रणवादिर्नवाक्षरः ।। उत्तराभिमुखोभूत्वावक्ष्यमाणेनसंखनेत् ।। १२ ।। प्रणवोभुवनेशानीयेनत्वांखनतेततः ।। ब्रह्मायेनतुरुद्रोऽथकेशवश्चपदं ततः ।। १३ ।। तेनाहंखनयिष्यामिसिद्धिंदेहिमहौषधि ।। वक्ष्यमाणेनमंत्रेणचोद्धरेदौषधींबुधः ।। १४ ।। सर्वार्थसाधनीस्वाहा प्रणवादिर्नवाक्षरः ।। वक्ष्यमाणेन मंत्रेण प्राशनंकारयेत्सूसुधी ।। १५ ।।

एक सौ आठ १०८ मंत्र पढ़कर औषधी देनी चाहिये औषधीके ग्रहण करनेमें शुभ मंत्रोंको कहते हैं ।। १० ।। प्रथम औषधीके पास जाकर उसकी जडके समीप चारों तरफ समान स्थल करके फिर खैर वृक्षके काष्ठकी एक खूंटी बनवावे इस मंत्रसे मंत्रित करे । और पूजन करके नालाकी डोरी बांधे ।। ११ ।। ॐ हुं नारायणाय स्वाहा । इस नव ९ अक्षर मंत्रसे खदिर कीलकको मंत्रित करके उत्तरकी तरफ मुख करके आगे मंत्र कहेंगे उस मंत्रसे औषधीकी जडको खोदना चाहिये ।। १२ ।। "ॐ ह्रीं येन त्वां खनते ब्रह्मा येन रुद्रोऽथ केशवः ।। तेनाहं खनयिष्यामि सिद्धिं देहि महौषधि ।।" इस मंत्रसे उस औषधीकी जमीन खोदना चाहिये और आगे मंत्र कहेंगे उस मन्त्रसे औषधी पाड़नी चाहिये ।। १३ ।। ।। १४ ।। "ॐ सर्वार्थसाधनी स्वाहा" इसनवाक्षर मन्त्रको १०८ वार जपकर औषधी पाडलेनी चाहिये ।। फिर आगे जो मंत्र कहेंगे उस मंत्रसे औषधी खानी चाहिये ।। १५ ।।

ॐकुमङरजननीयेस्वाहामंत्रोदशाक्षरः ।। लक्ष्मणासंग्रहः कार्यः प्रवृत्तेचोत्तरायणे ।। संपूर्णमासपक्षेतु मागृह्णीयान्महौषधीः ।। १६ ।। चिन्हं तस्याः प्रवक्ष्यामि ज्ञायते च भिषग्जनैः ।। रक्तबिंदुयुतैः पत्रैर्वर्तुलाकृतिभिर्युता ।। १७ ।। पुरुषाकारसंयुक्तैर्लक्ष्मणासानिगद्यते ।। आत्मच्छायांपरित्यज्यगृह्णीयात्पुष्यभेसुधीः ।। १८ ।। प्रणवोहृदयंप्रोच्यबलवर्द्धनिचोच्चरेत् ।। शुक्रवर्द्धनिपुत्रेतिजननीवह्निवल्लभा ।। १९ ।। विंशत्यर्णेनविधिनानिशिखानं प्रदापयेत् ।। नाड्यांतुदक्षिणायांतुवायौवहतिदापयेत् ।। २० ।। ऋतुस्नानानंतरंतुवंध्यापिपुत्रमाप्नुयात् ।। २१ ।। ।।२१।। मृतवत्सातुयानारीदुर्भगाऋतुवर्ज्जिता ।। या सूतेकन्यकावंध्यास्नानंतासांविधीयते ।। २२ ।।

ॐ कुमारजननीये स्वाहा, यह दशाक्षरमंत्रको १०८ वार जपके औषधी

बा. ३

खानी चाहिये ।। अब लक्ष्मणाजड़ीके ग्रहण करनेकी विधि लिखते हैं, उत्तरायण सूर्यप्रवृत्त हो तब लक्ष्मणा जड़ीको ग्रहण करे, मासांतमें और पक्षांतमें ग्रहण करनी नहीं चाहिये ।। १६ ।। अब उसके लक्षण कहते हैं, वैद्यजनोंको जानना चाहिये कि, लक्ष्मणाके पत्तोंपर लालबिंदु होती हैं और गोल पत्ते होते हैं ।। १७ ।। और पुरुषके आकार पत्तोंपर हों, उसको लक्ष्मणाजड़ी कहते हैं, बुद्धिमान् पुरुष अपनी छायाको बचाकर पुष्यनक्षत्रमें, जड़ीको ग्रहण करना चाहिये ।। १८ ।। "ॐ नमो बलवर्द्धनी शुक्रवर्द्धनी पुत्रजननी स्वाहा" ।। १९ ।। इस बीस अक्षरके मंत्रसे मंत्रित करके लक्ष्मणाजड़ीको खूब बारीक पीसके फंकी लेकर गौका दूध ऊपरसे पीये, या दूधमें पीसके छानके पीये; रात्रिको दहिना स्वर चलता हो उस समयमें पीना चाहिये किसी पुस्तकमें "नसिपानं प्रदाप येत्" ऐसा पाठ है, वहांपर ऐसा अर्थ करना–नासिकासे पीनी चाहिये ।। २० ।। ऋतुस्नान किये पीछे स्त्री विधिपूर्वक लक्ष्मणाजड़ीको सेवन करे तो वन्ध्याके भी पुत्र उत्पन्न हो ।। २१ ।। जो स्त्री मृतवत्सा है अर्थात् जिसके बच्चे मरजाते हों और जो स्त्री रजस्वला नहीं होती हो, और जिसके कन्या होती हों अथवा वन्ध्या हो स्त्रियोंको स्नान कराना चाहिये ।। २२ ।।

अष्टस्यांवाचतुर्दश्यामुपवासपरायणा ।। ऋतौ शुद्धा चतुर्थेन्हि-प्राप्तेसूर्यदिनेऽथवा ।। २३ ।। नद्यास्तुसंगमेकुर्यान्महानद्यांविशेषतः ।। शिवालयेऽऽथवागोष्ठेविविक्तेवागृहांगणे ।। २४ ।। आहूयादौद्विजंशांतं-धर्मज्ञंसत्यशीलिनम् ।। स्नानार्थं शास्त्रवेदे च निपुणं रौद्रकर्मणि ।। २५ ।। ततस्तुमंडपं कुर्याच्चतुरस्रमुदङमुखम् ।। तच्चचंदनमाल्येनगोमयेनानुले-पितम् ।। २६ ।। तन्मध्येश्वेतरजसासंपूर्णंपद्ममालिखेत् ।। मध्येब्जस्यम-हादेवंस्थापयेत्कर्णिकोपरि ।। २७ ।। लिखेद्दलेषु नद्यादींश्चतुर्षुविधिपूर्व-कम् ।। देवींविनायकंचैवकार्तवीर्यंन्महाबलम् ।। २८ ।। इंद्रादिलोकपा-लांश्चदलाष्टसुततोलिखेत् ।। ततः शेषदलेष्वेवस्थापयेत्तत्रपार्थिवान् ।। २९ ।। दधिदुग्धंघृतंपुष्पं धूपं दीपं युगानि च ।। कन्जानां विधिना पद्यात्पुष्पाणि विविधानि च ।। ३० ।।

अब रुद्रस्नानकी विधि लिखते हैं—अष्टमीको या चतुर्दशीको या रजस्वलाका रज शुद्ध होनेसे चौथे दिन अथवा रविवारको वह स्त्री व्रत धारण करे यह कर्म रजसे शुद्ध होकर करे ।। २३ ।। यह कर्म किस जगह करना चाहिये सो कहते हैं नदियोंका संगम जहां हो वहां करना चाहिये, अथवा गंगाके तटपर या शिवालयमें या गोशालामें या गृहके आंगणमें परंतु अलग हो रास्तामें नहीं हो

इतनी जगह कर्म करना उचित है ।। २४ ।। स्नान करानेके लिये प्रथम ऐसे ब्राह्मण बुलाये कि जो शांत हो धर्मका जाननेवाला हो, सत्यबोलनेवाला हो और शास्त्रमें वेदमें निपुण हो और शिवके पूजनादिक कर्मोमें निपुण हो ऐसे ब्राह्मणकी स्नान करानेके लिये योजना करे ।। २५ ।। फिर उस जगहमें चौकोरमंडप पुराना चाहिये उत्तराभिमुख मण्डपका होना चाहिये फिर गोबरसे लिपाकर चंदनसे पुष्पोंसे सुगंधित करना चाहिये ।। २६ ।। फिर उस मंडपके मध्यमें बालूकी वेदी बनाये वेदीपर गोधूमके चूर्णमें सहस्रदलका कमल लिखे। उस कमलके बीचके केसरोंमें शिवका स्थापन करे ।। २७ ।। फिर उसके उपरांत चार दलोंमें चारों तरफ नंदीश्वरसे आदि लेकर लिखे, एक तरफ नंदीश्वर, दूसरी तरफ पार्वती, तीसरी तरफ गणेशजी, चौथी तरफ कार्तवीर्य यह लिखे ।। २८ ।। और उसके उपरांत आठ दलोंमें इंद्रसे आदि लेकर अष्टलोकपाल लिखे और शेष रहे दलोंमें पार्थिव बनाकर स्थापन करना चाहिये ।। २९ ।। दही, दूध; घृत, फूल, धूप, दीपक, सुपारी, कमलके अनेक प्रकारके फल इनसे पूजन विधान करे ।। ३० ।।

चतुष्कोणेषुकर्तव्यामखस्तंभविभूषिताः ।। अग्निः कार्यःशुभेकुण्डे-पुष्पपात्रेऽनलेकृते ।। ३१ ।। लवणं सर्पिषायुक्तंघृतेनमधुनासह ।। मान-स्तोकेनजुहुयात्कृतेहोमेनवग्रहे ।। ३२ ।। द्वितीयस्यात्मकार्यस्य कर्त्ता च ब्राह्मणो भवेत् ।। रूद्रंयजेन्मृदाकृत्वासितचंदनर्चचितम् ।। ३३ ।। सित वस्त्रपरीधानंसितमालाविभूषितम् ।। शोभयेत्कङ्कणैः स्वर्णैः कर्णवेष्टचां-गुलीयकैः ।। ३४ ।। मंडपस्य समीपस्थो जपेद्रुद्रं विमत्सरः ।। यावदेका-दशगतंपुनरेवजपेच्चतम् ।। ३५ ।। एवंमंगलवत्कार्यंद्वितीयंमंडपंशुभम् ।। तस्यमध्येतु सानारीष्श्वेतपुष्पैरलंकृता ।। ३६ ।। श्वेतवस्त्रपरीधाना-श्वेतगंधानुलेपिता ।। सुखासनोपविष्टायाआचार्यो महदासनः ।।३७।। अभिषिचेत्ततश्चैतामर्कपत्रपुटाम्बुना ।। चतुःषष्टिऋचाचैवरुद्रेणैकाद-शेनतु ।। ३८ ।। वर्णानांमितिऋचांतासाचतुष्षष्टिसंख्यानामेकादश-त्वंपतितानामियंसंख्या ।।

चारों कोनोंमें यज्ञस्तंभ बहुत सुंदर करे और बहुत सुन्दर अग्निकुंड करे उसमें कांसी फूलके बर्तनसे अग्नि लाकर स्थापन करे ।। ३१ ।। नमक घृतकी या घृत सहतकी आहुती देकर और प्रथम ग्रहोंकी आहुति देकर पीछे हवन करे ।। ३२ ।। और दूसरा अपना कार्यका करनेवाला ब्राह्मण होना चाहिये वह ब्राह्मण मृत्तिकाका रुद्र बनाके सफेद चन्दनसे पूजन करे ।। ३ ३ ।। सफेद वस्त्र शिवपर चढावे और सफेद फूलोंकी माला चढावे और रुद्रको सोनाके कंकणोंसेकर्णभूषणोंसे अँगूठी

से शोभित करें ॥ ३४ ॥ मंडपके समीप बैठके मत्सरता, क्रोध, लोभ, काम, मोह सबको दूर करके मन स्थिर कर रुद्रमंत्रका जप करे उस ब्राह्मणको ११ रुद्री करना चाहिये ११ रुद्री करके फिर रुद्रका जप करना चाहिये ॥ ३५ ॥ ऐसे मांगलिक कर्म करके दूसरा मंडप बडा सुन्दर करना चाहिये । उस मंडपके बीचमें उसस्त्रीको सफेद फूलोंकी माला पहनाके और सफेद वस्त्र पहनाकर सफेद चंदनको को लगाकर सुखपूर्वक आसनके ऊपर बैठाकर और आचार्यको ऊंचा असानके ऊपर बैठाये ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ फिर आचार्य ब्राह्मण आकके पत्तोंका दोना करके उसमें जल भरके ६४ ऋचाका पाठ करके रुद्री महिमन् षडंगका पाठ ११ वार पठन करके उस स्त्रीको अभिषेक करे ॥ ३८ ॥

शतानिसप्तपर्णानांचतुर्भिरधिकानिच ॥ अच्छिद्राणि चमंत्रेणस्नानार्थेविनिवेशयेत् ॥ ३९ ॥ अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्संगमाद्ध्रदात् ॥ वेश्यांगणाच्चतुष्पथाद्गोष्ठादानीयवैमृदम् । सर्वौषधीर्नोचनां च नदीतीर्थोदकानिच ॥ ४० ॥ एतत्संक्षिप्यकलशे शिवसंज्ञेसुपूजिते ॥ आपादतलकेशांतंकुक्षिदशेविशेषतः ॥ ४१ ॥ सर्वांगंलेपयेद्भक्त्यासुशीलाकाचिदंगना ॥ रुद्रमंत्रंजपन्विप्रः स्नापयेत्कलशैश्चताम् ॥ ४२ ॥ तोयपूर्णाष्टकलशैरश्वत्थदलपूरितः ॥ सर्वतोदिक्स्थितैः पश्चात्स्नापयेत्कलशाक्षतैः ॥ ४३ ॥

सतवनके पत्र १०४ बिगर छिद्रके लेकर रुद्रमंत्र पढकर स्नान करानेके कलशमें डालदेने चाहिये ॥ ३९ ॥ अश्वशालासे, हाथीखानेसे, सर्पकी बँबईसे, नदियोंके संगमसे, सरोवर से, वैश्याके आंगनसे, चौराहासे, गोशालासे मृत्तिका ग्रहणा करे और सर्वौषधी गोरोचन, और नदीका या तीर्थका जल यह सब द्रव्य पूजन किया हुआ शिवसंज्ञक कलशमें डालदे, फिर वह स्त्री चरणसे केशोंतक उस जल मृत्तिका औषधियोंसे सम्पूर्ण अँगको लेपन कर और कुक्षिदेशको विशेषताकरके लेपन करे ॥ ४० ॥ ४१ ॥ सुशीलको धारण करके भक्तिसहित अंगको लेपन कर पीछे ब्राह्मण रुद्रका मंत्र जपता हुआ कलशोंके जलसे उस स्त्रीको स्नान कराये ॥ ४२ ॥ जलसे परिपूरित हुए आठ ८ कलश पीपल वृक्षके पत्तोंसे आच्छादित हुए अष्ट दिशाओंमें स्थित हुए ऐसे जो अक्षत कलश हैं उनसे स्त्रीको स्नान कराये ॥ ४३ ॥

स्नात्वैवंस्नापकायैवदद्याद्गांकांचनंतथा ॥ हेतुरेवात्रनिर्दिष्टोदक्षिणागौःपयस्विनी ॥ ४४ ॥ ब्राह्मणानप्यथान्यांश्चस्वशक्त्या साधुपूजयेत् ॥ गोवस्त्रकांचनादीनिदत्त्वासर्वान्क्षमापयेत् ॥ ४५ ॥ कृतेनानेनस्नानेननरोवानायिकापिवा ॥ सुभगाकांतिसंयुक्ता बहुपुत्राचजायते

।। ४६ ।। सर्वेष्वपिहिमासेषुब्राह्मणानुमतेशुभम् ।। तस्मादवश्यंकर्तव्यं पुत्रंस्त्रीसुखमृच्छति ।। ४७ ।। यास्नानमाचरतिरुद्रमिति प्रसिद्धश्रद्धान्विताद्विजवरानुमतेनतांगी ।। दोषान्निहत्यसकलान्स्वशरीरभाजान्भर्तुः प्रियाभवतिपुत्रजनिश्च सा स्त्री ।। ४८ ।।

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे गर्भाधानकालेरुद्रस्नानकथनं नाम चतुर्थः पटलः ।। ४ ।।

ऐसे विधिपूर्वक स्नान करके वह स्त्री स्नान कराने वाले ब्राह्मणको गौका दान देवे और सुवर्णका दान देवे इसमें यह हेतु है, दक्षिणा और दूधवाली गौ देनी चाहिये ।। ४४ ।। ब्राह्मणोंको साधुओंको अभ्यागतोंको भोजन कराकर, और उनका पूजन कर और अपनी, शक्तिमाफिक गौ, वस्त्र, सुवर्ण, उनको देकर प्रसन्न करे और अपराध क्षमा कराये ।। ४५ ।। इस स्नानके करनेसे पुरुष या स्त्री अच्छी ऐश्वर्यवाली कांतिवाली बहुपुत्रवाली हो जाती है ।। ४६ ।। सब महीनोंमें ब्राह्मणके अनुमत होकर यह स्नानकर्म शुभकारी है इसलिये अवश्य करना चाहिये इससे स्त्री पुत्रको सुख प्राप्त हो जाता है ।। ४७ ।। जो स्त्री इस प्रसिद्ध रुद्रस्नानको श्रद्धा करके ब्राह्मणके अनुमत होकर करती है वह स्त्री शरीरके संपूर्ण दोषोंको नष्ट करके पुत्रकी उत्पत्ति करती है जिससे भर्ताकी बड़ी प्यारी हो जाती है ।। ४८ ।।

इति श्रीपंडित नंदकुमारवैद्यकृते बालतंत्रे भाषाटीकायां चतुर्थः पटलः ।। ४ ।।

गर्भस्थितस्यबालस्यरक्षार्थंकथ्यतेबलिः ।। औषधानिविचित्राणिकथ्यंतेमंत्रजापकम् ।। १ ।। गर्भिणीगर्भरक्षार्थमासेतुप्रथमेबलिः ।। प्रजापतिंसमुद्दिश्य देयोमंत्रणमंत्रिणा ।। २ ।। श्वेतवस्त्रंपायसंचगव्यंक्षीरं तथाघृतम् ।। श्वेतच्छत्रंचंदनंचसरलंचांगुलीयकम् ।। ३ ।। पूर्णकुंभोहेमयुक्तोधूपदीपावयंबलिः ।। स्थानेगवांदोहनस्यनिःक्षेप्तव्यः प्रशांतये ।। ४ ।। तत्रमंत्रः ।। एह्येहिभगवन्ब्रह्मन्प्रजाकर्तः प्रजापते ।। बालायागर्भरक्षार्थंरक्षरक्षकुमारकम् ।। ५ ।। यदि च प्रथमेमासिगर्भेभवतिवेदना ।। नीलोत्पलंसनालंच शृंगाटकंकसेरुकम् ।।६।। शीततोयेनसंपिष्ट्वाक्षीरेणालोड्यतत्पिबेत ।। एवंनपततेगर्भःशूलंचैवविनश्यति ।।७।। मंजिष्ठंचंदनं कुष्ठंतगरंसमभागिकम् ।। पिष्ट्वाक्षीरेणसंपेयमौषधंसमुदाहृतम् ।।८।।

इति प्रथममासे गर्भिणीगर्भरक्षा ।। १ ।।

अब गर्भमें स्थित हुए बालककी रक्षाके लिये बलि कहते हैं और अनेक रकमकी औषधी मंत्र जाप भी कहते हैं ॥ १ ॥ गर्भिणी स्त्रीकी गर्भकी रक्षाके लिये पहले मासमें प्रजापतिको लक्ष्य करके अर्थात ब्रह्माकी मूर्ति मृत्तिकाकी बना कर मृत्तिका के पात्रमें स्थित करके उसके आगे सर्वद्रव्य धरके मंत्रका जाननेवाला पुरुष २१ वार मंत्र पढके बलि देवे ॥ २ ॥ सफेद वस्त्र, खीर, गौका दूध, घृत, सफेद छत्र, सफेद चंदन, रत्नकी जड़ी अँगूठी ॥ ३ ॥ जलका कलश उसमें सोना डालदेना यत्किंचित धूप, दीपक यह सर्ववस्तु एक पात्रमें रखकर २१ वार मंत्र पढकर जहां गौ दुही जाती है उस स्थानमें रख आवे ॥ ४ ॥ यह पांचवां श्लोक र यह सर्व मंत्र र इसीको २१ वार जपना चाहिये ॥ ५ ॥ और जो पहिले महीनेमें गर्भमें कुछ वेदना हो तब नीलोफर, कँवल, ककड़ी, सिंघाडा, कसेरू ॥ ६ ॥ इनको ठंढे जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीवे ऐसे करनेसे गर्भगिरे नहीं और शूल जाती रहे ॥ ७ ॥ अन्य औषधी लिखते हैं, मँजीठ लालचंदन, कूट, तगर यह सब समान लेकर दूधमें पीसके दूधहीमें छान पीये यह औषधी भी गर्भकी वेदनाको दूर करती है ॥ ८ ॥

यह पहिले मासका बलिविधान है ॥ १ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थद्वितीयेमासिवैबलिः ॥ समुद्दिश्याऽश्विनौवैद्यौ देयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ ९ ॥ दध्यन्नपायसंलाजापिण्याकंकुसुमानिच ॥ गंधश्चधूपदीपौच वस्त्रंपूर्णघटस्तथा ॥ १० ॥ हेम्नायुतोऽश्वशालायाः समीपेनिःक्षिपेद्बलिम् ॥ गोदोहस्थानकन्यस्यमंत्र मेतंपठेत्सुधीः ॥ ११ ॥ मंत्रः ॥ भगवंतौप्रभावंतौप्रहगृह्णीतंबलिंत्विमम् ॥ सुरूपौदेवभिषजौरक्षतंगर्भिणींयुवाम् ॥ १२ ॥ यदिचद्वितीयेमासिगर्भेभवतिवेदना ॥ तगरं कुंकुमंबिल्वंकपूरेणसमन्वितम् ॥ १३ ॥ अजाक्षीरेणसंपिष्ट्वाक्षीरेणालोड्यतत्पिबेत् ॥ एवंनपततेगर्भः शूलंचैवविनश्यति ॥ १४ ॥ शालूकमुत्पलंनीलंकशेरुं शृंगवेरकम् ॥ समंपिष्टोदकेनैवक्षीरेणसहसंपिबेत् ॥ ॥१५॥ शृंगाटकं कशेरुंचजीवकंबिल्वपत्रकम् ॥ खर्जूरं शीततोयेन पिष्ट्वा क्षीरेणसंपिबेत् ॥ १६ ॥

इति द्वितीयमासे गर्भरक्षा ॥ २ ॥

गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके लिये दूसरे मास में अश्विनीकुमार देवताके वैद्योंके प्रति मंत्रका जाननेवाला पुरुष मंत्रसे बलिदे ॥ ९ ॥ दही, भात, खीर, धानकी खील, तिलखल्ली, फूल, इतरका फोहा, धूप, दीपक, वस्त्र, जलका भरा घट, उसमें यत्किंचित् सोना डाल देवे। यह सर्व वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें एक जगह रख कर मंत्र २१ वार पढकर अश्वशालामें या गोशालामें रख आवे और उस जगह भी

मंत्र पढना चाहिये ।। १० ।। ११ ।। यह बारहवां श्लोक है यह सर्वमंत्र है, इसीको २१ वार जपके गर्भवती स्त्रीके ऊपर वारके बलि देना चहिये ।। १२ ।। और जो दूसरे महीनेमें गर्भमें कुछ वेदना हो तब तगर, केसर, बेलगिरी, कपूर, ।। १३ ।। यह सर्व समान लेकर बकरीके दूधमें पीसे और बकरीके दूधमें छानके पीवे, ऐसा करनेसे गर्भपात नहीं हो और शूल जाता रहे ।। १४ ।। अन्योपायः ।। सालममिसरी नीलोफर, कसेरू, अदरख, यह सब समान लेकर जलमें पीसकर गौके दूधमें छानकर पीवे ।। १५ ।। अन्योपाय ।। सिंघाडा, कसेरू, जीरा सफेद, बेलपत्र, छूहारा, यह सर्व समान लेकर ठंडे पानीमें पीसकर दूधमें छान कर पीवे ।। १६ ।।

यह दूसरे महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ।। २ ।।

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंबलिर्मासेतृतीयके ।। रुद्रानेकादशोद्दिश्यदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ।। १७ ।। घृतमन्नंच लाजाश्च ध्वजः श्वेतोथचंदनम् ।। श्वेतपुष्पाणि वस्त्रं च श्वेतं धूपं प्रदापयेत् ।। १८ ।। श्वेतपंकजयुक्तश्च पूर्णकुंभः सकांचनः ।। इत्येवं प्रथमस्थाने ईशान्यांदिशिनिक्षिपेत् ।। १९ ।। अथ मंत्रः ।। महादेवः शिवोरुद्रःशंकरो नीललोहितः ।। ईशानोविजयोभीमोदेवदेवोजयोद्भवः ।। २० ।। कपालीशश्चकथ्यंते तथैकादशमूर्त्तयः।। रुद्राएकादशप्रोक्ताः प्रगृह्णीत बलिंत्विमम् ।। २१ ।। युष्माकं तेजसां वृद्ध्यागर्भंरक्षतु गर्भिणीम् ।। यूयंमंत्रावबोधाहिनित्यंरक्षतगर्भिणीम् ।। २२ ।। अथचेत्रितयेमासिगर्भेभवतिवेदना ।। पद्मकंचंदनोशीरंतगरंससभागिकम् ।। २३ ।। शीततोयेनसंपिष्ट्वाअजाक्षीरेणपाययेत् ।। एवं न पततेगर्भः शूलं चैवविनश्यति ।। २४ ।। उशीरंचंदनंमुस्तापद्मकंपद्मनालकम् ।। शीततोयेन संपिष्य क्षीरेणालोडयतत्पिबेत् ।। २५ ।।

इति तृतीये मासि गर्भरक्षा ।। ३ ।।

गर्भवती स्त्रीके गर्भकी रक्षाके लिये तीसरे महीनेके विषय एकादश रुद्रोंके प्रति मंत्रका जाननेवाला बलिको मंत्रित करके दे ।। १७ ।। घृत, चावल,धानकी खील, सफेद ध्वजा, सफेदचंदन, सफेद पुष्प, सफेदवस्त्र, धूप ।। १८ ।। सफेद कमलके फूल और यत्किंचित् सोना जलका भरा हुआ कलशमें डालकर यह सब वस्तु एक पात्रमें रखके २१ वार मन्त्र पढके ७ वार स्त्रीके ऊपर वारके गोशालामें ईशान दिशाकी तरफ धर आवे ।। १९ ।। बीसका श्लोक और इक्कीसका श्लोक और बाइसका श्लोक इन तीन श्लोकोंका मंत्र है इसको २१ वार पढना चाहिये ।। २० ।। ।। २१ ।। २२ ।। और जो तीसरे महीनेमें गर्भमें वेदना हो तब पदमाख, सफेदचंदन खस, तगर, यह सब समान लेकर ।। २३ ।। ठंढे पानीमें पीसके बकरीके दूधमें

छानकर, पीये ऐसे करनेसे गर्भपात नहीं हो और शूलशमन हो जाये ।। २४ ।। और खस, सफेदचंदन, नागरमोथा, पद्माख, कँवलककडी, शीतल जलमें पीसकर गौके दूधमें छानकर पीये तो गर्भपात नहीं हो ।। २५ ।।

यह तीसरे महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ।। ३ ।।

गर्भिणीगर्भरक्षार्थं बलिर्मासे चतुर्थके ।। उद्दिश्य द्वादशादित्या-नैशान्यां दिशि यत्नतः ।। २६ ।। आरक्तान्नं गुडान्नं च रक्तगंधध्वजे तथा ।। रक्तपुष्पं भूपदीपौरक्तवस्त्रं चकांचनम् ।। २७ ।। कलशः सलिलापूर्णः क्षिपेच्चैव जलाशये ।। वक्ष्यमाणेन मंत्रेण मंत्रिणेतिसमन्वितः ।। २८ ।। मंत्र :।। यमोवैवस्वतस्त्वष्टावसुश्च सवितामृगः ।। विष्णुस्तथामधुर्मित्रः खगः सूर्योथतापनः ।। २९ ।। आदित्याद्वादशप्रोक्ताः प्रगृह्णीतबलित्विमम् ।। यूयंवैतेजसांवृद्ध्यानित्यंरक्षत गर्भिणीम् ।। ३० ।। शृंगाटंकदलीपत्रंद्राक्षंचदाडिमोद्भवम् ।। बीजंतुकदलीकंदंशीततोयेन पेषयेत् ।। ३१ ।। अजाक्षीरेण संलोड्य पिबेन्नारीसुखाप्तये ।। उशीरं कदलीमूलंतथावैपद्मनालकम् ।। ३२ ।। शीततोयेन संपिष्यछागीक्षीरेणसं-पिबेत् ।। एवं न पतते गर्भः शूलं चैव विनश्यति ।। ३३ ।।

इति चतुर्थे मासि गर्भरक्षा ।। ४ ।।

गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके लिये चौथे महीनेमें द्वादश आदित्योंके प्रति ईशान दिशामें जतनसे बलिदान देवे ।। २६ ।। मसूरकी दाल, गुड, चावल लालचंद लालध्वजा-लालफूल, धूप, दीपक, लाल कपडा, यत्किञ्चित् सुवर्ण कलशमें डालकर जलसे पूर्ण करके यह सर्व वस्तु एक मिट्टीके बर्तन रखकर आगे जो मंत्र कहेंगे उस मंत्रको २१ वार जपके नदीके या तालाके किनारे ईशान दिशा की तरफ धर आवे ।। २७ ।। ।। २८ ।। उनतीसका श्लोक और तीसका श्लोक यह दोनोंका मंत्र है इसको २१ बार जपके ७ वार स्त्रीके ऊपर बारके बलिदेना चाहिये ।। २९ ।। ।। ३० ।। और चौथे महीनेमें स्त्रीके वेदना हो तब सिंघाडा, केलाके पत्ते, दाख, अनारकी कली, केलाका कंद यह वस्तु शीतल जलसे पीसे ।। ३१ ।। फिर बकरीके दूधमें छानकर पीनेसे वेदना नष्ट हो सुखकी प्राप्ति हो ।। अन्योपायः । खस, केलाकी जड, कमलककडी ।। ३२ ।। शीतल जलसे यह द्रव्य पीसकर बकरीके दूधमें छानकर पीये, ऐसा करनेसे गर्भ पात नहीं हो शूल नष्ट हो जाये ।। ३३ ।।

यह चौथे महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ।। ४ ।।

गर्भिणीगर्भरक्षार्थं पंचमे मासि वै बलिः ।। विनायकं समुद्दिश्य देयः संयतचेतसा ।। ३४ ।। विनायकं गोमयेनकुर्यात्पिष्टेनवापुनः ।।

चतुरस्रेशुभेलिप्तेस्थापयेत्तंगणाधिपम् ।। ३५ ।। अभ्यर्च्यगंधपुष्पाद्यैर्बलितत्पुरतः क्षिपेत् ।। अन्नंपक्वंतथाऽपक्वंमांसंपक्वमपक्वकम् ।। ३६ ।। पायसंमधुकंद्राक्षागुडक्षीरफलानिच ।। कदलीफलपिण्डालमधूकानिचमूलकम् ।। ३७ ।। परुषंनालिकेरंचकंदमूलानि सर्षपाः ।। सर्वधान्यानि लाजाश्चसूपश्चतिलपिष्टकम् ।। ३८ ।। इक्षवस्तद्रसश्चैवमाध्वीपैष्टीगुडोद्भवा ।। येषुयानिनिषिद्धानितानि त्यजबलिंहरेत् ।। ३९ ।। मत्स्यांस्तत्रसमानीयसहकारतलेक्षिपेत् ।। अथवान्यस्यवृक्षस्यमूलेमंत्रेण मंत्रवित् ।। ४० ।। मंत्रः । एकदंतोंबिकापुत्रस्त्रिनेत्रोगणनायकः ।। रक्तांबरधरः श्रीमान्राक्तमाल्यानुलेपनः ।। ४१ ।। विनायकोगणाध्यक्षः शिवपुत्रोमहाबलः ।। प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम् ।। ४२ ।। बलिप्रदायकंमर्त्यमायुषाचापिवर्द्धय ।। अलक्ष्मींवामयंपापंग्रहंविघ्नंविनाशय ।। ४३ ।। बक्रतुंडमहावीर्यमहाभागमहाबल ।। शिरसात्वामहंबंदेसापत्यां रक्षगर्भिणीम् ।। ४४ ।। अथचेत्पञ्चमेमासिगर्भेभवतिवेदना ।। नीलोत्पलंमृणालंचपद्मकेसरसंयुतम् ।। ४५ ।। अजाक्षीरेणसंपिष्ट्वाक्षीरेणालोड्यतत्पिबेत् ।। एवंनपततेगर्भः शूलं चैवविनश्यति ।। ४६ ।। नीलोत्पलस्यमूलंतुकाकमाचीसनालकम् ।। शीततोयेनसंपिष्यक्षीरेणालोड्य तत्पिबेत् ।। ४७ ।। पुनर्नवासर्षपाश्चबदरीबीजमाहरेत् ।। शीततोयेनसंपिष्यअजाक्षीरेणसंपिबेत् ।। ४८ ।।

इति पंचममासगर्भरक्षा ।। ५ ।।

गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके लिये पांचवें महीनेमें गणेशके प्रति चित्तको रोककर पुरुष बलि दे ।। ३४ ।। चौकोर स्थल लीपके उसपर गोबरका या आटेका गणेश बनाकर स्थापन कर देना चाहिये ।। ३५ ।। फिर उनका गंधपुष्पादिकों से पूजन करके उनके आगे बलिदान दे ।। पके हुए मूंगभात और कच्चा मूंगभात पकामांस और कच्चाम ।। ३६ ।। खीर, सहत दाख, गुड, दूध, फल, केलाकी जड़, पिंडालकन्द, बहुवा, मूली ।। ३७ ।। फालसा, नारियल, कन्दमूलफल, सिरस, सर्वधान्य, धानकी खील, दाल, तिलपीठी ।। ३८ ।। ईख, ईखका रस, मदिरा यह समस्त द्रव्य एक पात्रमें स्थित करे जो वस्तु इनमें निषेध हैं वह त्याग कर दे ।। ३९ ।। और मच्छीभी बलिमें सामिल करे, यह बलि २१ वार मंत्रसे मंत्रित करके ७ वार स्त्रीपर वारके गणेशसहितआम्र वृक्षके तले रख आवे आम्रवृक्षका अभाव हो तब और वृक्षके नीचे रख आवे ।। ४० ।। इकतालीसके श्लोकसे लेकर चवालीसके

श्लोक पर्यंत मंत्र है इसीको जपना चाहिये ।। ४१ ।। ४२ ।। ४३ ।। ४४ ।। और जो पांचवें महीनेमें गर्भमें पीडा हो तब नीलोफर, कमलककडी, कमलगट्टा, नागकेशर यह औषधी बकरीके दूधमें पीसकर छानकर पीवे ऐसा करनेसे गर्भपात नहीं हो और शूल निवृत्त हो जावे ।। ४५ ।। ४६ ।। अन्योपाय: ।। नील कमलकी जड, काकमाची, कमलककडी यह औषधी ठण्डे जलसे पीसकर दूधमें छानकर पीये गर्भपातोपद्रव शांत हो ।। ४७ ।। अन्यो पाय: ।। सांठीकी जड, सिरस, बेरकी गीरी यह दवाई शीतलजलसे पीसकर बकरीके दूधमें छानकर पीनेसे गर्भपातोपद्रव शांत होजाये ।। ४८ ।।

यह पांचवें महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ।। ५ ।।

गर्भिणीगर्भरक्षार्थषष्ठेमासितथाबलि: ।। वसूनष्टसमुद्दिश्यदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ।। ४९ ।। घृतान्नंचहरिद्रान्नंतंडुलांश्चैवपायसम् ।। पीतवर्णप्रसूनानितथा नीलोत्पलानिच ।। ५० ।। सकांचनपूर्णकुंभंसद्यो नद्यास्तटेक्षिपेत् ।। वक्ष्यामाणेनमन्त्रेणसावधानो भवेत्सुधी: ।। ५१ ।। मंत्र: प्रवास: पावन: सौम्य: प्रत्यूष: पावकोऽनल: ।। धरो ध्रुव इति ह्येते वसवोष्टौ प्रकीर्तिता: ।। प्रगृह्णंतु बलिं चेमं नित्यं रक्षंतु गर्भिणीम् ।। ५२ ।। षष्टेमासियदास्त्रीणांगर्भेभवतिवेदना ।। तदावचैलामृद्वीकाचोत्पलंकेसरंपिबेत् ।। ५३ ।। पिप्पलीपिप्पलीमूलमुत्पलंतुसकेसरम् ।। शीततोयेनसंपिष्ट्वाक्षीरेणालोडयतत्पिबेत् ।। ५४ ।। रामठं निंबपत्रंचमहिषीशृंगसर्षपा: कपिविष्टाधूपकंतुदद्यादेषांमहोत्तमम् ।। ५५ ।। गजपिप्पलिकंचैवतथा तागरमुस्तकम् ।। भार्ङ्गींचजीरकेद्वेचपद्माक्षंरक्तचंदनम् ।। ५६ ।। वचाछागलदुग्धेनपिबेन्नारीसुखाप्तये ।। एवंनपततेगर्भ:शूलं चैवविनश्यति ।। ५७ ।।

इति षष्ठमासगर्भरक्षा ।। ६ ।।

गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके लिये छठे महीनेमें अष्टवस्तुओंके प्रति मंत्रका जाननेवाला पुरुष बलिको मंत्रित करके दे ।। ४९ ।। घृतके चूर्माकी पिंडी, चनाकी दाल, चावल, खीर, बोले रंगके फल, नीले कमलके फूल ।। ५० ।। जलका कलश उसमें यत्किंचित् सोना डाल दे सब वस्तुएं एक पात्रमें रखकर मंत्रसे मंत्रित कर सावधान होकर नदीके किनारे या जलके किनारे बलिको रख आवे ।। ५१ ।। और जो यह बावनका श्लोक है यह डेढ़ श्लोकका मंत्र है इसीको २१ बार जपकर ७ वारका बलि को दे आवे ।। ५२ ।। और छठे महीनेमें गर्भमें पीडा हो तो बच, इलायची, छोटी मनुक्का, नीलोफर, नागकेसर इनको दूधमें पीस छानकर पीये ।। ५३ ।।

अन्योपाय: ।। पीपल, पीपलामूल, कमलका फूल कमलकी केसर यह औषधी शीतल, जलमें पीसकर बकरीके दूधमें छानकर पीवे तो गर्भपीडा मिटे ।। ५४ ।। और धूप लिखते हैं—हींग, नीमके पत्ते, भैंसके सींगका छिलका, शिरस, बंदरकी बीट इनको समान लेकर गर्भवतीके शरीरको और योनिको धूप देवे तो पेटकी शूल मिटे यह धूप बहुत उत्तम है ।। ५५ ।। अन्योपाय: ।। गजपीपल, नागरमोथा, भारंगी, सफेद जीरा स्याहजीरा, पद्माख, लालचंदन ।। ५६ ।। वह यह औषधी सर्व समान लेकर पीस कर बकरीके दूधमें छानकर सुखकी प्राप्तिके लिये स्त्री पीये ऐसा करनेसे गर्भपात नहीं हो और शूल शमन हो जाये ।। ५७ ।।

यह छठे महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ।। ६ ।।

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंसप्तमेमासिवैबलि: ।। स्कंदमुद्दिश्यदातव्य: पूर्वोक्तविधिनैवहि ।। ५८ ।। मंत्र: ।। स्कन्दषण्मुखदेवेशशिवप्रीतिविवर्द्धनन । प्रगृह्णोष्वबलिं चेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम् ।। ५९ ।। कपित्थंचप्रवालं च लाजा: शक्रयवान्विता: ।। पिष्ट्वादुग्धेनदातव्यं गर्भिणीसुखहेतवे ।। ६० ।। कपित्थंशालुकंलाजा: शक्रंचतोयपेषितम् ।। क्षीरेणालोड्यदातव्यंगर्भिणीसुखहेतवे ।। ६१ ।। अश्वत्थवटमूलेचभृंगराजस्तथैवच ।। सूर्यमुख्या:पुनर्नव्यामूलंचरक्तचन्दनम् ।। ६२ ।। अजादुग्धेनसंपिष्यछागीदुग्धेन संपिबेत् ।। एवं न पततेगर्भस्तस्या: शूलंविनश्यति ।। ६३ ।।

इति सप्तमे मासि गर्भरक्षा ।। ७ ।।

गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके लिये सप्तम महीनेमें स्वामिकार्तिकके प्रति, बलि देवे, जो छठे महीनेमें जिस विधिसे दी जाती है उसी विधिसे देनी चाहिय परंतु मंत्र यह जपना चाहिये ।। ५८ ।। यह जो उनसठका श्लोक है यह समस्त मंत्र है इसको २१ वार पढकर ७ सातवार वारकरके जलके किनारे पुरुष धर आवे ।। ५९ ।। और जो सातवें महीनेमें गर्भमें कुछ पीडा हो तो कैथकी गिरी मूँगाकी शाख धानकी खील, इंद्रजौ यह सर्व समान लेकरपीसकर गौके दूधमें पीनेसे गर्भवती स्त्रीको सुखप्राप्ति हो शूल शांत हो ।।६०।। अन्योपाय: । कैथ वृक्षके फलकी गीरी, सालममिश्री, धानकी खील, इंद्रजौ यह सर्व समान लेकर जलमें पीसकर गौके दूधमें छानकर पीनेसे गर्भिणी स्त्रीको सुखप्राप्ति होये ।। ६१ ।। अन्योपाय: । पीपलकी जड, वडकी जड, जलगरा, सूर्यमुखीकी जड, साँठेकी जड, लालचन्दन ।। ६२ ।। यह, औषधी सर्व समान लेकर बकरीके दूधमें पीसकर बकरीके दूधमें छानकर गर्भिणी पीये ऐसे करनेसे गर्भपात नहीं हो और शूलशमन हो ।। ६३ ।।

यह सातवें महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ।। ७ ।।

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंबलिर्मासेपिचाष्टमे ।। दुर्गामुद्दिश्य दातव्य
सुखंभवतिनान्यथा ।। ६४ ।। पायसंशर्करालाजास्तृणधान्यौदनोघृतम् ।
पूपिकाकृशराचैव माहिषंदधिमूलकम् ।। ६५ ।। माषानिष्पावकाः कं
श्यामानि कुसुमानि च ।। नीलोत्पलतिलादीनिपूर्णकुम्भःसकांचन
।। ६६ ।। बलिःक्षिपेन्नदीतीरेमंत्रेणानेनमंत्रितः ।। सलिलेवाक्षिपेन्मंत्रीसुखं
भवतिनान्यथा ।। ६७ ।। मंत्रः ।। कात्यायनि महोदेविज्येष्ठेविद्येनि
शाप्रिये ।। दुर्गादेविमहाकालिसिंहशार्दूलवाहिनी ।। ६८ ।। धनुःखड्गध
देवि दुष्टदैत्यविनाशिनि ।। नदीशैलप्रियदेवि कुमारि सुभगे शिवे ।।६९
अष्टहस्तेचतुर्क्रेपिंगलेशुभनासिके ।। प्रगृह्णीष्वबलिंचेमं सापत्यांरक्षगर्भि
णीम् ।। ७० ।। पद्मकंहस्तिपिप्पल्य उत्पलंपद्मधान्यकम् ।। शीततोये
संपिष्ट्वा क्षीरेणालोड्यतत्पिबेत् ।। ७१ ।। पुनर्नवाचशृंगाटंबेलपत्र
कशेरुकम् ।। अर्जुनफलंपद्माक्षंरक्तचंदनमेवच ।। ७२ ।। छागीदुग्धसं
पेयंदिनासप्तकंतथा ।। एवं न पतते गर्भःशूलंचैवविनश्यति ।। ७३ ।

इत्यष्टमे मासि गर्भरक्षा ।। ८ ।।

गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके लिये आठवें महीनेमें दुर्गादेवीके प्रति बलि देन चाहिये जिससे गर्भिणीको सुख प्राप्ति हो और रीति करनेसे आनंद प्राप्ति है ।। ६४ ।। खीर खांड, धानकी खील, तृणधान्यका भात, घृत, पोली, खिचड़ी, भैं का दही, मूली ।। ६५ ।। उडदके बाकले, चौले किसी रकमका कंद, कालेरंगके फल निलोफर, तिल, जलका कलश उसमें यकिंचित् सोना डाल देवे ।। ६६ ।। यह सब एव पात्रमें रखकर मंत्रसे मंत्रित करके नदीके किनारे या जलके किनारे बलिको रख आवे ।। ६७ ।। और अडसठका श्लोक उन्हत्तरका श्लोक सत्तरका श्लोक यह ती श्लोकोंका मंत्र है इसको २१ वार जपकर ७ सातबार स्त्रीपर वारके बलिकोध आवे ।। ६८ ।। ६९ ।। ७० ।। और जो आठवें महीनेमें गर्भमें पीडा उत्पन्न हो त पद्माख, गजपीपल, कमलका फूल कमलगट्टेकी गिरी, धनियां यह सर्व दवाई समा लेकर शीतल जलसे पीसकर गायके दूधमें छानकर पीनेसे गर्भका उपद्रव शांत हो ।। ७१ ।। अन्योपायः । सांठीकी जड, सिंघाडे, बेलपत्र, कशेरू, अर्जुनवृक्षका फ पद्माख, लालचंदन यह सर्व समान लेकर कूटके कपडछान करके बकरीके दूधके संग फंकी ६ मासे नित्य सात दिन लेनेसे गर्भपात नहीं हो और शूल शांत हो जावे । ।। ७२ ।। ७३ ।।

यह आठवें महीनेकी गर्भरक्षाविधि कही है ।।८।।

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंमासेपिनवमेबलिः ।। देवानां मातुरुद्दिश्यसुखंभवतिनान्यथा ।। ७४ ।। दध्यन्नंदधिमुद्गान्नंलाजाश्चकृशरास्तथा ।। श्वेतपंकजगंधौचश्वेतानि कुसुमानिच ।। ७५।। धूपोवस्त्रंहिरण्येनयुतः पूर्णघटस्तथा ।। वक्ष्यमाणेनमंत्रेणबलिर्देयोजलाशये ।। ७६ ।। मन्त्रः ।। प्रगृह्णीतबलिंचेमंयूयंचदेवमातरः ।। यूयंरक्षतसंतुष्टाः सापत्यांगर्भिणीमिमाम् ।। ८७७ ।। एरंडमूलीकाकोलीपालाशंबीजकंतथा ।। पिष्ट्वाजलेनसंपेयंजीर्णान्नंभक्षयेत्सुखी ।। ७८ ।। पलाशबीजं काकोलीचित्रमूलेनसंयुतम् ।। उशीरमुदकेपिष्यजीर्णान्नं चैव भोजयेत् ।। ७९ ।। नागरब्रह्मपत्रंचएलांचैवविडंगकम् ।। जीरकंगजपिप्पल्याछागीदुग्धेनतत्पिबेत् ।। एतद्यत्नेकृतेनारीगर्भपातंनविंदति ।। ८० ।।

इति नवमे मासि गर्भरक्षा ।। ९ ।।

गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके लिये नौवें महीनेमें देवताओंकी माताओं के प्रति बलि दे, जिससे सुख प्राप्ति हो, अन्यरीति नहीं हो ।। ७४ ।। दही, चावल मूँग, धानकी खील, खिचड़ी, सफेदकमलके फूल, रोली, सफेद सुगंधके फल ।। ७५ ।। धूप, वस्त्र, जलका कलश उसमें यत्किंचित् सोना डाल देवे ।। आगे मंत्र लिखेंगे उस मंत्र से बलि देवे जलके किनारे ।। ७६ ।। यह जो सत्तरका श्लोक है यह मंत्र है इसको २१ बार जपके गर्भवती स्त्रीके ऊपर ७ बार वारके बलि दे ।। ७७ ।। और जो नौवें महीनेमें कुछ गर्भमें पीडा हो तो अरंडकी जड, काकोली, पलासपापडा यह सब औषधी समान लेकर कूट कपडछान करके जलके साथ पीनेसे और पुराना अन्न खानेसे स्त्रीको सुखकी प्राप्ति हो ।। ७८ ।। अन्योपाय. ।। पलासका बीज, काकोली, चीतेकी जड, खस, जलमें पीसकर पीये और पुराना अन्नका भोजन करे ।। ७९ ।। अन्योपायः ।। सोंठ, ढाकके पत्ते, इलायची, वायविडंग, जीरा सफेद, गजपीपल ये सब दवाई समान लेकर पीसकर बकरीके दूधमें छानकर पीये, ऐसे करनेसे नवमें महीनेमें स्त्रीका गर्भपात नहीं हो ।। ८० ।।

यह नवम महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ।। ९ ।।

गर्भिणीगर्भरक्षार्थं मासेऽथदशमे बलिः ।। उद्दिश्यनिर्ऋतिं देवीं देयोमंत्रेण मंत्रिणा ।। ८१ ।। पक्वान्नंकृशरा लाजाःपक्वाऽपक्वाश्चमत्स्यकाः ।। पक्वापक्वंचपललं सुराचेक्षुरसस्तथा ।। ८२ ।। कृष्णंवस्त्रंकृष्णगंधः कृष्णानिकुसुमानिच ।। धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ।। निक्षिपेद्दक्षिणस्यांवैदिशिनीलपटावृतः ।। ८३ ।। मंत्रः ।। पितृदेविपितृज्येष्ठेमहादेविमहाबले ।। प्रेतासनेदिशावासनैर्ऋतेशोणितप्रिये ।। ८४ ।।

प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम् ।। ८५ ।। शर्करांचोत्पलंचैवमधुकंमुद्गमेवच ।। शीततोयेनसंपिष्ट्वाक्षीरेणालोडचतत्पिबेत् ।। ८६ ।। मधुकंपद्मकं चैव उत्पलं च सनालकम् ।। शीततोयेनसंपिष्यक्षीरेणालोडचतत्पिबेत् ।। ८७ ।। नागरावचशुंठीचतगरंकुंकुमं तथा ।। गोरोचनाचरंभाचअजाक्षीरेण पाययेत् ।। ८८ ।।

इति दशमे मासि गर्भरक्षा ।। १० ।।

गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके लिये दशवें महीनेमें निर्ऋति देवीके प्रति मंत्र का जाननेवाला बलिको मंत्रित करके देये ।। ८१ ।। पका हुआ, भात, खिचडी धानकी खील, कच्ची मच्छी, पकी हुई मच्छी, कच्चा मांस, पका मांस, शराब, ईखका रस ।। ८२ ।। कालावस्त्र, कस्तूरी, काले फूल, धूप, दीपक, जलका कलश उसमें यत्किंचित् सुवर्ण डाल देये यह सर्व वस्तु एक पात्रमें डालकर नीला वस्त्र ओढकर २१ बार मंत्र पढकर ८ बार ऊपर वारके दक्षिण दिशामें धर आये ।। ८३ ।। और चौरासी श्लोकसे पचासीके श्लोकतक डेढ श्लोकका मंत्र है उसीको जपना चाहिये ।। ८४ ।। ८५ ।। और जो दशवें महीनेमें गर्भमें पीड़ा उत्पन्न हो तो मिश्री, कमलके फूल, मुलहठी, मूंग यह सर्व समान लेकर शीतल जलसे पीसकर गौके दूधमें छानकर पीनेसे गर्भपातका उपद्रव शांत हो जाये ।। ८६ ।। अन्योपायः । मुलहठी, कमलगट्टा, कमलपुष्प, कमलककडी ये सब समान लेकर शीतल जलमें पीसकर गौके दूधमें छानकर पीये ।। ८७ ।। अन्योपायः । नागरमोठा, वच, सोंठ, तगर, केसर, गोरोचन, केलाकी जद यह सह्मसमान लेकर पीसकर बकरीके दूधमें छानकर पीनेसे गर्भपात नहीं हो शूल शांत हो जाये ।। ८८ ।।

यह दसवें महीनेकी गर्भरक्षा विधि है ।। १० ।।

गर्भिणीगर्भरक्षार्थमासेचैकादशेबलिः ।। वासुदेवंसमुद्दिश्यदेयश्चायंविधिः स्मृतः ।। ८९ ।। पायसंपूपपैष्ठेच गुञ्जालाजाश्च सक्तवः ।। श्यामध्वजाश्यामगन्धः श्यामानिकुसुमानिच ।। ९० ।। धूपदीपौपूर्णकुंभः सनीलोत्पलकांचनः ।। अश्वत्थस्यतुमुलेवावासुदेवालयेऽथवा ।। निक्षिपेत्प्रयतोभूत्वातत्रामुंमंत्रमुच्चरेत् ।। ९१ ।। पांचजन्यः प्रभाव्यक्तःकोस्तुभोद्द्योतभास्करः प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम् ।। ९२ ।। पद्मोत्पलंचमधुकंनासकेनापिसंयुतम् ।। शीततोयेनपिट्वातुक्षीरेणालोडचतत्पिबेत् ।। ९३ ।। त्रिफलाकर्कटश्रृंगीत्रिकटुपुनर्नवा ।। नागरंभृंगराजश्चछागीदुग्धेनसंपिबेत् ।। ९४ ।। मंजिष्ठंचन्दनोशीरं श्रृंगाटंचकशेरुकम् ।। गुडूचीपद्मकंचैव अजादुग्धेन संपिबेत् ।। ९५ ।।

इत्येकादशे मासि गर्भरक्षा ।। ११ ।।

गर्भिणीस्त्रीके गर्भकीरक्षाके लिये ग्यारहवें महीनेमें वासुदेवके प्रतिबलिको दे इस विधिसे ॥८९॥ खीर, पूडे, कचौरी घुंघची, धानकी खील, सत्तु, कालीध्वजा, कस्तूरी, कालेसुगन्धीके फूल ॥ ९० ॥ धूप, दीपक, जलका कलश उसमें नीलोफर सुवर्णडालकर पीपलवृक्षके तले या नारायणके मंदिरमें २१ वार मंत्र पढके ७ वार स्त्रीके ऊपरवारके पुरुष जतनसे बलि धर आये ॥ ९१ ॥ यह बानवेका जो श्लोक है यह मंत्र है इसीको जपना चाहिये ॥ ९२ ॥ और जो ग्यारहवें महीनेमें कुछ गर्भमें पीडाहो तो पद्माख, कमलगट्टा, मुलहठी, कमलकी नाल यह सर्वसमान लेकर शीतल जलमें पीसकर गौके दूधमें छानकर पीये तो गर्भपातका उपद्रव शांतहो जाये ॥ ९३ ॥ अन्योपायः । हरडकी छाल, बहेडा, आंवला, काकडासींगी, सोंठ, मिर्च, पीपल सांठीकी जड, नागरमोथा, जलभंगरा, यह सर्वसमान लेकर पीसकर बकरीके दूध में छानकर पीये ॥ ९४ ॥ अन्योपायः । मंजीठ, चन्दन, खस, सिंघाडे, कशेरू, गिलोय, पद्माख यह सब समान लेकर पीस छानकर बकरीके दूधसे पीनेसे गर्भपात नहीं हो शूल शांत हो ॥ ९५ ॥

यह ग्यारहवें महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ॥ ११ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंमासेवैद्वादशेबलिः ॥ एकादशोक्तविधिनादेयो-मंत्रेणमंत्रिणा ॥ ९६ ॥ पद्मं श्रृंगाटकंचैवउत्पलंतुसनालकम् ॥ शीत-तोयेनपिष्ट्वातु क्षीरेणालोडचतत्पिबेत् ॥ ९७ ॥

इति द्वादशे मासि गर्भरक्षा समाप्ता ॥ १२ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे गर्भिणीगर्भरक्षा कथनं नाम पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥

गर्भिणीस्त्रीके गर्भकी रक्षाके लिये बारहवें महीनेमें जिस विधिसे ग्यारहवें महीनेमें बलिदी है इसी विधिसे देनी चाहिये और उसी देवताके प्रति देनी चाहिये और वही मन्त्र पढना चाहिये ॥ ९६ ॥ और जो बारहवें महीनेमें गर्भमें पीडा उत्पन्न हो तो कमलगट्टा, सिंघाडे, कमलका फूल कमलनाल यह औषधी सर्वसमान लेकर शीतल जलसे पीकर गौके दूधमें छानकर गर्भवती स्त्री पीये तो गर्भपातोद्रब शांत हो जाये ॥ ९७ ॥ यह बारहवें महीनेकी गर्भरक्षा विधि कही है ॥ १२ ॥

इति श्रीमण्डितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंवभाषाटीकायां पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥

अतःपरंप्रवक्ष्यामिसुखप्रसवसिद्धये ॥ स्त्रीणांसुखायकर्तव्याउपाया-अतिगोपिताः ॥ १ ॥ करंकीभूतगोमूर्द्धासूतिकाभवनोपरि ॥ तत्काल-निहितं नार्याः सुखप्रसवकारकम् ॥ २ ॥ करंजपत्रबीजानां कल्केनच-भिषग्वरः तैलंपक्त्वाह्यजाक्षीरेयोनिंलिंपेत्प्रसूतय ॥ ३ ॥ लेपनमंत्रः ॥

हिमवत्युत्तरेपार्श्वेशर्वरीनामयक्षिणी ।। तस्या नूपुरशब्देन विशल्याभव गर्भिणीस्वाहा ।। ४ ।।

अब इसके उपरान्त स्त्रियोंके सुखसे प्रसव होनेके लिये छठा पटल कहते हैं स्त्रियोंके सुखके लिये अतिगुप्त यह उपाय करना चाहिये ।। १ ।। गौके या बैलके शिरका करंक बालक उदय करनेवाली स्त्रीके मकानकी छतपर धर देवें तो उसी समय उस नारीके सुखसे बालक होवे ।। २ ।। अन्योपाय: । करंजुवाके पत्तेका और बीजों का कल्फ करके बकरीके दूधमें तिलोंकै तैलको पकाकर योनिको उस तेलसे लेपन करदे तो सुखसे बालक उत्पन्न हो ।। ३ ।। और यह चौथा लोक है यह तेल लगानेका मंत्र है इस श्लोकको पढता जाये ।। ४ ।।

तत्कालकंटकामूलमुत्तरस्यांदिशिस्थितम ।। उत्पाटचचैवहस्तेनजलेनसहपेषयेत् ।। योनौलिप्त्वा तु सानारीसुखं सूते न संशयः ।। ५ ।। मूलं धत्तूरकस्यैव गृहीत्वा सूर्यसम्मुखम् ।। धत्ते शिरसि या नारी सुखंसूतेनसंशयः ।। ६ ।। पश्चिमाभिमुखोमंत्रीगुंजामूलंसमुद्धरेत् ।। कटौबद्ध्वासुखंसूतेकामिनीनात्रसंशयः ।। ७ ।। अपामार्गस्यमूलन्तुतत्कालोत्पाटितं सुधीः ।। पूर्वाशाभिमुखःपश्चादुदकेपिष्य लेपयेत् ।। योनौ सुखं प्रसूते सानारीरहितवेदना ।। ८ ।। सर्पकुंचुकमादायभस्मकृत्वाविधानवित् ।। मधुनासहसंपिष्यचांजनेनप्रसूयते ।। ९ ।। श्वेतायाःशरपुंखायामूलंगृह्यविधानवित् ।। कटौबध्वासुखंसूतेनारीनात्रविलम्बितम् ।।१०।। गुग्गुलुंसर्पनिर्मोकंचूर्ण्यंधूपंप्रदापयेत् ।। योनौसासुषुवेनारीवेदनारहितासती ।। ११ ।। इंद्रवारुणाकमूलं निक्षिपेद्योनिमंडले ।। तेनसासुषुवेनारीशीघ्रमेवन संशयः ।। १२ ।। मूलंचैवसमादृत्यकलिहार्याः प्रयत्नतः ।। संपिष्ययोनिसंलिप्यसुखंसूतेतुगर्भिणी ।। १३ ।।

उसी वक्त कटेलीकी जद उत्तरके तरफके हाथसे उखाडकर लावे उसको जलसे पीसकर योनिमें लेपन कर देवे तो सुखसे स्त्री बालक को पैदा करे इसमें संदेह नहीं ।। ५ ।। अन्योपाय: । सूर्यके सन्मुख होकर धतूरेकी जडको ग्रहण करे उस जड को शिरपर स्त्री धारण करे तो सुखसे बालकको पैदा करे इसमें सन्देह नहीं ।। ६ ।। अन्योपाय: । पश्चिम दिशाकी तरफ मुख करके चिरमिटीकी जडको उखाडकर लावे गूगलकी धूप देकर कष्टवाली स्त्रीके कटिमें बांधे तो सुखसे बालक उत्पन्न होये इसमें संदेह नहीं ।। ७ ।। अन्योपाय: । पूर्वको मुख करके ऊंगेकी जडको तत्काल उखाडकर लाकर फिर जलसे पीसकर योनिमें लेप करे तो स्त्री सुखसे बालकको पैदा करे और कष्ट रहित हो जाये ।। ८ ।। अन्योपाय: । सांपकी कांचली लाकर भस्म बनावे फिर

सहतमें पीसकर कष्टवाली स्त्रीके नेत्रोंमें आंजे तो सुखसे प्रसूत हो जाये ।। ९ ।। अन्योपायः । विधानपूर्वक सफेद शरपुंखाकी जडको ग्रहण करके कष्टवाली स्त्रीके कटिमें बांधदे तो बहुत शीघ्र सुखसे स्त्री बालकको उत्पन्न करे ।। १० ।। अन्योपायः ।। गूगल सांपकी कांचली दोनोंको कूट कर कष्टवाली स्त्रीके योनिको धूप देवे तो सुखसे बालक उत्पन्न करे कष्ट निवृत्त हो ।। ११ ।। अन्योपायः । इंद्रायणकी जडको योनि में रक्खे तो शीघ्र सुखसे स्त्री बालकको पैदा करे इसमें संदेह नहीं ।। १२ ।। अन्योपायः । कलिहारी बढीकी जड लाकर उसको पीसकर योनिमें लेप करदेवे तो सुखसे कष्टवाली स्त्री सन्तानको पैदा करे ।। १३ ।।

पुष्यार्कमूलमादृत्यकनकस्यविधानतः ।। कटौबद्धासुखंसूतेगर्भिणानात्रसंशयः ।। १४ ।। पत्रकंसिन्दुवारस्यनिर्गुण्डीपत्रकंतुवा ।। जलेनसहसंपिष्य योनिंलिपेत्प्रसूतये ।। १५ ।। वृषस्यमूलंहिमतोयपिष्टंरसोथवापर्पटपत्रजातः ।। नाभेरघोलेपनतोऽङ्गनानांसुखेनगर्भप्रसवंकरोति ।। १६ ।। लांगल्याः परिलेपः कांजिकयोगेन काकमाच्यावा ।। नाभौसहसाकुरुते गर्भप्रसवंनसंदेहः ।। १७ ।। तैलेनपिष्ट्वारुबुकंचकृष्णंवचांप्रलिप्त्वा खलुनाभिदेशे ।। सुखप्रसूतिंकुरुतेऽङ्गनानांप्रपीडितानांबहुभिः प्रमादैः ।। १८ ।। मयूरमूलासनशिग्रुपाठाव्याघ्रीबलालाङ्गलिकासमेता ।। पिष्ट्वारनालेनविलिप्यनाभौसुखेननारीः प्रसवं करोति ।। १९ ।। शालिपर्ण्या भवंमूलंपिष्टंतंडुलवारिणा ।। नाभिबस्तिभगेलेपात्प्रसूतेप्रमदासुखम् ।। २० ।। सर्पकंचुकनृकेशसर्षपैस्तिक्ततुंबिकृतवेधनान्वितैः ।। धूपनात्कुटकतैलसंयुतैस्तत्क्षणंखलुसुखंप्रसूयते ।। २१ ।। कृत्वा दशधाखण्डंगुंजामूलंनिबध्यकटिदेशे ।। सूत्रैः सप्तभीरक्तैः सुखप्रसूतिंहि भामिनीलभते ।। २२ ।। मातुलुंगस्यमूलानिमधुकंमधुसंयुतम् ।। घृतेनसहदातव्यंसुखंनारीप्रसूयते ।। २३ ।।

अन्योपायः पुष्य नक्षत्रमें जब सूर्य हो तब विधान पूर्वक धतूरेकी जड लाये उसको कष्टवाली स्त्री कटिमें बांधे तो सुखसे संतान पैदा करे इसमें संदेह नहीं ।। १४ ।। अन्योपायः । संभालूके पत्ते या निर्गुडीके पत्ते शीतल जलमें पीसकर योनिमें लेप करे तो सुखसे संतान उत्पन्न हो ।। १५ ।। अन्योपायः । बांसके जडको शीतल जलमें पीसकर नाभिघे नीचे लेप करनेसे या पित्तपापडाके पत्तोंका रस नाभिके नीचे लेप करनेसे सुखसे बालक उत्पन्न हो ।। १६ ।। अन्योपायः । लांगलीके जड़को कांजीके जलमें पीसकर नाभिमें लेप करे अथवा काकमाचीके जडको कांजीमें पीसकर नाभिमें लेप करनेसे शीघ्र बालकको उत्पन्न करे इसमें संदेह नहीं ।। १७ ।।

अन्योपाय: । अरंडकी गिरी, पीपल, वच, इन्हींको मीठे तैलमें पीसकर नाभिमें लेप करे तो कैसाही कष्ट हो तो निवृत्त हो जाये, सुखसे संतान उदय हो ।। १८ ।। अन्योपाय: । मोरशिखाकी जड, विजय सार, सहिजनेकी जड, पाठा, कटेली, खरैंटी यह सब दवाई समान लेकर कांजीमें पीसके नाभिमें लेप करे तो नारीके सुखसे बालक उत्पन्न हो ।। १९ ।। अन्योपाय: । शालपर्णीकी जडको चावलोंके पानीमें पीसकर नाभिपर बस्तिदेशमें और भगपर लेप करनेसे सुखसे बालक उत्पन्न करे ।। २० ।। धूतमाह । सांपकी कांचली, मनुष्यके माथेके केश, सिरस, कडवीतुंबी, अमलतास यह औषधी सब समान लेकर कडुए तेलमें मिलाकर धूप देवे तो उसी उमय सुखसे बालक उत्पन्न होवे ।। २१ ।। अन्योपाय: । चिरमिठीकी जडको लाकर दश टुकडे करके फिर सप्त तारकी लाल डोरीमें उनको अलाहिदा २ बांधकर कष्टवाली स्त्रीके कटिपर बांधे तो सुखसे संतान उत्पन्न हो ।। २२ ।। अन्योपाय: । बिजौरेकी जड, मुलहठी, शहद यह वस्तु जलसे पीसकर जलमें छानकर गरम करके घी उसमें डालकर पीवे तो कष्ट वाली स्त्रीको सुखसे संतान हो, कष्ट दूर हो ।। २३ ।।

बालंबलाचांशुमतीवृहत्यौपाठानिशादारुनिशागुडूची ।। एभि:सुपिष्टै: खलुगर्भिणीनांतैलंविपक्वंपयसा प्रशस्तम् ।। २४ ।। अभ्यंगकर्णांतरपूरकाभ्यांसर्वामयानांप्रलयंविधत्ते ।। गर्भस्यपुष्टिसबलं शरीरंकृशानुर्वृद्धिरुचिरारुचिच ।। २५ ।। अश्वत्थोत्तरमूलंतंडुलपयसानिघृष्टयापिबति ।। सद्यो भवतिविशल्याविमूढगर्भापिनात्रसंदेह: ।। २६ ।। प्रशस्तेरक्षतुदक्षहितस्त्रीभिरलंकृते ।। प्रसूतांसूतिकागारेरक्षामन्त्राभिमंत्रिताम् ।। २७ ।। प्रणवोभुवनेशानिस्मरश्रीरक्षयुग्मकम् ।। वह्निजायावधिर्मन्त्र: प्रोक्त: पंचदशाक्षर: ।। २८ ।। दोरकंरक्तसूत्रेणस्त्रीप्रमाणंतुकारयेत् ।। सप्तग्रंथिसमायुक्तंसप्ततंतुविनिर्मितम् ।। २९ ।। सूतिकाभवनद्वारिबध्नीयान्मंत्रमंत्रितम् ।। रक्षामंत्र: समाख्यात: सर्वासां हितकाम्यया ।। ३० ।।

नेत्रवाला, खरैंटी, चांदबेल, कटेलीकी जड, पाडर हलदी, दारुहलदी, गिलोय यह सब दवाई पीसकर कल्क ह्मनाकर तेलसे चौगुना दूध डालकर कल्क उसमें डाल कर पकाले यह तेल गर्भावती स्त्रीको हितकारी है ।। २४ ।। यह तैल मालिस करने से कानमें डालनेसे सब रोगोंका नाश करताहै; तथा गर्भकी पुष्टि करता है, शरीर को बलवान् करता है, अग्निको बढ़ाता है, और रुचिको बढ़ाता है ।। २५ ।। पीपल वृक्षकी उत्तरके तरफकी जड लेकर चावलोंके पानीसे पीसकर जो गर्भवती स्त्री पीये तो मढगर्भवाली हो तो भी तत्काल कष्टरहित हो जाये, सुखसे संतान उत्पन्न होये इसमें संदेह नहीं करना चाहिये ।। २६ ।। बहुत श्रेष्ठ प्रसूता स्त्रीका स्थान प्रमाण करे और चतुर हितकारी स्त्रियां उस जगह नियुक्त करनी चाहिये फिर

रक्षामंत्रसे प्रसूता स्त्रीकी रक्षा करनी चाहिये ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स्मर स्मर श्रीं श्रीं रक्षा रक्षा स्वाहा । यह पंचदशाक्षर मंत्ररक्षाविधिके लिये कहा है ॥२८॥ लाल सूतका डोरा स्त्रीके प्रमाणमाफिक करना चाहिये परंतु सात तारका होना चाहिये फिर उसमें ७ गांठ लगाकर पूर्वोक्त कहे हुए मंत्रसे १०८ बार मंत्रित करना चाहिये ॥ २९ ॥ सूतिकाके भवनके दरवाजेपर बांध देना चाहिये, सब स्त्रियोंके हितके लिये यह रक्षाविधि कही है ॥ ३० ॥

अबलांरुधिरस्रावादबलांसमुपाचरेत् ॥ स्नेहाभ्यंगेनमतिमान्निर्वातस्थानरक्षणैः ॥ ३१ ॥ पैष्टिकीं मागधींवापिमदिरामपिपाययेत् ॥ एवंद्वित्रिदिनंतज्ज्ञैः कर्तव्यास्तुहिताः क्रियाः ॥ ३२ ॥ यवागूंसघृतांवैद्यः कृशरांवाबलादिकम् ॥ सात्म्यंकालंवयोवीक्ष्यत्रिरात्रंभोजयेत्तथा ॥ ३३ ॥ यवकोलकुलित्थानांजांगलस्यरसोत्तमैः ॥ ओदनंभोजयेत्सात्म्यंकृशानुंरक्षयेत्ततः ॥ ३४ ॥ अनेन विधिना दक्षः प्रशस्ताभिः सुरक्षिताम् ॥ प्रदक्षागर्भजननेस्त्रियस्तांसमुपाचरेत् ॥ ३५ ॥ कोष्णेनपयसास्नेहैः सुस्निग्धां स्नापयेत्ततः ॥ यथायुक्तिविधानज्ञः पश्चाछानानि कारयेत् ॥ ३६ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे सुखप्रसवोपायकथनं
नाम षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

रुधिरके बहनेसे निर्बल हुई स्त्रीकातैलादिकोंसे मर्दन करकेवगैर हवाके मकानमें रख करके रक्षामंत्र करके उपाचारण करे अर्थात् बुद्धिमान् वैद्य चिकिसा करे ॥ ३१ ॥ पैष्टिकी संज्ञक मदिराको और मागधीसंज्ञक मदिराको वैद्य प्रसूता स्त्रीको पलावे ऐसे प्रसूताकी विधिके जाननेवाले वैद्यको दो तीन रोजतक हितकारी क्रिया करनी चाहिये ॥ ३२ ॥ बलको सात्म्यताको समयको अवस्थाको देखके तीन रात्रि पर्यन्त घृतसहित यवागूका भोजन रकाये अथवा खिचड़ी घी सहित खवाये ॥ ३ ॥ जौका कोलसा अथवा कुलित्थके रसके संग अथवा वैद्य बलमाफिक देवे अग्निकी रक्षा रक्खे अर्थात् मंदाग्नि नहीं होनेदे ॥ ३४ ॥ इस विधि करके अच्छी श्रेष्ठ हितकारी क्रियाओंसे चतुर वैद्य प्रसूताकी रक्षा करे या बहुत चतुर दई लोग प्रसूताकी प्रतिक्रिया करे ॥ ३५ ॥ प्रथम तैलादिकोंकी मालिश सर्व शरीरको कराके पीछे गरमजलसे स्नान कराये, फिर युक्तिपूर्वक सर्व विधानका जाननेवाा वैद्य दान पुण्य कराये ॥ ३६ ॥

इति श्रीपंडतनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

अत:परंप्रवक्ष्यामिबालरक्षांयथाक्रमम् ।। प्रथमेदिवसेनाम्नीनंदि नीक्रमतेशिशुम् ।। १ ।। तद्गृहीतस्यबालस्यज्वर: स्यात्प्रथमंतत: ।। गात्रशोषस्तथास्वेदोनाहारे वभिनन्दनम् ।। २ ।। छर्दिमूर्च्छाचकंपश्चशो षोदीनस्वरस्तथा ।। विधानंतत्रवक्ष्यामियेनमुंचति नंदिनी ।। ३ ।। कूल द्वयमृदाकुर्यात्पुत्तिकांसुमनोहराम् ।। शुक्लोदनं शुक्लगंधं तथा गंधानु लेपनम् ।। ४ ।। शुक्लपुष्पाणि पंचैव ध्वजा: पंचप्रदीपका: ।। स्वस्ति कापंचपूर्वाह्णेपूर्वस्यांदिशिसंयुत: ।। ५ ।। बलिं दद्यादथोराजसर्षपोशी रमेव च ।। शिवनिर्माल्य मार्ज्जारनृकेशानिंबपत्रकम् ।। ६ ।। गव्य घृतं ततोऽनेन धूपयेच्चैव बालकम् ।। एवं दिनत्रयं कृत्वा चतुर्थेमन्त्रवारिण ।। ७ ।। स्नापयेद्बालकंपश्चाद्ब्राह्मणंवापिभिक्षुकम् ।। क्षीरेणभोजयेदेवं स्वस्थोभवतिबालक: ।। ८ ।। स्नापनेपूजनेचैवबलिदानेचमार्जने ।। वक्ष्य माणेनमन्त्रेण कर्तव्युंविधिरुत्तम: ।। ९ ।। मंत्र: ।। प्रणवोभुवनेशानिखंख स्वाहाषडक्षर: ।। एवंकृतेनबालस्यसुखं भवति नान्यथा ।। १० ।।

अब इसके उपरांत क्रमपूर्वक बालक्षाको कहते हैं पहिले दिननंदिनी नाम देवी बालकको ग्रहण करती है ।। १ ।। उस बालकको प्रथम ज्वर हो गात्र सूखे पसीना आवे स्तन ले नहीं ।। २ ।। दूधकी छर्दि करे मूर्छा हो कंप हो मुखशोष हो क्षीण स्वर हो यह लक्षण नंदिनीदेवीसे गृहीत बालकके होते हैं । अब जिस विधानसे वह बालक को छोडदे सो विधान कहते हैं ।। ३ ।। नदीके दोनों किनारेकी मट्टी लाकर उसकी सुन्दर मूर्ति बनाकर एक पात्रमें रखकर उसके आगे सफेद भात पकाकर रक्खे सफेद फूल, सफेद चन्दन घिसकर रक्खे कपूर रक्खे ।। ४ ।। सफेद चमेलीके फूल पांच, सफेद ध्वजा पांच पांच आटेके दिये सब एक जगह रखकर २१ बार मंत्र पढकर दे बारबालक पर वारके ४ घड़ी दिन चढे पूर्व दिशामें धर आवे ।।५।। ऐसे बलिके और बली दिये पीछे राई; खस, आकके फूल बिल्लीके बाल मनुष्यके शिरके बाल नीमके पत्ते ।। ६ ।। गोकघी यह सब द्रव्य एकत्र करके बालकको धूप देवे ऐसे तीन दिन यह विधान करे ।। ७ ।। फिर चौथे दिन जलमंत्रित करके बालकको स्नान कराय फिर ब्राह्मणको और अभ्यागतोंको दूध भोजन कराये ऐसा करनेसे बालक निरोग हो जाता है ।। ८ ।। स्नान करानेमें पूजनमें बलिके देनेमें मार्जनमें आगे कहेंगे उस मंत्रसे उत्तम विधि करनी चाहिये ।।९।। ॐ ह्रीं खंख: स्वाहा ।। यह छ: अक्षरके मंत्रको जपना चाहिये, इसीसे बलि देना चाहिये, इसी से स्नान करना चाहि ।। १० ।।

द्वितीयेदिवसेबालंगृह्णातिचसुनंदना ।। ततो भवेज्ज्वर:पूर्वसंक

चोहस्तपादयोः ।। ११ ।। दंतान्खादतिश्वसिति निमीलयतिचक्षुषी ।। आहारं च नगृह्णाति दिवारात्रौ च रोदति ।। १२ ।। अक्षिरोगंछर्दनंच-भवेद्भीतिः पुनःपुनः ।। कृशत्वंजायतेऽत्यन्तंचिह्नमेतत्प्रकीर्तित्तम् ।। १३।। तंदुलप्रस्थपिष्टेनविनिर्मायाथपुत्तिकाम् ।। त्रयोदशध्वजादीपाःस्वस्तिका-धवलोदनम् ।। १४ ।। सिद्धान्नंसर्षपंमाषंपक्वापक्वं तिलं तथा ।। मांसं-चैतानिसंदृत्यबलिंबालसुखाप्तये ।। १५ ।। पश्चिमायांचसंध्यायामेवंद-द्याद्दिनत्रयम् ।। धूपं मंत्रजपंस्नानं कुर्यात्पूर्वक्रमेण वै ।। १६ ।।

इति द्वितीयदिवसेबालकग्रहनिवारणविधिः ।। २ ।।

तृतीयेऽह्निचगृण्हाणतिघंटालीबालकंगृही ।। तथास्यात्कंपमुद्वेगंका-संश्वासंचरोदनम् ।। १७ ।। गजदन्तं च गोदन्तंतथांजन्यास्तुकोशकम् ।। अजाक्षीरेणसंपिष्यततोबालंप्रलेपयेत् ।। १८ ।। धूपयेन्निंबपत्राणि नखसर्ष-पराजिकाः ।। लेपितोधूपितोबालःसुखमाप्नोतिनिश्चितम् ।। १९ ।। प्रथ-मोक्तप्रकारेणशेषमन्यच्चकारयेत् ।। एवंकृतेतुसादेवीबालकंमुंचतिस्फुटम् ।। २० ।।

दूसरे दिन सुनंदनानाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके यह लक्षण होते हैं—प्रथम ज्वर उत्पन्न हो, हाथ पैरोंको सकुच रक्खे ।। ११ ।। दांतोंको चबे, श्वासकी अधिकता रहे, नेत्रोंको मीचा रवखे स्तन चूसे नहीं, दिनरात्रि रोया करे ।। १२ ।। नेत्रोंमें रोग हो अर्थात् दूखे दूधकी छर्दि हो और चमकेबारबार शरीर-दुर्बल हो जाये इन लक्षणोंसे सुनंदना देवीका दोष होता है ।। १३ ।। कहते हैं—सेरभर चावल पीसकर देवीकी मूर्ति बनाकर उसको एक पात्रमें रखकर १३ ध्वजा पंचरंगी १३ दीपक १३आटेके दीपक धोले चावल पके हुए ।। १४ ।। गेहूंका दलिया सिरस उडदके बाकले मांस यह संपूर्ण वस्तु आगे रखकर पात्रमें, ।। १५ ।। २१ वार मंत्र पढकर ७ बार बालकपर वारके संध्यासमय पश्चिम दिशामें धर आये ऐसे तीन दिन करनेसे बालकको आनंद हो जाये और धूप मंत्र स्नान कराना यह सब प्रथम दिनकी विधिके कमसे करे ।। १६ ।। इति द्वितीय-दिवसे बालग्रहरक्षाविधिः ।। २ ।। तीसरे दिन घंटाली नामदेवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं—प्रथम बालकका शरीर कंपे उद्वेग हो खांसी हो श्वासका हकारा हो और बहुत रोवे इन लक्षणोंसे घंटाली देवीका दोष जानना ।। १७ ।। हाथी दांत गौका दांत कुम्हारी जानवरके घरकी मट्टी यह सब बक रीके दूधमें पीसकर बालकके शरीरपर लेप करे ।। १८ ।। नींबके पत्ते नख सिरस राई इनकी धूप दे ऐसे करनेसे बालक निश्चय सुखको प्राप्त होता है ।। १९ ।।

और दूसरे दिनकी बलिविधान करके प्रथम दिनकी रीतिसेस्नान कराये उसी मंत्रका जप करे सब कर्म पूर्ववत् करे ऐसे करनेसे घण्टाली देवी बालकको छोड देती है ।। २० ।।

इति तृतीयदिवसे बालकग्रहरक्षाविधिः ।। ३ ।।

चतुर्थेह्निचगृह्णातिकटकोलीग्रहीशिशुम् ।। पच्चेष्टाऽरुचिरुद्वेगः फेनोग्दारौदिगीक्षणम् ।। २१ ।। गजदन्ताऽहिनिर्मोकराजिकाश्चप्रलेपयेत् ।। धूपयेत्सर्षपारिष्टकेशैर्मुंचतिसाग्रही ।। २२ ।। मंत्रस्नानादिकं सर्वबलिदानादिकं तथा ।। प्रथमोक्तप्रकारेणशेषमन्यत्समापयेत् ।। २३ ।। इतिचतुर्थदिनेबालग्रहनिवारणविधिः ।।४ ।। पञ्चमेऽहन्यहंकारिग्रहीगृह्णाति बालकम् ।। तच्चेष्टाजृंभणंश्वासमुष्टिबंधोर्ध्ववक्षिणम् ।।२४।। शिलातालवचालोध्रमेषशृगैः प्रलेपयेत् ।। लशुनंनिंबपत्राज्यसिद्धार्थैर्धूपयेत्ततः ।। २५ ।। एवं मुंचतिसाबालंबलिदानाद्विशेषतः ।। अवशिष्टंतुयत्सर्वंपूर्वरीत्याप्रकारयेत् ।। २६ ।। इतिपंचमदिने बालग्रहनिवारणविधिः ।। ५ ।। षष्ठेचदिवसेनाम्नाखष्ट्वांगीक्रमतेशिशुम् ।। तच्चेष्टागात्रविक्षेपोहास्यरोदनमोहनम् ।।२७।। कुष्ठगुग्गुलुसिद्धार्थगजदन्तैर्घृतान्वितैः ।। धूपयेल्लेपयेच्चापिततोमुञ्चतिसाग्रही ।।२८।।

इति षष्ठदिवसबालग्रहरक्षाविधिः ।। ६ ।।

चौथे दिन कटकोलीनाम देवी बालकको ग्रहण करती है और उसके लक्षण कहते हैं–स्तन चूसे नहीं उद्वेग हो मुंहमें झाग आये डकार ले रोये दिशाओं की तरफ आंख फेरके देखे ।।२१।। अब इसका उपाय लिखते हैं–हाथीदांत, सांपकी कांचली राई यह तीनों बराबर लेकर पानीमें पीसकर शरीरपर लेप करे शिरस नींबके पत्ते मनुष्यके माथेके बाल इनकी धूनी देनेसे कटकोली देवीकादोष दूर हो बालक चङ्गा हो ।। २२ ।। और मंत्रजाप स्नान कराना बलिदान यह सब वस्तु पहिले दिनके माफिक करे ।। २३ ।। इति चतुर्थदिनगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ४ ।। पांचवेंदिन अहंकारीदेवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं–जंभाई बहुत आवे श्वासका हकारा हो मुट्ठी बंधी रक्खे ऊपरको देखे यह लक्षण होनेसे अहंकारीदेवीका दोष कहना ।। २४ ।। अब उसका उपाय लिखते हैं–मनसिल हरताल, वच, लोध, मेढासिंगी, यह औषधी सब समान लेकर पानीमें पीसकर बालकके लेपन करे और लहसन नीमके पत्ते घी राई इनकी धूनी बालकको दे ।। २५ ।। ऐसा करनेसे अहंकारी देवी बालकको छोड देती है और शेष रहे बलिदान स्नानमंत्र जपादिक कर्म है सो पहिले दिनके माफिक करे बालक चङ्गा हो ।। २६ ।।

इति पंचमदिनगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ५ ।। छठे दिन खट्वांगीदेवी बालकको ग्रहण करती है इसके लक्षण कहते हैं–प्रथम बालक अचैनी रहे और हँसे कदाचित् रोवे मोह हो अर्थात् गफलत रहे स्तन चूसे नहीं इन लक्षणोंसे खट्वांगीदेवीका दोष कहना ।। २७ ।। इसका उपाय लिखते हैं–कूट, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, गौका घी इन द्रव्योंकी बालकको धूप दे और यह द्रव्य जलमें पीसकर बालकको लेपन करे और दान बलिदान मंत्र जाप स्नान यह पहिले दिनकी माफिक करे बालक चंगा हो खट्वांगी देवीका दोष दूर हो ।। २८ ।।

इति षष्ठदिवसगृहातबालकरक्षाविधिः ।। ६ ।।

सप्तमेदिवसेनाम्नाहिंसिकाक्रमतेशिशुम् ।। तच्चेष्टा जृभणंश्वासोमुष्टिबंधस्तथैवच ।। २९ ।। मेषशृंगीवचारोध्रंहरितालं मनःशिला ।। एतत्तरुचिरंपिष्ट्वाततोबालंप्रलेपयेत् ।। ३० ।। बलिंदद्यात्तुप्राग्रीत्यात-तोमुंचतिसाग्रही ।। मंत्रस्नानादिकंसर्वप्रथमोक्तक्रमेणतु ।। ३१ ।। इति सप्तमदिवसगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ७ ।। अष्टमेदिवसेनाम्नाभीषणी-क्रमतेशिशुम् ।। कासतेश्वसतेचैवगात्रंसंकोचतेभृशम् ।। ३२ ।। अपा-मार्गमुशीरंचपिप्पलीचित्रकं तथा ।। अजामूत्रेणसंपिष्यततोबालंप्रलेपयेत् ।। ३३ ।। गोशृंगनखकेशैस्तुधूपयेद्बालकंततः ।। मंत्रस्नानादिकंसर्वप्रथमो-क्तक्रमेणवै ।। ३४ ।। इत्यष्टमदिनगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ८ ।। नवमेदिवसंबालंमेषागृह्णातिवैशिशुम् ।। तच्चेष्टात्रासनोद्वेगःस्वमुष्टिद्वय-खादनम् ।। ३५ ।। वचाचंदनकुष्ठोग्रासर्षपांस्तत्रलेपयेत् ।। नखवानर-रोमाभ्यांधूपनान्मुञ्चतिग्रही ।। ३७ ।।

इति नवमदिनगृहीतबालग्रहरक्षाविधिः ।। ९ ।।

सातवें दिन हिंसिकानाम देवी बालको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं–जंभाई आवे श्वास हो मूठी खोले नहीं स्तनपान करे नहीं ।। २९ ।। अब इसका उपाय कहते हैं । मेढासिंगी, वच, लोध, हरिताल मनसिल यह सब समान लेकर पानीसे बारीक पीसकर बालकके शरीरको लेपन करे ३० और बलिदान मंत्रजप स्नान कराना यह पहिले दिनकी माफिक सब कर्म करे बालक चंगा हो सिंहिका देवीका दोष दूर हो ।। ३१ ।। इति सप्तम दिवसगृहीतबालरक्षाविधिः ।। ७ ।। आठवें दिन भीषणी नाम देवी बालकको ग्रहण करती है इसके लक्षण कहते हैं–कास श्वास हो अंगको संकोच रखे ज्वर हो आंख खोले नहीं इन लक्षणोंसे भीषणी देवीका दोष जानना ।। ३२ ।। अब इसके उपाय कहते हैं–चिरचिरा खस पीपल चित्रक यह सब दवा समान लेकर बकरीके मूत्रमें पीसकर बालकके लेपन करे

॥ ३३ ॥ गौका सींग नख मनुष्यके बाल इसीका धूप बालकको देवे और मन्त्र जाप स्नान कराना बलिदान देना यह सब कर्म प्रथम दिनकी माफिक करे बालक चंगाहो भीषणी नाम देवीका दोष दूर हो ॥ ३४ ॥ इत्यष्टमदिवसगृहीतबालरक्षाविधि: ॥ ८ ॥ नववे दिन मेषा नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं ॥ प्रथम बालक चमक चमक पडे और अचैनी रहें अपने हाथ की मूठीको काट २ खाय इन लक्षणोंसे मेषा नाम देवीका दोष जानना ॥ ३३ ॥ इसका उपाय कहते हैं-वच चन्दन कूट राई ये सब दवा समान लेकर जलमें पीसकर बालकके शरीरको लेपन करे, नख बंदरके रोम इन्हींकी धूनी दे और बलिदानादिक सब कर्म पहले दिनके माफिक करे बालक चंगा हो मेषानाम देवीका दोष दूर हो ॥ ३६ ।

इति नवमदिनगृहीतबालकरक्षाविधि: ॥ ९ ॥

दशमेदिवसे नाम्नारोदनाक्रमते शिशुम् ॥ तच्चेष्टाकासनं चैव रोदनं मुष्टिबंधनम् ॥ ३७ ॥ कुष्ठोग्रासर्जसिद्धार्थैर्लिपेन्निंबेन धूपयेत् ॥ मत्स्यमांससुरायुक्तंनिशायां बलिमाहरेत् ॥ ३८ ॥ अपामार्गांकुरोशीर-चन्दनक्वाथवारिणा ॥ मंत्रमष्टशतंजप्त्वात्रिसंध्यंपरिषिंचयेत् ॥ ३९ ॥ एवं कृते तु सा देवी बालं मुंचति रोदना ॥ प्रथमोक्तप्रकारेणशेषमन्यच्च कारयेत् ॥ ४० ॥ इति दशमदिनग्रहगृहीतबालरक्षाविधि: ॥ १० ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे दिनग्रहीगृहीतबालरक्षाकथनं नाम सप्तम: पटल: ॥ ७ ॥

दशवें दिन रोदना नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं-खांसी हो रोवे बहुत चिल्ली मारे मूठी बँधी रखे स्तनपान नहीं करे ॥ ३७ ॥ इन लक्षणोंसे रोदना नाम देवीका दोष जनाना अब इसका उपाय कहते हैं। कूट वच, राई, राल यह सब दवाई लेकर पानीमें पीसकर बालकके शरीरको लेपन करे और नींबके पत्तोंकी धूनी दे और पहिले दिनके माफिक बलिदान संध्या समयमें देना चाहिये परंतु मत्स्यका मांस, मदिरा यह और बलिमें सामिल कर देना चाहिये ॥ ३८ ॥ ऊंगेके वृक्षके अंकुर, खस, लालचंदन, इन द्रव्योंका काथ बनाके फिर क्वाथ जलको एक सौ आठ बार मंत्रित करके त्रिकाल बालकको क्ष्व स्नान कराये ॥ ३९ ॥ और मंत्र जपादिक शेष कर्म पहिले दिनके माफिक करे ऐसे करनेसे रोदना देवीका दोष दूर हो बालक चंगा हो ॥ ४० ॥
इति दशमदिनगृहीतबालरक्षाविधि: ॥ १० ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषा टीकायां सप्तम: पटल: ॥ ३ ॥

अथ मासगृहीतस्यबालकस्यविमुक्तये ।। बलिं वक्ष्यामि सुखदं सर्वतंत्रेषु गोपितम् ।। १ ।। प्रथमे मासिगृह्णातिकुमारीनामयोगिनी ।। उद्वेगज्वरशोषादिचेष्टितंतत्रजायते ।। २ ।। नैर्ऋतींदिशमाश्रित्यसंध्याकाले बलिं हरेत् ।। नदीतटद्वयात्कृष्णमृदादेवीस्वरूपकम् ।। ३ ।। कृत्वापूजाप्रकर्तव्यापुष्पधूपादिभिस्ततः ।। वटकामुष्टिकापूपा अग्रभक्तं-गुडोदधि ।। ४ ।। चतुर्वर्णपताकाश्चप्रदीपाः पुष्पचंदनम् ।। अपराह्णे-ऽथवादद्यान्मंत्रेणानेनमंत्रवित् ।। ५ ।। ॐ नमोभगवते च रावणाय च बालकम् ।। मुंचयुगंवह्निजायामंत्रोविंशतिवर्णकः ।। ६ ।। इति प्रथम-मासग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। १ ।। द्वितीये मासिगृह्णाति बाल-कंमुकुटाग्रही ।। ग्रीवानिवृत्तिर्निष्पंदोवपुषः पीतशीतता ।। ७ ।। वक्र-संशोषणोद्गारारोचकानितदाश्रयम् ।। क्षीरान्नंकृशरापूपतिलतंडुलसंयु-तम् ।। ८ ।। कृष्णपुष्पांशुकालेपैस्तत्रमात्रेर्बलिहरेत् ।। कुसुंभलशुनंनिंबं-संचूर्ण्यधूपयोच्छिशुम् ।। ९ ।। इति द्वितीयमासे बालरक्षा ।। २ ।।

अब दिनरक्षा कहनेके बाद महीनोंमें गृहीत हुए बालकोंकी रक्षाके लिये बडे गुप्तसुखके देनेवाले बलिदानादिक प्रयोग कहते हैं ।। १ ।। पहिले महीनेमें कुमारी नाम योगिनी बालकको ग्रहण करती है, उसके लक्षण कहते हैं––प्रथम बालकके उद्वेग हो, ज्वरहो गात्र शेष हो रोवे बहुत स्तनपान करे नहीं इन लक्षणोंके कुमारीनाम देवीका दोष कहना ।। २ ।। अब इसका उपाय कहते हैं। नैर्ऋत्य दिशामें संध्याकालमेंबलि दे, नदीके दोनों किनारोंकी मिट्टी लाकर उसकी देवीकी मूर्ति बनाके एक बर्तनमें स्थापन करे ।। ३ ।। फूलधूप इसीसे पूजन करे, बडे मुठीये पूडे भात गुड दही चार रंगकी ४ ध्वजा ४ दीपक फूल चंदन यह सब वस्तु उसी पात्रमें मूर्तिके आगे रखकर फिर मंत्रका जाननेवाला मंत्रपढकर बलिको देवे ।। ४–५ ।। ! नभोगवते रावणाय बालकं मुञ्च मुञ्चस्वाहा इस मंत्रको २ बार पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके दे बालक निरोगहो ।। ६ ।। इति प्रथम-मासरक्षा ।। १ ।। दूसरे महीनेमें बालकके पीड़ा उत्पन्न होनेसे मुकुटा देवीका दोष जानना इसके लक्षण कहते हैं ग्रीव ढीली करदे अंग कंपे शरीर पीला हो और शीतल रहे ।। ७ ।। मुख सूखा रहे स्तन पीवे नहीं, डकार बहुत आवे, अब इसका उपाय कहते हैं, मिट्टीकी देवीकी मूर्ति बनाके एक पात्रमें रखकर फिर खीर खिचडी पूडे तिल चावल ।। ८ ।। काले फूल, काला वस्त्र काली कस्तूरीका घिसा हुआ चन्दन यह सब वस्य देवीके आगे धर निवेदन करे, फिर प्रथम लिखे हुए मंत्रको २१ बार पढकर ७ बार बालकपर वारके पूर्वदिशाकी तरफ बलिको धर

आये; संध्यासमयमें फिर कुसुभ लहसन नींबके पत्ते इन्हींका चूर्ण करके बालकको धूप दे बालक निरोग हो ।। ९ ।।

इति द्वितीयमासरक्षा ।। २ ।।

तृतीयेमासिगृह्णातिबालकंगोमुखीगृही ।। तच्चेष्टारोदनंनिद्राबहुमूत्रपुरीषकम् ।। १० ।। निमीलयति नेत्राणि गोगंधोमधुकं धवा ।। प्रियंगुतिलकुल्माषं चतुःपिंडयमोदकैः ।। ११ ।। जपाकुसुमसंयुक्तं मध्याह्नेबलिमाहरेत् ।। धूपयेत्तिलसिद्धार्थैस्ततोमुंचतिसाग्रही ।। १२ ।। इति तृतीयमासे बालरक्षा ।। ३ ।। चतुर्थेमासिगृह्णातिबालकंपिंगलाग्रही ।। पयःपानारुचिः श्वैत्यंभुजस्पंदास्यशोषणे ।। १३ ।। पूतिगन्धस्तुतत्रेष्टातत्रनास्तिप्रतिक्रिया ।। न मंत्रं नौषधंतत्रबलितत्रनकारयेत् ।। १४ ।। इति चतुर्थमासे बालरक्षा ।। ४ ।। पंचमे मासि गृह्णाति बालकंवडवाग्रही ।। तच्चेष्टाऽरोचकं कासोमुखशोषणरोदने ।। १५ ।। सीदंति सर्वगात्राणिविश्रांतोनपिबेत्पयः।।ओदनंपोलिकाशाकंमत्स्यमांसानिदापयेत् ।।१६।। भक्ष्याणिलप्सिकाचैवस्वस्तिकाः पद्मकं तथा ।। दक्षिणांदिशमाश्रित्यमध्याह्नेबलिमाहरेत् ।। १७ ।। इति पंचममासे बालरक्षा ।। ५ ।।

तीसरे महीनेमें गोमुखीनाम देवी बालकको ग्रहण करती है, उसके लक्षण कहते हैं, बालक बिलक-बिलक रोवे नींद बहुत आवे, बारबार मूत्र करे, बारबार दस्त आवे ।। १० ।। नेत्र बंद राखे, गौके समान गन्ध आवे, इसका उपाय लिखते हैं । महुवाके फूल, धायके फूल मेहंदीतिल, बाकले, पिंडी चूर्माकी ४ मोदक, जयाके फूल इन सब द्रव्योंको पात्रमें रखकर पूर्व कहा हुआ मंत्र २१ बार पढकर ७ बार बालकके, ऊपर वारके मध्याह्न समयमें जलके किनारे दक्षिण दिशामें धर आवे बालक चंगा हो तिल राई इन्हीं की बालकको धूप देवे तो गोमुखी देवीका दोष दूर हो ।। ११ ।। ।। १२ ।। इति तृतीयमासरक्षा ।। ३ ।। चौथे महीनेमें बालकको पीडा उत्पन्न हो उसको पिंगलादेवी ग्रहण करती है इसके लक्षण कहते हैं — स्तनपान नहीं करे शरीर सफेद हो जाय, भुजा फरके, मुख सूखा रहे ।। १३ ।। शरीरम दुर्गन्ध आवे, इन लक्षणोंसे पिंगलादेवीका दोष जानना । चतुर्थमासमें चिकित्सा मंत्र औषधी बलिदान यह वस्तु वैद्य नहीं करे ।। १४ ।। इति चतुर्थमास विचारः ।। ४ ।। पांचवे महीनेमें बालकको बडवादेवी ग्रहण करती है, उसके लक्षण कहतें हैं–प्रथम अरुचि हो, खांसी हो, मुख सूखा रहे, रोवे बहुत ।। १५ ।। सब शरीरमें तकलीफ रहे, श्रमयुक्त रहे, स्तन पान नहीं करे, अब इसका उपाय कहते हैं, भात पूर्णपोली, शाक, मच्छीका मांस, लड्डू; लपसी आटेके दीवे ५

ध्वजा ५ कमलके सफेदफूल, मिट्ठीकीदेवीकी मूर्ति बनाकर पात्रमें स्थापन करके यह वस्तु उसके आगे रख दे पूर्वकथितमंत्र २१ बार पढकर ७ बार बालकके ऊपर वारके मध्याह्नसमयमें दक्षिण दिशामें बलि धर आये, बालक चंगा हो वडवादेवीका दोष दूर हो ॥ १६ ॥ १७ ॥ इति पंचम मासबालरक्षा ॥ ५ ।

षष्ठेमासितुगृह्णातिपद्मानामग्रहोशिशुम् ॥ तच्चेष्टारोदनंशूलंस्वरभ्रंशस्तथैवच ॥ १८ ॥ शिखीकुक्कुटमेषाणांमांसंमाषोदनंसुरा ॥ कुलित्थंचेतिसंप्रोक्तबलिनामुंचतिग्रही ॥ १९ ॥ इति षष्ठमासेबालरक्षा ॥ ६ ॥ सप्तमेमासिगृह्णातिबालकंपूतनाग्रही ॥ क्षीरंपिबति विसृष्ट्वाकृशोरोदतिर्छर्दिवान् ॥ २० ॥ कृशराचौदनंमांसंमत्स्यंक्षीरंसुरासवः ॥ कुल्माषास्तिलचूर्णं चगन्धपुष्पाणि चैवहि ॥ २१ ॥ पूर्वांदिशंसमाश्रित्यमध्याह्नेबलिमाहरेत् ॥ अन्यत्सर्वं प्रकर्तव्यं पूर्वोक्तंतत्क्रमेणवै ॥ २२ ॥ इति सप्तममासे बालरक्षा ॥ ७ ॥ अष्टमेमासिगृह्णातिबालकंचार्ऽजिकाग्रही ॥ गात्रभंगो ज्वरोक्षिरुक्प्रलापश्छर्दिरेव च ॥ २३ ॥ उत्तरांदिशमाश्रित्यबलिंतस्यैप्रदापयेत ॥ प्रथमोक्तप्रकारेणशेषमन्यत्समापयेत ॥ २४ ॥ इतिषष्ठमासे बालरक्षा ॥ ६ ॥

छठे महीनेमें पद्मानाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं। प्रथम रोवे बहुत शूल हो गला बैठ जाये लार मुखसे बहुत पड़े ॥ १८ ॥ अब इसका उपाय लिखते हैं, मयूरका मांस, मुर्गेका मांस, मेढेकामांस, उडदके छिलके भात दारुकुलथी यह सब वस्तु एक पात्रमें देवीकी मूर्तिके आगे रखदे मंत्रजप स्नानविधि बलिदानविधि यह शेष कर्म प्रथम मासके क्रमसे करे ॥ १९ ॥ इति षष्ठमासरक्षा ॥ ६ ॥ सातवें महीनेमें पूतनामदेवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं ढीलापनसे दूधपान करे स्तनपान समयमें मुखसे दुग्ध गिरे शरीर कृश हो जाये दिन २ प्रति सूखे रोवे बहुत छर्दि करे ॥ २० ॥ अब इसका उपाय कहते हैं, जलके किनारेकी मिट्टी लाकर एक मूर्ति बनाकर पात्रमें रखकर उसके आगे खिचडी भात, मच्छीका मांस, दूध, मदिरा, आसव, बाकले, तिलकुट, सुगन्धके फूल सब वस्तु उसी पात्रमें रखदे ॥ २१ ॥ पूर्व मंत्रको २१ बार जपकर ७ वार बालकपर वारके मध्याह्न समयमें पूर्वदिशाकी तरफ धर आये और सब विधान प्रथम मासकी रीतिके अनुसार करने चाहिये ॥ २२ ॥ इति सप्तममासबालरक्षा ॥ ७ ॥ आठवें महीनेमें अजिका नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं, सर्व शरीरमें हडफोड हो ज्वर हो नेत्रमें पीडा हो प्रलाप करे छर्दि करे ॥ २३ ॥ इसका उपाय प्रथम मासके क्रमसे। सब करना चाहिये,

परन्तु बलिदान उत्तरदिशामें देना चाहिये और मंत्रजापस्नानादि कर्म सब प्रथम मासके अनुसार करने चाहिये ॥ २४ ॥

इत्यष्टममासबालरक्षा ॥ ८ ॥

नवमेमासिगृह्णातिबालकंकुंभकर्णिका ॥ तच्चेष्टाऽरोचकंच्छर्दिर्ज्वरःपातालगन्धता ॥ २५ ॥ कुल्माषपललक्षीरमत्स्यमांसकृतेनच ॥ ऐशान्यांदिशिमध्याह्नेबलिनामुंचतिग्रही ॥ २६ ॥ इति नवममासेबालरक्षा ॥ ९ ॥ दशमोमासिगृह्णातिबालकंतापसीग्रही ॥ तच्चेष्टागात्रविक्षेपःक्षीरद्वेषोऽक्षिमीलनम् ॥ २७ ॥ पीतंरक्तंतथासूपंमत्स्यमांससुरासवम् ॥ कुल्माषंतिलपिष्टंचगंधपुष्पाणिचैवहि ॥ २८ ॥ स्वस्तिकाः षाष्टिकंभक्तंदिश्युदीच्यांसमाहरेत् ॥ मध्याह्नसमयेनूनं ततोमुंचतिसाग्रही ॥ २९ ॥ इति दशममासेबालरक्षा ॥ १० ॥ मासिचैकादशेनाम्नागृह्णातिसुग्रही शिशुम् ॥ तयागृहीतमात्रस्तुसस्वस्थोनप्रजायते ॥ ३० ॥ नमंत्रंनौषधंतयस्बलिंचापिनदापयेत् ॥ क्रियतेचेद्वलिस्तत्रप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ ३१ ॥ इत्येकादशमासे बालरक्षा ॥ ११ ॥ द्वादशेमासिगृह्णातिबालकंबालिकाग्रही ॥ तच्चेष्टारोदनंछर्दिःश्वासस्तृष्णापुनःपुनः ॥ ३२ ॥ दध्यन्नतिलकुल्माषमोदकान्नैर्बलिहरेत् ॥ मध्याह्नसमयेप्राच्यांततोमुंचतिसाग्रही ॥ ३३ ॥ क्षीरवृक्षकषायेणस्नापयेत्तत्प्रशांतये ॥ प्रथमोक्तप्रकारेण शेषमन्यत्समापयेत् ॥ ३४ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतन्त्रे मासगृहीतबालरक्षा नामाष्टमः पटलः॥८॥

नौवें महीनेमें कुम्भकर्णिका देवी बालकको ग्रहण करती है। उसके लक्षण कहते हैं, प्रथम स्तनपानमें अरुचि हो; ज्वर हो, छर्दि हो, और जमीन खोदते समय जैसी सुगन्ध आती है वैसा बालकके अङ्गमें गंध आवे आंख मीची रक्खे ॥ २५ ॥ अब इसका उपाय कहते हैं, बालकके मांस दुग्ध मत्स्यमांस इन द्रव्योंसहित प्रथम मासकी बलिदे, परंतु मध्याह्न समयमें ऐसान दिशामें दे और मन्त्र जापादिक सब कर्म प्रथम मासकी रीति माफिक करे बालक चंगा हो कुम्भकर्णिका देवीका दोष दूर हो ॥ २६ ॥ इति नवममास बालरक्षा ॥ ९ ॥ दसवें महीनेमें तापसी नामदेवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं हाथ पैर दे दे मारे, स्तनपीवे नहीं, नेत्र मीचे रक्खे, पेट बन्द रहे ॥ २७ ॥ अब इसका उपाय कहते हैं, चणाकी दाल; मसूरकी दाल मछलीका मांस, मदिरा बाकले, तिलकुट, सुगंधके फूल ॥ २८ ॥ आटेके दीवे ५ सांठी चावलोंका भात यह सब वस्तु एक पात्रमें मिट्टीकीदेवीके आगे रखके मध्याह्न समयमें उत्तर दिशाकी तरफ बलिदान दे और

मंत्र जाप स्नानधूप इत्यादि कर्म प्रथम मासके अनुसार करे बालक चंगा हो तापसी देवीका दोष दूर हो ।। २९ ।। इति दशममासबालरक्षा ।। १० ।। ग्यारहवें महीनेमें सुग्रहीनाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसका ग्रहण किया बालक अच्छा नहीं होता है ।। ३० ।। न तो उस बालककी औषधी है न मंत्र है न बलि है कदाचित् बलिदान देनाही हो तो प्रथम मासके क्रमसे करदे ।। ३१ ।। इत्येकादशमासबालरक्षा ।। ११ ।। बारहवें महीनेमें बालिका नाम देवी ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं, रोवे बहुत, छर्दि करे, श्वास हो, प्यास बार बार लगे ।। ३२ ।। इसका उपाय लिखते हैं–दही, चावल, पकेतिल, बकले लड्डू, यह सब वस्तु मिट्टीकी देवीकी मूर्तिके आगे पात्रमें रखके मध्याह्न समयमें पूर्वदिशामेंधर आवे ।।३३।। दूधवाले वृक्षोंके छिलके उबालके बालकको स्नान कराये और बाकी सब मन्त्रजपादि कर्म प्रथम मासके माफिक करे बालक चंगा हो देवीका दोष दूर हो ।।३४।।

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबाललतंत्रभाषाटीकायामष्टमः पटलः ।। ८ ।।

अथवर्षेगृहीतस्यबालकस्यविमुक्तये ।। बलिंवक्ष्यामिसुगमं येन संपद्यते सुखम् ।। १ ।। प्रथमे वत्सरे बालंग्रहीगृह्णातिनंदिनी ।। अरोचकाक्षिविक्षेपगात्रदाहप्ररोदनम् ।। २ ।। पतनं च सदाभूमौ चेष्टितंतत्रलक्षयेत् ।। गुडान्नं दधिकुल्माषपोलिकामत्स्यकासवम् ।।३।। तिलचूर्णामिषेचैवतिलतैलेन दीपकम् ।। पूर्वादिशंसमाश्रित्यत्रिरात्रं बलिमाहरेत् ।।४।।

केशगोखुरगोदन्तैर्बालकं धूपयेत्ततः ।
स्नापयेत्पंचगव्येनतदासामुंचतिग्रही ।। ५ ।।

इति प्रथमवर्षे बालरक्षा ।। १ ।।

महीनेकी रक्षाविधि कहनेके बाद वर्षमें गृहीत हुए बालकके छुटानेके लिये सुगम उपाय कहते हैं जिससे बालक को सुख प्राप्ति हो ।। १।। पहले वर्षके विषय नंदिनीनामदेवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं, अरुचि, हो नेत्र बंद रक्खे, शरीरमें दाह हो, जलाकरे, रोवे बहुत ।। २ ।। सदा पृथ्वीमें पडा रहे अर्थात् शय्या गोदीमें नहीं ठहरे ऐसे लक्षण देखकर नंदिणी नाम देवीका दोष कहना। अब इसका उपाय कहते हैं—गुड़के मालपूए, दही, उडदके छिलके, पूर्णपोली मदिरा ।। ३ ।। तिलकुट, मांस, तिलोंके तेलके दीपक ५, ध्वजा पंचरंगकी ५ यह सब वस्तु एक पात्रम रखकर ॐ नमो भगवते रावणाय बालक मुंच मुंच स्वाहा, इस मंत्रको २१ बार पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशामें धर आवे तीन रात्रि पर्यन्त बलिदान दे ।। ४ ।। पीछे मनुष्यके शिरके बाल, गौका खुर गौका दांत इन्हीं की धूप बालकको दे पश्चात् पंचगव्यसे बालकको स्नान

करायें फिर ब्राह्मणोंको भोजन करायें ऐसे करनेसे नंदिनी देवी बालकको छोड़ देती है बालक चंगा होता है ।। ५ ।। इति प्रथम वर्षबालरक्षा ।। १ ।।

द्वितीयेवत्सरेबालंग्रहीगृह्णातिरोदिनी ।। रक्तमूत्रं ज्वराध्मानंपद्मकेशरवर्णता ।। ६ ।। स्फुरतेदक्षिणंहस्तंरोदनं च पुनः पुनः ।। तिलपूपककुल्माषगुडान्नदधिमोदकैः ।। ७ ।। सफलं सप्रतिच्छाद्य प्राच्यां दिशि बलिंहरेत् ।। धूपयेत्सर्पनिर्मोकराजीभ्यांमुंचति ग्रही ।।८।। इति द्वितीयवर्षे बालकरक्षा ।। २ ।। तृतीये वत्सरे बालं गृह्णाति धनदाग्रही ।। अवीक्षणमनाहारंज्वरः शोषांगसादने ।। ९ ।। स्फुरणं वामपादस्यच्छर्दनंतत्रचेष्टितम् ।। दधिमांससुरामत्स्यसप्तान्नतिलपिष्टकैः ।।१०।। प्रतिमयाफलैर्दीपैःसहोदीच्यांबलिं हरेत् ।। पिच्छैर्मयूरसंभूतैर्धूपितोमुंचतिग्रही ।।११।। इतितृतीयवर्षे बालरक्षा ।।३।। चतुर्थे वत्सरे बालं ग्रहीगृह्णातिचंचला ।। चेष्टितं तत्र विज्ञेयं ज्वरःश्वासांगसादने ।।१२।। तिलकृष्णान्नवासोभिःसार्द्धं तत्र बलिंहरेत् ।। मेषशृंगस्यधूपेन ततोमुंचतिसाग्रही ।।१३।।

इति चतुर्थवर्षे बालरक्षा ।। ४ ।।

दूसरे वर्षमें रोदिनी नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं–लाल पेशाब आये ज्वर हो अफरा हो कमलकी केशरके माफिक शरीरका वर्ण हो जाये ।। ६ ।। दहना हाथ फेरके बार बार रोये अब इसका उपाय कहते हैं–तिल, पूडे, बाकले, गुडका, भात, दही, लड्डू ।। ७ ।। फल किसी तरह का यह सब वस्तु एक पात्रमें रखकर ऊपर लाल कपडा ढककर २१ बार मंत्र पढकर ७ बार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशामें बलि धर आये और सांपकी कांचली राई इन्हींकी धूप बालकको दे और सब कर्म पहिले दर्पके माफिक करे बालक चंगा हो रोदिनी देवीका दोष दूर हो ।। ८ ।। इति द्वितीयवर्षबालरक्षा ।। २ ।। तीसरे वर्षमें धनदानाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं। समीप नहीं देखे, भोजन नहीं करे, ज्वर हो, कंठ शोष हो शरीरमें तकलीफ हो ।। ९ ।। वाम पैर फरके छर्दि करे इन लक्षणों से धनदादेवीका दोष जानिये इसका उपाय कहते हैं–दही मांस, मदिरा, मच्छी सातनाज तिलकुट ।। १० ।। मिट्टीकी मूर्ति फल दीपक ५, ध्वजा ५, यह सब वस्तु पात्रमें रखकर २१ बार मंत्र पढकर ७ बार बालकपर वारके उत्तर दिशाकी तरफ बलि धर आवे और मोरके पंखोंकी धूप देवे और कर्म प्रथम वर्षके माफिक करे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ।। ।। ११ ।। इति तृतीयवर्षे बालकरक्षा ।। ३ ।। चौथे वर्षमें चंचलादेवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं ज्वर हो, श्वास हो, अंग भडके, अचैनी रहै

आंख भारी रहे, रोवे बहुत ॥ १२ ॥ इसका उपाय कहते हैं– तिलकाले गुड पूडे, चावल, उडद पोली, दीप ५, ध्वजा ५, राई, सिरस, मिट्टीकी पिंडी यह सर्व वस्तु एक पात्रमें धरकर काले कपडेसे ढककर बलि पूर्व दिशामें धर आये बलि ३ दिन तक करे मेंढेके सींगकी बालकको धूप दे और अन्य कर्म प्रथम वर्षके माफिक करे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ॥ १३ ॥

इति चतुर्थवर्षे बालरक्षा ॥ ४ ॥

पंचमेवत्सरेबालंग्रहीगृह्णातिनर्तकी ॥ उद्वेजनंमुहुर्मूत्रंगात्रस्फुरणसादनम् ॥ १४ ॥ मुखशोषणवैवर्ण्यं चेष्टितंतत्रलक्षयेत् ॥ मत्स्यमूलकमांसानिपक्वान्नंकृशरापयः ॥ १५ ॥ पायसंचसुरामद्यंतिलंचोक्तंबलिं तथा ॥ सफलंसप्रतिच्छन्नंसप्तरात्रंबलिंहरेत् ॥ १६ ॥ राजिकाकेशगोदंतलशुनैरपिधूपयेत् ॥ त्रिसंध्यंसंनिधानेनततोमुंचतिसाग्रही ॥ १७ ॥ इतिपंचमवर्षे बालकरक्षा ॥ ५ ॥ षष्ठेचवत्सरेबालं गृह्णातियमुनाग्रही ॥ तच्चेष्टारोदनोद्गारजृंभाषोषांगदाहकम् ॥ १८ ॥ मत्स्यमांसंसकृशरंपोलिकापायसंदधि ॥ सुरामोदकसंमिश्रंप्रक्षिपेच्चत्वरेबलिम् ॥१९॥ गोरोमखुरशृंगैश्चधूपयंन्मुंचतिग्रही ॥ स्नानं पंचदलैः कार्यंसुखंभवतिनान्यथा ॥ २० ॥

इति षष्ठवर्षे बालरक्षा ॥ ६ ॥

पाचवें वर्षमें नर्तकीनाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं–कूल्हे बहुत बार बार मूत्र करे गात्र फरके गात्रमें पीडा रहे अर्थात् अचैनी रहे ॥ १४ ॥ मुख सुखा रहे शरीरका वर्ण विवर्ण हो जावे यह लक्षण देखकर नर्तकी देवीका दोष जानना । अब इसका उपाय लिखते हैं, मिट्टीकी नर्तकी देवीकी मूर्ति बनाकर एक पात्रमें रखकर उसके आगे यह वस्तु रक्खे, । मच्छी मूली, मांस, पक्वान्न, खिचडी, दूध ॥ १५ ॥ खीर वारुणी मदिरा तिल और प्रथम बलिमें लिखी हुई वस्तु, आटेके दीये ५, ध्वजा पंचरंगी ५ शर्बतकी कुल्हिया, पूडे बाकले यह सब वस्तु उसी पात्रमें रक्खे फल भी कुछ रख देने चाहिये और लाल कपडे से ढककर २१ बार मंत्र पढकर ७ बार बाल के ऊपर वारके पश्चिमदिशाकी तरफ धर आये यह उतारा दिन ७ ताईं करे ॥ १६ ॥ राई, मनुष्यके शिरके बाल गौके दांत, लहसन इन्हींकी धूप बालकको ३२ वक्त दिया करे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ॥ १७ ॥ इति पञ्चमवर्षेबालरक्षा ॥ ५ ॥ छठवें वर्षमें यमुना देवी बालकको ग्रहण करती है, अब उसका लक्षण कहते हैं–रोवे, डकार बहुत आवे, जंभाई आवें, शरीर सूखता जाय, पेट बंध रहे, अंगमें दाह रहे ॥ १८ ॥ अब इसका उपाय लिखते हैं–मिट्टीकी या आटेकी यमुना देवीकी मूर्त्ति बनाकर एक पात्रमें

रखकर उसके आगे मच्छीका मांस, खिचडी, पूरणपोली, खीर, दही, मदिरा, लड्डू पांच दीपक ५ ध्वजा यह सब रखदे फिर २१ बार मंत्रको पढकर ७ बार बालकके ऊपर वारके चौराहेमें बलि सन्ध्यासमय धर आये ऐसे ३ दिनतक करे ।। १९ ।। गौके रोम खुर सींग इनकी बालकको धूपदे और पांच वृक्षोंके पत्तों से बालकको स्नान कराये ब्राह्मण भोजन कराये बालक चंगा हो यमुना देवीका दोष दूर हो ।। २० ।। इति षष्ठवर्षे बालरक्षा ।। ६ ।।

सप्तमेवत्सरेऽनंताग्रहीगृह्णातिबालकम् ।। तयागृहीतमात्रेणत्वंधोभवतिबालकः ।। २१ ।। सीदंति सर्वगात्राणिमुखंचपरिशुष्यति ।। मूत्रंचस्रवतेनित्यमुद्वेगंच पुनःपुनः ।। २२ ।। पायसंकृशरान्नंचतिलपिष्टंसुरासवम् ।। पक्वान्नमत्स्यमांसानिदधिमूलंचकंदकम् ।। २३ ।। सिद्धार्थलशुनैधूंपतिलतैलेनदीपकम् ।। स्नापनंपंचगव्येनसप्तरात्रं बलिहरेत् ।। २४ ।। इति सप्तमवर्षेबालरक्षा ।। ७ ।। अष्टमेवत्सरेबालंगृह्णातिचकुमारिका ।। तयागृहीतमात्रस्तुज्वरेणपरिदह्यते ।। २५ ।। सीदंतिसर्वगात्राणिकंपयति पुनः पुनः ।। कृशरौदनंचैवगंधमाल्यंतथैवच ।।२६।। मेषशृंगस्यधूपोऽत्रपूर्वस्यांदिशिचाहरेत् ।। अयं सिद्धबलिः प्रोक्तो बालकानां सुखावहः ।।२७।।

इत्यष्टमवर्षे बालरक्षा ।। ८ ।।

सातवें वर्षमें अनन्ता नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसको ग्रहण करने ही से तत्काल बालक अन्धा हो जाता है ।। २१ ।। सर्वशरीरमें पीडा हो और दुबला हो जावे मुख सूखा रहे पेशाब बहुत आये, चित्तका उद्वेग रहे आलस्य हो अंग तोडे ।। २२ ।। अब उपाय लिखते हैं–चूनकी या मिट्टीकी देवीकी मूर्ति बनाकर, पात्रमें रक्खे उसके आगे खीर, खिचडी, भात, तिल, कूट, मदिरा, पक्वान्न मत्स्यमांस, दही, मूली, किसी तरहका कंद जौके आटेके ५ दीपक ५ ध्वजा यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखकर २१ बार मंत्र पढकर ७ बार बालक पर वारके पूर्वदिशाकी तरफ जलके किनारे धर आये ।। २३ ।। राई तथा लहसनकी बालकको धूपदे और बलिमें तिलोंके तेलका दीपक जलाना चाहिये और पंचगव्यसे बालकको स्नान कराये बलिविधान किये पीछे ब्राह्मण भोजन कराये ऐसे बलि विधान ७ दिन तक करना चाहिये बालक चंगा हो आनंतादेवीका दूषण दूर हो ।। २४ ।। इति सप्तमवर्षे बालरक्षा ।। ७ ।। आठवें वर्षमें कुमारिका नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसीसे ग्रहण हुए बालकके प्रथम ज्वर बहुत वेगसे होय ।। २५ ।। सर्व गात्रमें पीडा हो, कंपे, बार बार छर्दि करे, पेट बंद रहे यह लक्षण हों । अब इसका उपाय कहते हैं आटेकी या नदीके किनारेकी मिट्टीकी मूर्ति देवीकी बनाकर पात्रमें रखकर उसके आगे खिचडी, चावल, दही, सुगंधके फूल, पूडी, पापडी,

पूर्णपोली, पक्वान्न; ध्वजा ५ दीपक ५ यह सब वस्तु इसके आगे रखकर २१ बार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशामें बलि रख आये यह बलि विधान ३ दिन तक करना चाहिये ।। २६ ।। मेंढासींगीकी बालकको धूप देनी चाहिये पीछे स्नान और ब्रह्मभोज्य कराये बालक चंगा हो कुमारिदेवीका दोष दूर होय ।। २७ ।।

इत्यष्टमवर्षे बालरक्षा ।। ८ ।।

गृह्णातिनवमेवर्षेकलहंसाग्रहीशिशुम् ।। तयागृहीतमात्रेणस्याद्दाहोज्वरताकृशः ।। २८ ।। पोलिकापूपदध्यन्नैः पंचरात्रिर्बलिहरेत् ।। कुष्ठोग्रारा जिलशुनैर्लेपयेदपिधूपयेत् ।। २९ ।। स्नापयेन्निबक्वाथेन बालं मुंचति साग्रहो ।। इतिनवमवर्षेबालरक्षा ।। ९ ।। गृहणाति दशमेवर्षेदेवदूतीग्रहीशिशुम् ।। तच्चेष्टातत्रज्ञातव्यानर्त्तनंचप्रधावनम् ।। ३० ।। विबद्धंवमनंक्रीडाहसनंस्वगृहेक्षणम् ।। यामियामीतिवचनंनेत्ररोगोऽङ्गसादनम् ।। ३१ ।। सदापानासनश्रद्धाविधुरालापनंतथा ।। कोद्रवौदनकुल्माषापोलिकादधिमोदकम् ।।३२।।प्रणवंमुंचमुंचेतिवियोजयवियोजय।। आगच्छद्वितयंबालिकेस्वाहेतिप्रकीर्तितः ।। ३३ ।। रक्तान्नरक्तपुष्पैश्चत्रिरात्रंबलिमाहरेत् ।। तिलैश्चजुहुयात्पश्चादष्टोत्तरशतंसुधीः ।। ३४ ।।

इति दशमवर्षेबालरक्षा ।। १० ।।

नौवें वर्षमें कलहंसा नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके ग्रहण करनेसे प्रथम बालकके दाह हो ज्वर हो दुबला होजाये अंगमें पीडा हो दस्त मूत्र वारं वार करे छर्दी करे हाथ पैर भडके ।। २८ ।। अब इसका उपाय कहते हैं– पूर्णपोली, पूडे, दही भात, चुरमाकी पींडी, खीर, सुहाली, दीये ५, ध्वजा ५ यह सब वस्तु एक पात्रमें मिट्टीकी देवीके आगे रखकर २१ बार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपरवारके पश्चिमदिशामें जलके किनारे धर आये; पांच दिनतक यह बलिदान करना चाहिये और कूट, वच, राई, लहसन इनसे बालकके शरीरको लेपन करे और इन्हींकी धूप देनी चाहिये ।। २९ ।। नींबके पत्तोंके क्वाथसे बालकको स्नान कराये बालक चंगा हो कलहंसा देवीका दोष शांत हो ।।इति नवमवर्षे बालरक्षा ।। ९ ।। दशवें वर्षमें देवदूती नाम देवीबालकको ग्रहण करती है, उसके लक्षण कहते हैं बालक नाचे दौडे ।। ३० ।। पेट बंद हो वमन करे अनेक तरहकी क्रीडा करे, हंसे, अपने घरको देखा करे। जाऊं जाऊं ऐसा वचन कहे, नेत्रोंमें रोग हो, अंगमें पीडा हो ।। ३१ ।। सदा खान पानमें श्रद्धा रक्खे विकलताके वचन कहे ज्वर हो। अब इसका उपाय कहते हैं, काली मिट्टीकी मूर्ति देवीकी बनाकर पात्रमें रखकर कूट, अन्न, भात, बाकले, पूर्णपोली, दही, लड्डू, मसूरकी दाल

लाल, फूल, दीपक ५, ध्वजा ५, तिलकुट यह सब वस्तु उसके आगे रक्खे ।। ३२ ।। फिर ॐ मुंच मुंच वियोजय वियोजय आगच्छ आगच्छ बालिके स्वाहा ।। इस मंत्रको २१ वार पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशामें जलके किनारे धर आये यह विधान ३ दिन करे । चौथे दिन बालकको स्नान कराये । तिलोंका हवन कराये १०८ आहुति देनी चाहिये बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ।। ३३।३४ ।।

इति दशमवर्षे बालकरक्षा ।। १० ।।

वर्षएकादशेबालंग्रहीगृह्णातिकालिका ।। तयागृहीतमात्रेणज्वरः स्यात्प्रथमंततः ।। ३५ ।। कासश्वासाक्षिरोगश्चकाकरावोङ्गसादनम् ।। पोलिकागुडकुल्माषशष्कुलीशाकमोदकैः ।। ३६ ।। पक्वमत्स्यामिषक्षीरैः संयुक्तबलिमाहरेत् । त्रिरात्रंनिंबसिद्धार्थैर्धूपयेन्मुंचतिग्रही ।। ३७ ।। अनुक्तमपियत्कर्मप्रथमोक्तक्रमेणवै ।। सर्वविधिविदाकार्यंतेनसंपद्यते सुखम् ।। ३८ ।। इत्येकादशवर्षेबालरक्षा ।। ११ ।। द्वादशेवत्सरेबालंगृह्णातिवायसीग्रही ।। तच्चेष्टावक्रसंशोषोज्वरोजृंभाङ्गसादनम् ।। ३९ ।। रक्तद्रव्यैर्बलितत्रहरेन्मुंचतिसाग्रही ।। स्नापनंपंचगव्येन धूपोनिंबेनसर्षपैः ।। ४० ।। इति द्वादशवर्षेबालरक्षा ।। १२ ।। वर्षेत्रयोदशेबालंग्रहीगृह्णातियक्षिणी ।। तच्चेष्टयाचदृग्रोगंज्वररोदनहासनम् ।। ४१ ।। शाल्योदनसुरामांसमत्स्यकुल्माषपायसैः ।। दद्यात्सक्तुशरं प्रोक्तैर्मध्याह्नेबलिमाहरेत् ।। ४२ ।।

इति त्रयोदशवर्षे बालरक्षा ।। १३ ।।

ग्यारहवें वर्षमें कालिकानामदेवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं–प्रथम बालकको ज्वर हो ।।३५ ।। खांसी हो, श्वास हो, नेत्र दूखे, कां कां शब्द करे रोवे बहुत; अंगमें पीडा हो अर्थात् अंगको बहुत तोडे । अब इसका उपाय लिखते हैं–पूर्णपोली, गुड, उडदके छिलके, कचोरी, किसी रकमका शाक, लड्डू ।। ३६।। पूडी, लपसी, पका हुआ मच्छीका मांस, दूध, चावल दीपक ५ ध्वजा ५ यह सब वस्तु एक पात्रमें रखकर २१ वार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशाकी तरफ वृक्षके तले धर आवे और नींबके पत्ते राई इनकी बालकको धूप देनी चाहिये यह बलि विधान तीन दिन तक करना चाहिये ।। ३ ८ ।। और तीन दिन पीछे स्नानकर्म ब्रह्मभोज पूर्वोक्त प्रकारसे सब कर्म कराये, कालिका देवीका दोष शांत हो बालक चंगा हो ।। ३७ ।। इत्येकादशवर्शे बालरक्षा ।। ११ ।। बारहवें वर्षमें वायसीनाम देवी बालकको ग्रहण करती है, जिसके लक्षण कहते हैं, बालक का मुख सूख रहे ज्वर हो जँभाई बहुत आवें, अंगमें पीडा हो ।।३९।। अब

इसका उपाय लिखते हैं, नदीके किनारेकी मिट्टी लाकर देवीकी मूर्ति बनाकर एक पात्रमें रखकर उसके आगे गुड, पूडी, लपसी, बालले, तिलकुट, लड्डू, राखकी पिंडी, सिरसम, राई, दीये ५ ध्वजा ५ यह सब वस्तु धरकर २१ बार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके दक्षिण दिशामें वृक्षतले संध्यासमय धर आये तीन दिन पर्यन्त बलि देये; चौथे दिन पंचगव्यसे बालकको स्नान कराये नींबके पत्ते सिरसम इन्हीकी धूप बालकको देनी चाहिये ब्राह्मणोंको भोजन कराये वायसी देवीका दोष शांत हो बालक चंगा हो ॥ ४० ॥ इति द्वादशवर्षे बालरक्षा ॥ १२ ॥ तेरहवें वर्षमें यक्षिणी नाम देवी बालकको ग्रहण करती है, अब उसके लक्षण कहते हैं, प्रथम बालकके हृद्रोग हो, ज्वर हो, रोवे बहुत, किसी बखत हंसने, लगे ॥ ४१ ॥ अब इसका उपाय लिखते हैं, आटेकी मूर्ति देवीकी बनाकर एक पात्रमें धरकर आगे भात पका हुआ' शर्बतकी कुल्हिया, मदिरा, मांस, मच्छी, बाकली, खीर, खिचडी, धूप, दीपक ५, ध्वजा ५, फूल यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखकर २१ बार मंत्र पढकर ७ बार बालकके ऊपर वारके मध्याह्नसमय पश्चिम-दिशामें वृक्षके तले धर आये ३ दिन तक बलि करे पीछे बालकको स्नान ब्रह्मभोज पूर्वोक्तक्रमसे कराये बालक चंगा हो यक्षिणीदेवीका दोष दूर हो ॥ ४२ ॥

इति त्रयोदशवर्षे बालरक्षा ॥ १३ ॥

वर्षेचतुर्दशेबालंस्वच्छंदानामतोग्रही ॥ गृह्णातिचेत्तुतत्रस्याच्छोणितस्रवणंसदा ॥ ४३ ॥ शूलंचनाभिदेशे स्यात्तत्रनास्तिप्रतिक्रिया ॥ श्रमस्तुव्यर्थतांयातितस्मात्तत्रनकारयेत् ॥ ४४ ॥ इति चतुर्दशवर्षेबालरक्षा ॥ १४ ॥ अथपंचदशेवर्षे गृह्णीते बालकं कपी ॥ तयागृहीतमात्रस्तुभूम्यांपततिनिःस्वनः ॥ ४५ ॥ ज्वरश्चजायतेतीव्रोनिद्रात्यंतंप्रजायते ॥ पायसंकृशरामांसंकुल्माषंचसुरासवम् ॥ ४६ ॥ पूपकाःपोलिकाश्चैवपुष्पाणिपांडुराणिच ॥ स्नापनं पंचगव्येनधूपनंवत्सकत्वचा ॥ ४७ ॥ दिन त्रयंप्रदोषेतुर्बलिदद्याद्विचक्षणः ॥ सुखंभवतितेनाशुनात्रकार्याविचारणा ॥ ४८ ॥ इतिपंचदशवर्षेबालरक्षा ॥ १५ ॥

चौदहवें वर्षमें स्वच्छंदा नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं—प्रथम बालकके मुखसे नासिकासे खून पडे, ज्वर हो ॥ ४३ ॥ नाभिमें शूल हो, तृषा लगे, वमन करे इस वर्षमें चिकित्सा श्रम और बलिविधानका परिश्रम सर्व निष्फल हो जाता है इसलिये कुछ करना नहीं चाहिये अग्रे दैवेच्छा बलीयसीति ॥ ४४ ॥ इति चतुर्दशवर्षे बालरक्षा ॥ १४ ॥ पंद्रहवें वर्षमें बालकको कपीनाम देवी ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं—बालक पृथ्वीमें सोनेकी बहुत इच्छा करे, कूल्हे बहुत या बिलकुल कूल्हे नहीं ॥ ४५ ॥ ज्वर बड़ा तेज हो निद्रा

बहुत आवे, वमन हो, अंग कंपे चित्तभ्रम हो। अब इसका उपाय लिखते हैं नदीके पूर्व पश्चिमके तरफकी मिट्टी लाकर देवीकी मूर्ति बनाकर एक पात्रमें रखकर उसके आगे एक सराई खीरकी रक्खे खिचडी, मांस, बाकले, मदिरा, आसव ।। ४६ ।। पूडे, पूर्णपोली, सिरसम, सफेद फल, दीपक ५, ध्वजा ५ यह सब उसी पात्रमें रखकर २१ वार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके प्रदोषके वक्त वृक्षतले धर आये बालकको चौथे दिन पंचगव्यसे स्नान कराये कूडेकी छाल, दालचीनी इनकी बालकको धूप देये ।। ४७ ।। यह बलि विधान तीन दिनतक देनी चाहिये जिससे देवीका दोष शांत हो बालक चंगा हो ।। ४८ ।।

इतिपंचदशवर्षे बालरक्षा ।। १५ ।।

षोडशेवत्सरेबालंग्रहीगृह्णातिदुर्जया ।। तयार्छर्दिर्ज्वरः कंपोयास्यामीतिवचोवदेत् ।। ४९ ।। कुल्माषकृशरापूपतिलपिष्टान्नदीपकैः ।। दध्नासहबलिंदद्यात्प्राच्यांदिशिदिनत्रयम् ।। ५० ।। धूपयेद्गोनखशृंगलशुनैर्मुंचतिग्रही ।। स्नापयेत्पंचगव्येनतिलतोयेन बालकम् ।। ५१ ।। इति षोडशवर्षबालग्रहरक्षा ।। १६ ।।

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रेवर्षग्रहगृहीत बालरक्षाकथनं नाम नवमः पटलः ।। ९ ।।

सोलहवें वर्षमें दुर्जया नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं—प्रथम बालक वमन करे ज्वर हो शरीर कंपे नींद आये मुखसे जाऊं जाऊं ऐसा वचन कहे ।। ४८ ।। इसका उपाय लिखते हैं—बाकले, खिचडी, पूडे, तिलकुट कचोरी, दही, सीरापुरी, दीपक ५ ध्वजा ५ पांच रंगकी यह सब एक पात्रमें धरकर २१ वार पूर्वोक्त मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्व दिशामें वृक्षके तले संध्यासमय धर आये ऐसे तीन दिनतक यह बलिविधान करना चाहिये ।।४ ९ ।। ५० ।। चौथे दिन बालकको गौका खुर और सींगकी धूप देना चाहिये फिर पंचगव्यसे स्नान कराकर पीछे पानीमें तिल डालकर शुद्ध स्नान कराये ब्राह्मणोंको भोजन कराये, बालकको नवीन वस्त्र पहनावे देवीका दोष शान्त हो बालक चंगा हो ।। ५१ ।। इति षोडश वर्षबालरक्षा ।। १६ ।।

इति श्रीपंडित नंदकुमार वैद्यकृत बालतंत्र भाषाटीकायां नवमः पटलः ।। ९ ।।

दिनेमासेचवर्षे च बालशांतिं वदाम्यहम् ।। प्रथमे दिवसेमासेवर्षेयोर्गिनिमातृका ।। १ ।। पूतनानंदिनीनाम्नाबालकंक्रमतेयदा ।। तद्गृहीतस्यबालस्य ज्वरःस्यात्प्रथमंततः ।। २ ।। गात्रशोषस्तथास्वेदो नाहा-

रेच्छाभृशंभवेत् ।। छर्दिमूर्च्छाचकंपश्च तथादीनस्वरोभवेत् ।। ३ ।। विधानंतच्चवक्ष्यामि येनमुंचतिपूतना ।। नदीमृत्तिकयाकुर्याच्छोभनां पुत्तिकांततः ।। ४ ।। शुक्लौदनंशुक्लगंधंतथागंधानुलेपनम् ।। शुक्लपुष्पाणिवैपञ्चध्वजाःपंचप्रदीपकाः ।। ५ ।। स्वतिकाःपंचपूर्वाह्णेपूर्वस्यांदिशिसंयतः ।। बलिं दद्यादथो राजसर्षपोशीरमेव च ।। ६ ।। शिवनिर्माल्यमार्जारनृकेशानिंबपत्रकम् ।। गव्यंघृतंतथैतेनधपयेच्चैवबालकम् ।। ७ ।। एवं दिनत्रयंकृत्वाचतुर्थेशांतिवारिणा ।। स्नापयेद्बालकं पश्चाद्ब्राह्मणांश्चापिभिक्षुकान् ।। ८ ।। क्षीरेण भोजयेदेवंस्वस्थोभवतिबालकः ।। वक्ष्यमाणेन मंत्रेण अष्टोत्तरशतंजपेत् ।। ९ ।। शांतिवारितुतत्प्रोक्तं सर्वागमविशारदैः ।। पूजायांबलिदानेचस्नापनेमंत्रमुच्यते ।। १० ।। मन्त्रः ।। ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चस्कंदोवैश्रवणस्तथा ।। रक्षंतुत्वरितंबालंमुंचमुंचकुमारकम् ।। ११ ।।

इतिप्रथमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। १ ।।

अब दिवसमें मासमें वर्षमें ग्रहण हुए बालककी शांति कहते हैं ।। प्रथम दिवसमें प्रथम मासमें प्रथम वर्ष में बालकके कष्ट हो जाये तो उस बालकको नंदिनी नाम की देवी ग्रहण करती है उसके योगिनी मातृका पूतना यह पर्यायशब्द हैं अब उसके लक्षण कहते हैं प्रथम ज्वर हो ।। १ ।। २।। गात्र सूखे, पसीना आये, भोजनकी इच्छा बिलकुल होये नहीं, छर्दी करे, मूर्छा हो, शरीर कंपे, मन्दस्वर हो जाये ।। ३ ।। अब उसका उपाय कहते हैं जिससे पूतना उसको छोड दे । नदीके दोनों किनारोंकी मिट्टी लाकर सुंदर देवीकी मूर्ति बनाकर ।। ४ ।। एक पात्रमें रखकर उसके आगे सफेद भात कपूर लोहवान सफेद चन्दन सफेद फूल पचरंगकी ५ ध्वजा ५ दीपक ।। ५ ।। पांच चूनके सथिए पूडा सुहाली पांच रकमकी मिठाई यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखकर आगे लिखा मंत्र २१ बार पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके पहर भर दिन चढे पूर्वदिशामें मौन धारण करके बलि दे आये, पीछे राई, खस ।। ६।। आकके फूल, बिल्लीके बाल, मनुष्यके शिरके बाल, नींबके पत्ते; गौका घी इन द्रव्योंसे बालकको धूनी देनी चाहिये ।। ७ ।। ऐसे तीन दिन पर्यन्त कर्म करे चौथे दिन मंत्रसे मंत्रित जल करके बालकको स्नान कराये और ब्राह्मणोंको भिक्षुकोंको ।। ८ ।। खीरका भोजन कराये ऐसा करनेसे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो आगे कहा हुआ मन्त्र एकसौ आठ १०८ बार जपके जलको मंत्रित करे उसका शांतिवारि पंडित कहते हैं पूजामें बलिदानमें स्नान करानेमें इसी मन्त्र को पढना चाहिये सो कहते हैं ।।९।। ।।१०।। "ब्रह्मा

विणुश्च रुद्रश्च स्कंदो वैश्रवणस्तथा ।। रक्षंतु त्वरितं बाल मुंचमुंच कुमारकम्" अयं मंत्रः ।। ११ ।।

इतिप्रथमदिवसमासववर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। १ ।।

द्वितीयेदिवसेमासेहायनेचसुनंदनी ।। गृहणातिपूतनाबालंयोगिनीस्तनदाऽपिवा ।। १२ ।। ततो भवेज्ज्वरः पूर्वंसंकोचंहस्तपादयोः ।। दंतान्खादति नियतंनिमीलयतिचक्षुषी ।। १३ ।। आहारंचनगृह्णातिदिवारात्रं चारोदिति ।। अक्षिरोगंछर्दनंचभवेद्भ्रांतिः पुनःपुनः ।। कृशत्वंजायतेऽत्यंतंचिह्नमेतत्प्रकीर्तितम् ।। १४ ।। तंडुलप्रस्थपिष्टेनविनिर्माया थपुत्तिकाम् ।। अन्नंदशध्वजादीपाः स्वस्तिकाधावलौदनम् ।। १५ ।। प्रस्थप्रमाणपिष्टेनसिद्धापूपाश्चमत्स्यकाः ।। मांसंचेत्येतदखिलंपश्चिमायांदिशिक्षिपेत् ।। १६ ।। पश्चिमायां चसंध्यायामेवंदद्याद्दिनत्रयम् ।। धूपंमंत्रजपंस्नानंपूर्वोक्तेनक्रमेणवै ।। १७ ।। प्रणवोहृदयंचामुण्डायैविच्चेततःपरम् ।। ततो-ह्रांद्वितयं-ह्रींच-ह्रूं-ह्रूं दुष्टग्रहावदेत् ।। १८ ।। ततो गच्छन्त्वतःस्थानाद्रुद्राज्ञयाऽनलाङ्गना ।। सर्वकार्येषुमंत्रोऽयंसुखदःसमुदाहृतः ।। १९ ।।

दूसरे दिवसमें दूसरे महीनेमें दूसरे वर्षमें बालकके कष्ट हो उसको सुनन्दनानामकी पूतना ग्रहण करती है उसको योगिनी भी कहते हैं वह स्तनका नाश करनेवाली होती है ।। १२ ।। अब उसके लक्षण कहते हैं–प्रथम बालकके ज्वर हो, हाथ पैरको संकोच रक्खे दांतोंको बहुत चाबा करे नेत्रोंको मीचे नहीं ।। १३ ।। भोजन किसी तरहका नहीं करे, दिन रात्रि रोया करे, नेत्रमें रोग हो, वमन करे और भय वारंवार लगे शरीर दुबला बहुत हो जाये ।। १४ ।। अब इसका उपाय कहते हैं–सेर भर चावलके चूर्णकी मूर्ति बनाकर उसको मिट्टीके पात्रमें रखकर उसके आगे गेहूं दश ध्वजा १० दीपक और १० चूनके सथिए चावल पके हुए ।। १५ ।। सेर भर पूडे मच्छी मांस यह सम्पूर्ण वस्तु उसी पात्रमें रखकर ।। १६ ।। संध्यासमयमें २१ वार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके पश्चिम दिशाकी तरफ बलिदे आये ऐसे तीन रोज करना चाहिये धूप मंत्रका जप स्नान यह सब वस्तु पूर्वक्रमके अनुसार करना चाहिये ।। १७ ।। ॐ नमश्चामुंडायै विच्चे-ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रू ह्रू दुष्टग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा इसी को पढना चाहिये ।। १८ ।। ।। १९ ।।

इति द्वितीयदिवसमासवर्ष ग्रहण गृहीत बालरक्षाविधिः ।। २ ।।

तृतीयेदिवसेमासेवर्षेगृह्णातिपूतना ।। गात्रभंगः प्रलापश्चकंपोज्वरस्तथारुचिः ।। २० ।। निमीलनंनयनयोरोमांचोवमनंतथा ।। प्रस्थ-

प्रमाणपिष्टेनपुत्तिकांरचयेत्ततः ।। २१ ।। रक्तौदनंध्वजारक्तास्वस्तिकं रक्तमेवच ।। रक्तपुष्पंरक्तगंधंतथारक्तानुलेपनम् ।। २२ ।। पश्चिमायांचसंध्यायामुदीच्यांनिक्षिपेद्बलिम् ।। प्रथमोक्तप्रकारेणस्नानंमंत्रंसमाचरेत् ।। २३ ।। इतितृतीयदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ३ ।। चतुर्थेदिवसेमासेवर्षेगृह्णाति बालकम् ।। मुखमंडलिकानाम्नादेवीचाकाशयोगिनी ।। २४ ।। गात्रभंगोनतिर्मूर्ध्नोदौर्बल्यं चाक्षिमीलनम् ।। वैवर्ण्यंश्यामताश्वासः कासोरुचिरनिद्रिताम् ।। २५ ।। तिलपिष्टमयींकृत्वापुत्तिकांबिल्वकंटकैः ।। अष्टाङ्गेरेखयेच्छ्वेतपुष्पंशुक्लध्वजाऽर्जुनः ।। २६ ।। स्वस्तिकाः प्रस्थभक्तंचप्रस्थचूर्णस्यपूपकाः ।। त्रिसंध्यं पश्चिमायांतुबलिंदद्यात्प्रयत्नतः ।। अर्द्धप्रस्थमितास्तत्रपोलिकाः संप्रकीर्तिताः ।। २७ ।। गोश्रृङ्गलशुनंसर्पनिर्मोकोनिंबपत्रकम् ।। मनुष्यकेशमार्जाररोमाण्याज्यंचगोस्तथा ।। २८ ।। एतैश्चधूपयेद्बालं संध्यायांचदिनत्रये ।। मंत्रस्नानादिकंसर्वंप्रथमोक्तक्रमेणवै ।। २९ ।।

इति चतुर्थदिवसमासवर्ष ग्रहगृहीत बालरक्षाविधिः ।। ४ ।।

तीसरा दिवस तीसरा महीना तीसरा वर्ष इनके विषय बालकके कष्ट होने से उसको पूतना नाम की देवी ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं प्रथम गात्रभंग हो, प्रलाप हो, कंप हो, ज्वर हो, अरुचि रहे ।। २० ।। नेत्र मीचे रक्खे, रोमावली खडी हो, वमन करे, अब उसका उपाय लिखते हैं । सेरभर गेहूं के आटेकी मूर्ति देवीकी बनाकर उसको मिट्टीके पात्रमें रखकर उसके आगे लाल भात लाल ध्वजा चूनके सथिए रक्तचंदन लाल फूल रोली और मूर्तिको लाल चंदनका लेपन कर देना चाहिये ।। २१ ।। २२ ।। सायंकालमें संध्याके समय यह संपूर्ण वस्तु पात्रमें रखकर २१ वार पूर्वोक्त मंत्र पढकर ७ बार बालकके ऊपर वारके उत्तर दिशामें बलि दे आये और स्नान मन्त्र जप धूपादिक सर्व वस्तु पूर्वोक्त प्रकारसे करे ।। २३ ।। इति तृतीयदिवसमावर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ।। ३ ।। चौथे दिन चौथे मास चौथे वर्षके विषय बालकके कष्ट होने से उसको मुखमंडलिका नाम देवी ग्रहण करती है ।। २४ ।। अब उसके लक्षण कहते हैं—गात्रभंग हो, शिरको नीचा रक्खे, दुर्बलता रहे, नेत्र मीचे रक्खे, अंगकी विवर्णता और श्यामता हो, श्याम कास, अरुचि हो, निद्रा नहीं आये ।। २५ ।। अब उसका उपाय लिखते हैं—तिलकी पीठीकी मूर्तिदेवीकी बनाकर मिट्टीके पात्रमें रखकर बेलके कांटेसे उस मूर्तिके आठों अंगोंमें रेखा करदे उसके आगे सफेद फूल सफेद ध्वजा, अर्जुन वृक्षका पुष्प ।। २६ ।। गेहूंके चनके सथिए और १ सेर भर भात पका हुआ सेरभर चनेके

गुड़के पूडे आधा सेर पूर्णपोली; दीपक ५ ध्वजा ५ यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखकर २१ बार पूर्वोक्त मन्त्र पढकर ७ बार बालकके ऊपर वारके पश्चिम दिशाकी तरफ वृक्षके नीचे धर आये यह जतन दिनमें प्रातःकाल मध्यान्ह व सायंकालमें करना चाहिये ।। २७ ।। गौका सींग; लहसन सांपकी कांचली, नींबके पत्ते मनुष्यके माथेके बाल बिल्लीके रोम गौका घी ।। २८ ।। इन्हींका धूप बालकको देये तीन दिन सन्ध्याके समय और मन्त्रजप स्नान यह कर्म पूर्वोक्त क्रमसे करना चाहिये ।। २९ ।।

इति चतुर्थदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ।। ४ ।।

पंचमेदिवसेमासेवर्षेचैवबिडालिका ।। हिक्काश्वासश्च शूलंचगात्रभगोऽरुचिस्तथा ।। ३० ।। ज्वरस्तत्र विशेषेणभवत्येवनसंशयः ।। तंडुलप्रस्थपिष्टेन विनिर्माय्याथपुत्तिकाम् ।। ३१ ।। शुक्लोदनंध्वजाः पंचस्वस्तिकाः पंचचोज्ज्वलाः । पंचप्रदीपाः शुक्लानि कुसुमानिचचंदनम् ।। ३२ ।। अपराह्णेवृक्षमूलेपश्चिमायां दिशि क्षिपेत् ।। चतुर्थोक्तप्रकारेण धूपोदेयः प्रयत्नतः ।। ३३ ।। मन्त्रः ।। ॐ भगवतिचोच्चार्य ह्लीं ह्लीं हूं हूं त तः परम् ।। मुंचरक्षांकुरुकुरुर्बलिंगृह्णंद्वयं तथा ।। ३४ ।। अस्त्रंठद्वितयंचामुंडेचशर्वरिचंडिके ।। ठःठःस्वाहा समाख्यातो मंत्रोबलिनिवेदने ।। ३५ ।।

इति पंचमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ।। ५ ।।

पांचवें दिवस पाचवें मास पांचवें वर्षके विषय बालकके कष्ट हो उसको बिडालिका देवी ग्रहण करती है अब उसके लक्षण लिखते हैं हिचकी आवे श्वास हो। शूल उरमें हो गात्रमें भडक हो अरुचि रहे ।। ३० ।। और ज्वर बडा तेज रहे अब इसका यत्न लिखते हैं १ सेर भर चावलका आटा पीसके उसकी देवीकी मूर्ति बनाकर मिट्टीके पात्रमें रखकर उसके, आगे यह वस्तु रक्खे ।। ३१ ।। सफेद भात पकाया हुआ; ध्वजा सफेद ५ गेहूंके आटेके सथिए और ५ दीपक, सफेद फल, सफेद चंदन ।। ३२ ।। यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखकर संध्याके समय ३१ बार मंत्र पढकर ७ बार बालकके ऊपर वारके पश्चिमदिशाकी तरफ वृक्षके नीचे बलि धर आये और चतुर्थ दिन मास वर्षके विधानमें जो धूप लिखी है सो धूप बालकको देनी चाहिये ।। ३३ ।। मन्त्रः ।। यह चौतीसके और पैंतीसके श्लोकसे मंत्रका उद्धार होता है उसका यह स्वरूप है ॐ भगवति ह्लीं ह्लीं हूं हूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठः ठः चामुंडे शर्वरि चंडिके ठःठः स्वाहा इसी मन्त्रको जपना चाहिये ।। ३४ ।। ३५ ।।

इति पंचमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। १ ।।

षष्ठेतुदिवसेमासेवर्षेषट्कारिकाऽग्रहीत् ।। तच्चेष्टागात्रविक्षेपोहास्यंरोदनमोहनम् ।। ३६ ।। कुष्ठगुग्गुलुसिद्धार्थगजदन्तैर्घृतप्लुतैः ।। धूपयेल्लेपयेच्चापिततो मुञ्चतिसाग्रही ।। ३७ ।। बलिदानादिकं सर्वप्रथमोक्तक्रमेणवै ।। एवंकृतेनविधिनाबालकः सुखतां व्रजेत् ।।३८।। इति षष्ठदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ६ ।। सप्तमेदिवसेमासे वर्षेचैवतुकालिका ।। तत्रापिचेष्टाद्रष्टव्याछर्द्यरोचककम्पनम् ।। ।। ३९ ।। कासश्वासौचविज्ञेयौतत्रनास्तिप्रतिक्रिया ।। एवंसतितुकर्तव्याप्रथमोक्तक्रमेणवै ।। ४० ।। इति सप्तमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ७ ।। अष्टमेदिवसेमासेवर्षेगृह्णातिकामिनी ।। तयागृहीतमात्रेणज्वरस्तापभयंभवेत् ।।४१।। आहारंच न गृह्णातिमुखंचपरिशुष्यति ।। कूलद्वयमृदाकृत्वा पुत्तिकांसुमनोहराम् ।। ४२ ।। गोधूमान्नंमसूरान्नंशाकञ्चपललंतथा ।। ध्वजाः पंचसमाख्याता दीपकः पंच पोलिकाः ।। ४३ ।। गुग्गुलेनचसंधूप्यरक्तचन्दनपुष्पकैः ।। पूजयेद्यत्नतः पूर्वंमंत्रेणैवसुमंत्रिणा ।। ४४ ।। मन्त्रस्नानविशेषस्तुप्रथमोक्तक्रमेणवै ।। एवं कृतेशिशूनांवैसुखंचैवप्रजायते ।। ४५ ।। इत्यष्टमदिनमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ८ ।।

छठा दिवस छठा महीना छठा वर्षविषय बालकको कष्ट होय उसको षट्कारिका देवी ग्रहण करती है अब उसके लक्षण कहते हैं ज्वर हो, अंग फूटे, हंसे, किसी वक्त रोने लग जाय और मोह करे ।। ३६ ।। अब उपाय लिखते हैं— कूट, गूगल, राई, हाथी दांत इनको घीमें मिलाकर बालकको धूनी दे और उसके शरीरको उद्वर्तन कराने से देवी छोड देती है ।। ३७ ।। और बलिदान मंत्रजप स्नानादिक सब कर्म प्रथम दिन मास वर्षकी रीतिसे करने चाहिये ऐसे करनेसे बालकको सुख प्राप्त होता है और देवीका दोष दूर हो जाता है ।। ३८ ।। इति षष्ठदिवसमासवर्षबालग्रहरक्षाविधिः ।। ६ ।। सातवें दिवस सातवें मास सातवें वर्षके विषय बालकको कष्ट होय उसको कालिका देवी ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं प्रथम छर्दि हो अरुचि रहे। शरीर कंपे ।। ३९ ।। खांसी श्वास हो ऐसे लक्षण होनेसे बालककी चिकित्सा करनी चाहिये और प्रथम दिवस मास वर्षके विधानके क्रमसे बलिविधान, मंत्र जप, स्नान, धूपादिक कर्म कराये ब्राह्मण भोजन कराये साधु संत अतिथि इन्हींको भोजन कराये दानादिक कराये ईश्वरकी कृपासे बालक चंगा हो जाये ।। ४० ।। इति सप्तमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालक-

रक्षाविधिः ।। ७ ।। आठवें दिवस आठवें महीने आठवें वर्षके विषय बालकको कष्ट होने से कामिनी देवी ग्रहण करती है अब उसके लक्षणकहते हैं—उसके ग्रहणमात्रसे प्रथम बालकको ज्वर हो और शरीर बहुत तप्त रहे ।। ४१ ।। खाय कुछ नहीं, मुख सूखा रहे, शरीर शीतल हो जाये अब इसका उपाय लिखते हैं जलकी पूर्व पश्चिम किनारोंकी मिट्टी लाये उसकी सुन्दर देवीकी मूर्ति बनाकर उसको मृत्तिकाके पात्रमें रखकर ।। ४२ ।। उसके आगे गेहूं, मसूर, हराशाक, मांस, पांचरंगकी ५ ध्वजा, दीपक ५, पूर्णपोली यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखकर २१ वार मंत्र पढकर ७ बार बालकके ऊपर वारके पश्चिमदिशामें संध्या समय बलि दे ।। ४३ ।। और बालकको गूगलकी धूप दे और लालचन्दन, पुष्प इन्हींसे देवीका पूजन करे और मंत्रका जाननेवाला पुरुष पूर्व मंत्र से पूजन करे ।। ४४ ।। और मंत्र, जप, स्नान यह सब कर्म पांचवें दिन मास वर्षके विधानके क्रमसे करा देना चाहिये ऐसे करनेसे बालकोंके सुख हो देवीका दोष दूर हो ।। ४५ ।।

इत्यष्टमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ८ ।।

नवमे दिवसेमासेवर्षेनाम्नातुबालकम् ।। गृह्णातिमदना चैवतच्चेष्टांचवदास्यहम् ।। ४६ ।। ज्वरंछर्दिघृणाध्मानंकासःश्वासश्चतृट्तथा ।। गात्रभंगश्चशूलश्चचिह्नान्यतानिबालके ।। ४७ ।। प्रस्थमात्रेणपिष्टेनविनिर्माथाथपुत्तिकाम् ।। ओदनंमत्स्यमांसंचपर्पटी चेक्षुशूलिकाम् ।। ४८ ।। निक्षिपेत्पूर्वसंध्यायामुत्तरस्यांबलिंहरेत ।। गोशृंगलशुनाभ्यांचधूपयेच्चैवबालकम् ।। ४९ ।। मन्त्रः– ओंनमोभगवतेवासुदेवाय कृष्णायमंडलबलिमादायहनहनहुंफट्स्वाहा ।। इति नवमदिनमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधि ।। ९ ।।

नौवें दिवस नौवें महीने नौवें वर्षके विषय बालकको कष्ट हो उसको मदना नाम की देवी ग्रहण करती है अब इसके लक्षण कहते हैं ।। ४६ ।। प्रथम ज्वर हो, वमन करे, चित्तमें घृणा रहे, अफरा रहे, खांसी, श्वास हो, प्यास लगे, शरीर में हडफोड हो और शूल हो यह चिह्न बालकके होनेसे मदनादेवीका दोष कहना। अब इसका उपाय लिखते हैं ।। ४७ ।। सेरभर गेहूंका आटा लेकर उसकी (देवीकी) मूर्ति बनाकर मिट्टीके पात्रमें धरकर उसके आगे पके हुए चावल, मच्छीका मांस पापडी, ईख, सुहाली, पांच रंगकी ५ ध्वजा, दीपक आटाके, फूल ।। ४८ ।। यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखकर संध्याके पहिले २१ बार मंत्र पढकर ७ वेर बालकके ऊपर वारके उत्तर दिशाकी तरफ बलि दे आये और गौका सींग लहसन इन्हींकी बालकको धूनी देनी चाहिये बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो स्नानब्राह्मणभोजन पूर्वक्रमसे कराने चाहिये ।। ४९ ।। मंत्र मूलमें जो लिखा है इसीको जपना चाहिये ।।

इति नवमदिनमास वर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ९ ।।

दशमेदिवसेमासेवर्षेगृह्णातिबालकम् ।। रेवती वज्रशूलंचछर्द्दिः श्वासोङ्गमर्द्दनम् ।। ५० ।। अन्नद्वेषश्च कासश्चबलिर्देयाविचक्षणैः ।। प्रस्थप्रमाणपिष्टेन पुत्तिकां कल्पयेद्वराम् ।। ५१ ।। अष्टांगंलेखयेद् बिल्वविटपकंटकैस्ततः ।। गुडौदनंचसर्पिश्चध्वजानांपंचविंशतिः ।। ५२ ।। स्वस्तिकानांप्रदीपानां पंचविंतिकल्पना ।। चत्वारिरक्तपुष्पाणिदक्षिणस्यां-दिशिक्षिपेत् ।। ५३ ।। मंत्रः ॐ नमोभगवतेवैश्वदेवायहनहुंफट्स्वाहा ।। मंत्रोयंजपनीयश्चधूपंस्नानंतुपूर्ववत् ।। ५४ ।। इतिदशमदिवसमासवर्षग्रह-गृहीतबालकरक्षाविधिः ।। १० ।। एकादश दिनेमासेवर्षेचैव सुदर्शना ।। गृह्णाति बालकं पश्चाज्ज्वरस्तस्य प्रजायते ।। ५५ ।। मुखशोषोऽन्न-विद्वेषो गात्रभंगश्च रोदनम् ।। पुत्तिकां माषपिष्टेनं रचितां शुक्लमो-दनम् ।। ५६ ।। पुष्पाण्यपि च शुक्लानि ध्वजानां पञ्चविंशतिः ।। स्वस्तिकानां प्रदीपानां पंचविंशतिरेव च ।। ५७ ।। एतत्सर्वं यमाशायां संध्यायां प्रातराहरेत् ।। ५८ ।। मन्त्रः ।। ॐ नमोभगवते रावणाय चंद्रहासवज्रहस्ताय ज्वलज्वलदुष्टग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट्स्वाहा ।। एकविंशतिवारं च मंत्रमेनं जपेन्नरः ।। धूपस्नाना दिकं सर्वं कुर्यात्पूर्व-क्रमेण च ।। ५९ ।।

इत्येकादशदिवसमासवर्षगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ११ ।।

दशमदिवस दशममास दशमवर्षके विषय बालकको कष्ट होनेसे उसको रेवती नाम की देवी ग्रहण करती है, उसके लक्षण कहते हैं–प्रथम ज्वर हो, शूल हो, वमन करे, श्वास हो, अंग फूटे ।। ५० ।। अन्नपर इच्छा नहीं हो, खांसी हो इतने लक्षण होनेसे देवीका दोष कहना । अब इसका उपाय लिखते हैं–सेर भर गेहूंके आटेकी सुंदर देवीकी मूर्ति बनाकर मिट्टीके पात्रमें स्थापन करे ।। ५१ ।। फिर बिल्ववृक्षके कांटोंसे उस मूर्तिके आठ अंगोंमें रेखा करके कांटोंको उन्हीं अंगों में लगादे फिर गुडके मीठे पके हुए चावल, घृत, २५ ध्वजा ।। ५२ ।। सथिये गेहूंके आटेके २५ दीपक और लाल फूल ४ यह सर्व वस्तु उसी पात्रमें रखकर २१ वार मंत्र पढकर ७ बेर बालकके ऊपर वारके संध्यासमय दक्षिण दिशाकी तरफ बलि धर आये ।।५३ ।। मंत्र ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट्स्वाहा ।। यही मंत्र जपना चाहिये और धूप स्नान पूर्वोक्त क्रमसे कराना चाहिये ।। ५४ ।।

इति दशमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। १० ।।

ग्यारहवें दिवस ग्यारहवें मास ग्यारहवें वर्षके विषय बालकको कष्ट होय उसको सुदर्शनानामदेवीग्रहण करती है अब उसके लक्षण कहते हैं–प्रथम बालकको

ज्वर हो ।। ५५ ।। मुखशोष हो, अन्नपर रुचि नहीं हो, अंग सब फूटें, रोवे बहुत शरीर दुर्बल हो जाये यह लक्षण होनेसे देवीका दोष कहना अब इसका उपाय लिखते हैं उडदके आटाकी देवीकी मूर्ति बनाकर मृत्तिका के पात्रमें रखकर उसके आगे सफेद भात पका हुआ रक्खे ।। ५६ ।। सफेद फूल २५, सफेद ध्वजा और सथिये गेहूं के आटाके पचीस २५ दीपक, पूर्णपोली, सुहाली, पूडे ।। ५७ ।। यह सब वस्तु उसी पात्रमें धरकर २१ वार मंत्र पढकर ७ बार बालकके ऊपर वारके यह बलि संध्यासमयमें और प्रातःकाल दोनों वक्त दक्षिणदिशामें दे ।। ५८ ।। मंत्र मूलमें लिखा है २१ वार जपना चाहिये और धूप स्नानादिक सब कर्म पूर्वक्रमके अनुसार करने चाहिये ।। ५९ ।।

इत्येकादशदिवसमासवर्षगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। ११ ।।

द्वादशेदिवसेमासेवर्षेवापूतनाशिशुम् ।। अद्भुताख्या प्रगृह्णाति ज्वरःस्यातप्रथमं ततः ।। ६० ।। रोदनं सर्वदा दन्तखादनंनेत्ररुक्तथा ।। रोमांचंतापइत्येतल्लक्षणं तस्यवैशिशोः ।। ६१ ।। तंडुलप्रस्थपिष्टेनकृत्वाचैव तुपुत्तिकाम् ।। त्रयोदशस्वस्तिकाश्चध्वजादीनांत्रयोदश ।। ६२ ।। अपूपंमस्त्स्यमांसंचतथापर्पटिकामपि ।। एतत्सर्वंदक्षिणस्यांदिशिसायंविनिक्षिपेत् ।। ६३ ।। मन्त्रः ।। ओंनमोनारायणायज्वलद्धस्तायहनद्वयम् ।। शोषय द्वितयं चैव मर्द्दयद्वितयं तथा ।। ६४ ।। पातयद्वितयं हुंहुंहुंहुंहनहनेति च ।। दुष्टानां तु समुच्चार्य ह्रां ह्रूं फट्वह्निवल्लभा ।। ६५ ।।

इति द्वादशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधि. ।। १२ ।।

बारहवें दिवस बारहवें मास बारहवें वर्षके विषय बलकको कष्ट हो उसको अद्भुतानामकी देवी ग्रहण करती है, अब उसके लक्षण कहते हैं– प्रथम बालकको ज्वर हो ।। ६० ।। और रोवे बहुत, हरवक्त दांतोंको चाबाकरे, नेत्रमें पीडा हो, रोमावली खडी रहे, अंग ताप रहे, इतने लक्षण बालकके होनेसे देवीका दोष जानना ।। ६१ ।। अब इसका उपाय लिखते हैं–चावल सेरभर लेकर पीसकर उसकी (देवीकी) मूर्ति बनाकर मिट्टीके पात्र में रखकर उसके आगे १३ सथिये गेहूं के आटेके दीपक बनाकर रक्खे और १३ ध्वजा रखनी चाहिये ।। ६२ ।। और पूडे, मच्छीका मांस, पापडी सुहाली यह सर्व वस्तु उसी पात्रमें रखकर २१ वार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्या समय दक्षिण दिशामें बलि दे ।। ६३ ।। मंत्रः ।। ॐ नमो नारायणायज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय शोषय मर्दय मर्दय पातय पातय हुंहुंहुंहुं हन हन दुष्टानां ह्रां ह्रूं फट्स्वाहा ।। यह मंत्र चौसठ पैंसठके श्लोकमेंसे उद्धार किया जात है, इसीका जप करना चाहिये,

और धूप स्नानादि सर्व कर्म पूर्व क्रमके अनुसारा करने चाहिये, ऐसे करनेसे बालक चंगा हो, देवीका दोष शांत हो ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ इति द्वादशदिवसमास वर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १२ ॥

त्रयोदशेदिनेमासेवर्षेगृह्णातिबालकम् ॥ भद्रकाली ज्वरोनिद्रा-वामहस्तस्यकंपनम् ॥ ६६ ॥ वमनं तृड् विनिःश्वासःकासःपीडाविचे-तनम् ॥ पूर्वांदिशंसमाश्रित्यबलिदेव्यैनिवेदयेत् ॥ ६७ ॥ नदीकूलद्व-योत्तिष्ठन्मृदादेवीस्वरूपकम् ॥ कृत्वापूजाप्रकर्त्तव्याधूपदीपादिभिस्ततः ॥ ६८ ॥ वटकालड्वपूपांश्चसान्नभक्तं गुडोदधि ॥ चतुर्वर्णपताकाश्च-प्रदीपाःपुष्पचंदनम् ॥ ६९ ॥ मध्याह्नेबलिदानंतुकर्तव्यंसुविधानतः ॥ मंत्रः ॥ ओंनमोभगवतेचरावणायाथबालकम् ॥ मुंचमुंचाग्निजायांतो-मन्त्रोयंसमुदाहृतः ॥ ७० ॥ धूपस्नादिकंसर्वंपूर्वोक्तक्रमतश्चरेत् ॥ ७१ ॥ इति त्रयोदशदिवसमासवर्षगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १३ ॥ चतुर्द-शेदिनेमासे वर्षे गृह्णातिबालकम् ॥ ताराश्रीयोगिनीनाम्नाज्वरःशोषोऽ-रुचिभृशम् ॥ ७२ ॥ चक्षुःपीडाभवेत्तस्य पश्चिमेबलिमाहरेत् ॥ त्रयो-दशप्रकारेण बलिदानादिकं चरेत् ॥ ७३ ॥

इति चतुर्दशदिनमासवर्षग्रहगृहीतबालक रक्षाविधिः ॥ १४ ।

तेरहवें दिवस तेरहवें महीने तेरहवें वर्षके विषय बालकको कष्ट हो उसको भद्रकाली देवी ग्रहण करती है अब उसके लक्षण कहते हैं–प्रथम ज्वर हो, निद्रा बहुत आवे, वायां हाथ बार बार कंपे ॥ ६ ॥ छर्दि होय, प्यास बहुत लगे श्वास हो, खांसी हो, शरीरमें पीडा ज्यादा रहे चेत कम रहे यह लक्षण हों उस बालकको देवीका दोष जानना अब इसका उपाय लिखते हैं–पूर्व दिशाकी तरफ यह बलि देवीके अर्थ देनी चाहिये ॥ ६७ ॥ अब बलिको कहते हैं–नदीके दोनों किनारोंकी मृत्तिका लाकर देवीकी मूर्ति बनाकर मिट्टीके पात्रमें रखकर धूपदी पादि करके प्रथम देवीकी पूजा करे ॥ ६८ ॥ फिर उसके आगे बडे, लड्डू, पूडे, गेहूं, पका हुआ भात, गुड, दही चार रंगकी ४ ध्वजा, दीपक ४, पुष्प, चंदन ॥ ६९ ॥ यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखकर २१ वार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके मध्याह्नसमयमें पूर्वदिशामें सुन्दर रीतिसे बलदान दे ॥ मंत्रः ॥ ॐ नमो भगवते रावणाय बालकं मुंच मुंच स्वाहा । यह मंत्र है इसका जप करना चाहिये और धूप स्नानादिक जो कर्म हैं सो संपूर्ण पूर्वोक्तक्रमसे कराने चाहिये ॥ ७० ॥ ७१ ॥ इति त्रयोदशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १३ ॥ चौदहवें दिवस चौदहवें मास चौदहवें वर्षके विषय बालकको कष्ट हो, उस बालकको श्रीयोगिनी तारा

ग्रहण करती है अब उसके लक्षण कहते हैं प्रथम ज्वर हो, शरीरशोष हो, अरुचि बहुत रहे ।। ७२ ।। नेत्रमें पीडा रहे यह लक्षण होनेसे देवीका दोष कहना । अब उसका उपाय लिखते हैं तेरहवें दिवसमासवर्षका जो प्रकार है उसी प्रकारसे बलिदान पश्चिमदिशाकी तरफ देना चाहिये और मंत्र जप स्नानादिक सर्व कर्म पूर्वक्रमके अनुसार करने चाहिये ।। ७३ ।। इति चतुर्दशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालक रक्षाविधि. ।। १४ ।।

पंचदशे दिने मासे वर्षे हुंकारिकाग्रहः ।। श्वासकासौज्वरश्चैवदक्षिणस्यांबलिं हरेत् ।। ७४ ।। बलिदानादिकंसर्वत्रयोदशक्रमेणवै ।। धूपादिकंकर्मसर्वंचतुर्थोक्तक्रमेणतु ।। ७५ ।। इति पंचदशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। १५ ।। षोडशेदिवसेमासेऽब्दे गृह्णाति कुमारिका ।। श्रमश्चारुचिरुद्वेगोज्वरःशोषादिचेष्टितम् ।। ७६ ।। नैर्ऋतींदिशमाश्रित्यमध्यरात्रे बलिं हरेत् ।। बालकं स्नापयेत्पश्चाच्छांतितोयेन मंत्रिणा ।। ७७ ।। त्रयोदशप्रकारेणशेषमन्यच्चकारयेत् ।। धूपादिकं तु वत्सर्वंचतुर्थोक्तक्रमेणवै ।। ७८ ।। इति षोडशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। १६ ।।

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे दिवसमासवर्षग्रहगृहीतबाल-
रक्षानाम दशमः पटलः ।। १० ।।

पंद्रहवें दिवस पंद्रहवें महीने पंद्रहवें वर्षके विषय बालकको कष्ट होय उसको हुंकारिका देवी ग्रहण करती है अब उसके लक्षण लिखते हैं–श्वास हो, ज्वर हो और वमन करे, तृषा लगे, शरीरमें अस्थि भडके, रोवे यह लक्षण होने से हुंकारिका देवीका दोष जानाना ।। ७४ ।। अब इसका उपाय कहते हैं–बलिदानादिक कर्म सर्व तेरहवें दिनमासवर्षके क्रमसे कराने चाहिये और जो धूप स्नानादिक कर्म हैं वह सब चतुर्थदिवसमासवर्षके क्रमसे करा देने चाहिये ।। ७५ ।। इति पंद्रहवें दिवस मासवर्षग्रहगृहीतबालक रक्षा विधिः ।। १५ ।। सोलहवें दिवस सोलहवे मास सोलहवें वर्षके विषय बालकको कष्ट हो उसको कुमारी देवी ग्रहण करती है अब उसके लक्षण कहते हैं–प्रथम तो श्रम हो, भूख बंद हो जावे, मन उद्वेग रहे, ज्वर रहे, शरीर सूखता जाय यह लक्षण होनेसे कुमारी देवीका दोष जानना ।। ७६ ।। अब इसका उपाय लिखते हैं–नैर्ऋतदिशामें अर्द्धरात्रिके वक्त बलिदान दे बालकको पीछे स्नान कराये शांतिके जलसे मंत्र जाननेवाला पुरुष ।। ७७ ।। और बालदानादिक कर्म तेरहवें दिन मास वषके क्रमसे वैद्यसे करा देने चाहिये और धूप स्नाना-

दिक जो कर्म हैं सो चतुर्थदिवसमासवर्षके विधानके क्रमसे कराये ।। ७८ ।। इति षोडशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ।। १६ ।।

इति श्रीपंडितनंदकुमार वैद्यकृत बालतंत्रभाषाटीकायां दशमः पटलः ।। १० ।।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिबालानांहितकाम्यया ।। बलिसाधारणंचैवग्रहान्रोगांस्तथैवच ।। १ ।। अथपूतनाग्रहीलक्षणमाह ।। अत्यंतमलिनःस्तीर्णेशयानंनिर्जने स्थले ।। स्वपंतंपूतनानामग्रहीगृह्णातिबालकम् ।। २ ।। ततोहिक्कायुतः श्वासीस्तनेद्वेषीचकंपवान् ।। छर्दिमांश्चप्रजायेतनिशिजागार्तिसंरुदन् ।। ३ ।। स्वापो दिवारोमहर्षआस्यशोषश्चजायते । गुदेरोगश्चतत्राशुबलिर्देयःप्रशांतये ।। ४ ।। कृशरान्नपूर्णकुम्भःसहेमतिलचूर्णकम् ।। ध्वजागंधश्चपुष्पाणि धूपकंदीपकंबलिः ।। ५ ।। बालानांक्रीडनस्थानेदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ।। मन्त्र ।। नीलांबरधरे देवि पूतने विकृतानने ।। शिशोर्विकारान्मुंचस्वप्रगृह्णीष्वबलित्विमम् ।। ६ ।। अथमहापूतनाग्रहीलक्षणमाह ।। ताडितः संपतेद्यस्तुतूष्णींवान्यःपतेत्तथा ।। बालंमहापूतनास्यात् गृह्णातिचततोज्वरः ।। ७ ।। जागर्तिचदिवारात्रौतच्चभुंक्तेवमत्यपि ।। कासःश्वासोऽक्षिरोगश्चपूतिगंधः प्रजायते ।। ८ ।। अन्नंमांसंचरक्तंचगंधपुष्पाणिवाससी ।। धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ।। स्नुहीवृक्षस्यमूलेतुबलिंमंत्रेणनिक्षिपेत् ।। ९ ।। मन्त्रः ।। करालेचंडिचामुंडेकाषायांबरधारिणि ।। राक्षसिपूतनेदेविप्रगृह्णीष्वबलित्विमम् ।। १० ।।

अब इसके उपरांत बालकोंके हितकारी साधारण ग्रहोंकी बलि कहते हैं और साधारण रोग भी कहते हैं ।। १ ।। अब पूतना ग्रहीके लक्षण कहते हैं, अत्यंत मैले विस्तरपर सोते हुए बालकको या निर्जन स्थानमें सोते हुए बालकको पूतना नाम देवी ग्रहण करती है ।। २ ।। अब उसके लक्षण कहते हैं–प्रथम बालकको हुचकी हो, स्तनपान नहीं करे, कंपे बहुत वमन करे, रात्रिको जागे और रोवे बहुत ।। ३ ।। दिनमें सोवे शरीर पर रोमावली खडी रहे, मुख सूखा रहे, गुदामें रोग हो ऐसे लक्षण होनेसे देवीका दोष जानना, उसकी शांतिके लिये बलि देनी चाहिये ।। ४ ।। खिचडी, जलका पूर्ण कलश उसमें यत्किंचित् सोना रखना चाहिये और तिलकुट, ध्वजा, कुछ सुगन्धद्रव्य, पुष्प, धूप, दीपक यह सब वस्तु एक मिट्टीके पात्रमें रखकर २१ वार मन्त्रसे मंत्रित करके बालक पर वारके जहां, बालक खेलते हों, उस जगह बलि धर आये बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ।। ५ ।।

मूलमें छठा श्लोक है, वही मन्त्र जपना चाहिये ।। ६ ।। अब महापूतनाग्रहीके लक्षण कहते हैं—बालक ताड्या हुआ गिर पडे या चुपचाप गिर पडे उस वक्तमें बालकको महापूतना ग्रहण करती है, । उसके ग्रहण करनेसे प्रथम बालकको ज्वर हो ।। ७ ।। और दिनरात्रि बालक सोवे नहीं और जो कुछ भोजन करे सो वमन करदे, श्वास हो । खांसी हो, नेत्रमें रोग हो शरीरमें दुर्गन्ध आये ऐसे लक्षण होनेसे देवीका दोष जानना ।। ८ ।। अब इसका उपाय कहते हैं—अन्न, मांस, रक्त, सुगंधके फूल, सफेद वस्त्र, लाल वस्त्र, धूप, दीपक, जलसे पूर्ण कलश उसमें यत्किंचित् सोना डाल देना चाहिये यह सब वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढकर बालकके ऊपर वारके थोहरवृक्षके नीचे बलि दे आये देवीका दोष दूर हो बालक चंगा हो जाय ।। ९ ।। और मूलमें जो दशका श्लोक है सो मंत्र है इसीको जपना चाहिये ।। १० ।।

अथोर्ध्वपूतनालक्षणमाह ।। लोभादिनातु यःकुर्यात्तिरस्कारंवने-पुरे ।। देव्यूर्द्ध्वपूतनातस्यबालंसंक्रमते ग्रहः ।। ११ ।। ततोज्वरोचाक्षि-रोगी सनिद्रश्चदिवाभवेत् ।। विनिद्रोपिनिशायांतुकासयुक्तश्चजायते ।। १२ ।। अन्नंमांसंचरुधिरंरक्तवस्त्रं च चंदनम् ।। सहिरण्यः पूर्णकुंभः स्नुहीमूलेनिशामुखे ।। १३ ।। मंत्रः ।। अथोर्ध्वपूतनेदेविप्रगृह्णीतष्व-र्बलिंत्विमम् ।। शिशोर्विकारान्मुंचाद्यरक्ताभेरक्तदर्शने ।। १४ ।। अथ बालकान्ताग्रहीलक्षणमाह ।। ऋतौस्वदारगमनं कृत्वास्नानादिवर्जितः ।। अनृतौशौचहीनस्तुस्वपेद्बालकतल्पके ।। १५ ।। तदासंक्रमतेबालेबाल-कान्ता महाग्रही ।। ततःपक्षाभिघातःस्याद्रक्तनेत्रश्चजायते ।। १६ ।। पायसंचतथामेषंकुक्कुटंछागलोहितम् ।। रक्तवस्त्रंरक्तगंधरक्तपुष्पा-णिवैतदा ।। १७ ।। धूपदीपौहिरण्येनयुक्तः पूर्णघटस्तथा ।। एतद्वटस्य-मूलेचयवक्षेत्रेऽपिवाक्षिपेत् ।। १८ ।। प्रगृह्णीष्वबलिंचेमबालकान्तेमहा-ग्रह ।। शिशोर्विकारान्मुंचस्वकुमारस्य प्रियप्रभे ।। १९ ।।

अब ऊर्ध्वपूतना देवीके लक्षण कहते हैं, जो पुरुष लोभमें आकर या मदमें आकर बनमें या ग्राममें देवीका अथवा देवताका तिरस्कार करता है उस पुरुषके बालकको ऊध्पूतना नाम की देवी ग्रहण करती है ।। ११ ।। अब उसके लक्षण कहते हैं प्रथम बालकको ज्वर हो, नेत्र दूखें, दिनमें निद्रा आये और रात्रिको जागे और खांसी बहुत उठे ।। १२ ।। अब इसका उपाय कहते हैं—अन्न, मांस, रुधिर, लाल वस्त्र, लाल चंदन, सोना डाला हुआ जलका कलश, ध्वजा, दीपक यह सर्व वस्तु एक मिट्टीके पात्रमें रखकर २१ वार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके

सन्ध्यासमयमें थोहरवृक्षके नीचे रख आये बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ।। १३ ।। और यह जो चौदहका श्लोक है यही मंत्र है इसीको जपना चाहिये ।। १४ ।। अब बालकांता ग्रहीके लक्षण कहते हैं–ऋतुकालमें अपनी स्त्रीसे विषय करके फिर स्नानादिक न करके वा वगैर ऋतुकालके विषय करके अपवित्र हुवा बालककी शय्या पर सो जावे ।।१५।। उस वक्त बालकांता नामकी ग्रह बालकको ग्रहण करती है तदनंतर बालकको पक्षाघात रोग होता है और लाल नेत्र हो जाते हैं ।। १६ ।। अब इसका उपाय कहते हैं । खीरऔर मेंढेका मुर्गेका, बकरेका, खून, सालवस्त्र; लालचंदन, लालफूल ।। १७ ।। धूप, दीपक जलका कलश उसमें यत्किंचित् सोना डालना चाहिये यह सब वस्तु एक मिट्टीके बर्तनमें रखकर २१ वार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्या समयमें बडके वृक्षतले अथवा जौके खेतमें बलि दे तो बालक चंगा हो जाये देवीका दोष शांत हो जाये ।। १८ ।। और जो यह उन्नीसका श्लोक है यह मंत्र है इसीको जपना चाहिये ।। १९ ।।

अथ रेवतीग्रहीलक्षणमाह ।। भूषणैर्बहुभिर्युक्तंगंधादिभिरलंकृतम् ।। बालकंरेवतीनामाग्रहः संक्रमतेतदा ।। २० ।। हरिद्रनेत्रविण्मूत्रंपीतस्फोटश्चजायते ।। अग्निदग्धाकृतिः स्फोटोभवेच्छर्दिः पुनःपुनः ।। २१ ।। पायसंपललंलाजासक्तवोगंधएवच ।। पुष्पाणिधूपदीपौचमिष्टंकांचनगर्भितः ।। २२ ।। पूर्णकुंभश्चमद्यंवा गोष्ठेनद्यांचनिक्षिपेत् ।। २३ ।। मंत्रः ।। शिशोर्विकारान्मचाद्यरेवतीचैवमातृक ।। प्रगृह्णीष्वबलिंचेमं सुन्दरिप्रियभूषणे ।। २४ ।। अथ महारेवतीग्रहीलक्षणमाह सध्याकालेशयानंतुचोच्छिष्टंमुक्तमूर्द्धजम् ।। तदासंक्रमतेबालंरेवतीचमहाग्रहः ।।२५।। आस्यशोषोभवेत्तस्यदाहः कंपास्यवक्रता ।। कृष्णवर्णश्चजायेतबलिर्देयः प्रशांतये ।। २६ ।। लाजाश्च पायसंसर्पिः कुक्कुटोमेषएवच ।। रक्तवस्त्रंरक्तगंधंपूर्णकुंभंसकांचनम् ।। २७ ।। वटस्यमूलेसंध्यायांप्रदोषेनिक्षिपेद्बलिम् ।। २८ ।। मन्त्रः ।। चित्राम्बरधरेदेविचित्रमाल्यानुलेपने ।। शिशोर्विकारान्मुञ्चाद्यरेवति त्वंमहाग्रहि ।। २९ ।।

रेवतीग्रहके लक्षण कहते हैं–बहुत आभूषण बालक को पहरानेसे या सुगंधादिक द्रव्य बालकके लगानेसे रेवती नाम ग्रहण बालकको ग्रहण करती है ।। २० ।। अब उसके लक्षण कहते हैं हलदीकी माफिक आंख विष्ठा, मूत्र हो जावें और पीले रंगके फोडे वदनमें हो जावें या अग्निसे जलेके सदृश शरीरमें फफोले हो जावें और बार बार छर्दि करे ।। २१ ।। अब इसका उपाय कहते हैं–खार, मांस, धानकी खील, सत्तू, सुगंधद्रव्य, सुगंधके फूल धूप, दीपक, मिष्टान्न और जलका कलश

उसमें सोना यत्किंचित् डाल देना चाहिये ।। २२ ।। और मदिरा यह सर्व वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढकर ७ बार बालकके ऊपर वारके जहां गौ बंधती है वहां या नदीके किनारे बलि दे बालक चंगा हो जाये ।। २३ ।। और यह चौबीसका श्लोक हैं यह मंत्र है इसीको पढना चाहिये ।। २४ ।। अब महारेवती ग्रहके लक्षण कहते हैं–संध्या समयके वक्त उच्छिष्टमुख बालकको शयन करानेसे या खुले बाल संध्याके वक्त शयन कराने से महारेवती नामकी देवी बालकको ग्रहण करती है ।। २५ ।।

अब उसके लक्षण कहते हैं प्रथम मुखशोष रहे और दाह रहे शरीर कंपे मुख बांका रहे और शरीरका वर्ण काला हो जावे ऐसे लक्षण बालकके होनेसे देवीकी शांतिके लिये बलि देनी चाहिये ।। २६ ।। बलिविधान लिखते हैं–धानकी खील, खीर, घृत, मुर्गा, भेड, लालवस्त्र, लालचंदन, जलका कलश, सुवर्णसहित ।। २७ ।। यह सर्व वस्तु मिट्टीके पात्रमें स्थित करके २१ वार मन्त्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्यासमयमें वटके वृक्षतले बलिको दे ।। २८ ।। और यह उन्तीसका श्लोक है यह मंत्र है इसीको जपना चाहिये । बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो जाये ।। २९ ।।

अथ पुष्परेवतीग्रहोलक्षणमाह ।। भूमौशयानंसंध्यायांक्रीडंतंपुष्परेवती ।। ग्रहीसंक्रमतेबालंतेनांगेशीतताभवेत् ।। ३० ।। आस्यशोषश्चदाहश्चकंपःस्यादंगुलीषुच ।। नखेषुकृष्णवर्णश्चदातव्यःशान्तयेबलिः ।। ३१ ।। मधुयुक्तंपायसंचगंधपुष्पाणिवाससी ।। धूपदीपौहिरण्येनयुक्तः पूर्णघटस्तथा ।। ३२ ।। सुपुष्पायतनेक्वापिबलिमंत्रेणनिःक्षिपेत् ।। ३३ ।। मंत्रः ।। पुष्पाक्षेरेवतीदेवीप्रगृह्णीष्वबलिंत्विमम् ।। बालकस्य सुखंसिद्धिप्रयच्छत्वंवरानने ।। ३४ ।। अथ शुष्करेवतीग्रहोलक्षणमाह ।। भूमौनिपतितंबालंरुदंतं छर्दितंतथा ।। अप्रक्षालितगात्रंचगृह्णीयाच्छुष्करेवती ।। ३५ ।। ततोज्वरीमुखेशोषीहृष्चछोष्यपिचशूल्यपि ।। शिरोरोगार्तिभूतश्च अर्जीर्णेन युतोभवेत् ।। ३६ ।। मुद्गान्नंश्वेतपुष्पाणिश्वेतवस्त्रंचचंदनम् ।। धूपदीपौघटंचूतबृक्षमूलेबलिंहरेत् ।। ३७ ।। मंत्रः ।। शुष्कादिरेवतीदेविप्रेतरूपेयशस्विनि ।। करालवदनेघोरे प्रगृह्णीष्वबलिंत्विम् ।। ३८ ।।

अब पुष्परेवती देवीका लक्षण कहते हैं–संध्याके समय पृथ्वीमें सोते हुए बालकको या खेलते हुए बालकको पुष्परेवती ग्रहण करती है अब उसके लक्षण कहते हैं–प्रथम बालकका अंग ठंढा रहे ।। ३० ।। मुखशोष हो दाह हो हाथकी

अंगुलियोंमें कंप हो और नख काले हो जाये। अब पुष्परेवती देवीकी शांतिके लिये बलि देनी चाहिये ।। ३१ ।। सहत, खीर, सुगंधके फूल, सफेदवस्त्र, लावस्त्र, धूप, दीपक, जलका कलश, उसमें थोडा सोना डालदेना चाहिये ।। ३२ ।। यह सब वस्तु मृत्तिकाके पात्रमें रखकर २१ वार मन्त्रसे मंत्रित करके ७ वार बालकके ऊपर वारके जहां फुलवाडी हो वहां बलि दे आये बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ।। ३३ ।। और यह चौंतीसका श्लोक है यह मन्त्र है इसीको जपना चाहिये ।। ३४ ।। अब शुष्करेती देवीके लक्षण कहते हैं–पृथ्वीमें बालक गिरजाये रोता हो या छर्दि करता हो उसको जलसे शुद्ध न करे उस बालकको शुष्करेवती ग्रहण करती है ।। ३५ ।। अब उसके लक्षण कहते हैं प्रथम बालकको ज्वर, हो, मुखशोष हो, हृच्छोष हो, उदरमें शूल हो, शिरमें शूल हो और अजीर्ण रहे ।। ३६ ।। अब उपाय लिखते हैं मूंग, चावल, सफेद फूल, सफेद वस्त्र सफेद चंदन, धूप, दीपक, जलका कलश यह सर्व वस्तु मिट्टीके पात्रमें रखकर २१ वार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके आम्रवृक्षके नीचे बलि दे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ।। ३७ ।। और आठतीसका श्लोक है यही मंत्र है इसीको जपना चाहिये ।। ३८ ।।

अथशकुनीग्रहीलक्षणमाह ।। उच्छिष्टभोजनंदेवालयमूत्रादिकारिणम् ।। शकुनीग्रहीगृह्णातिततोजागर्तिर्वैनिशि ।। ३९ ।। मुखेकंठेगुदेचैवव्रणोऽतीसारवान्भवेत् ।। ज्वरीतृष्णार्छ्दितवातरोगीभवतिबालकः ।। ४० ।। आममांसंपक्वमांसंहरिद्रान्नंपयोघृतम् ।। तिलपिष्टं फलं चैव वस्त्रगंधादिकंतथा ।। हिरण्यसहितःकुम्भःश्मशानेनिक्षिपेद्बलिम् ।। ४१ ।। मन्त्रः ।। प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंशकुन्यक्षेमहाग्रही ।। शिशोर्विकारान्मुञ्चाद्यसुभगेकंपरूपिणी ।। ४२ ।। अथशिशुमुंडिकाग्रहीलक्षणमाह ।। नित्यकर्मविहीनानांपोषिकाणांचपक्षिणाम् ।। जन्मान्तररेसंक्रमतेबालकंशिशुमुंडिका ।। ४३ ।। ततोरोदितिपाणीतुपादौचोत्क्षिप्यकंपते ।। आमज्वरीविनिद्रश्चभवेत्कार्योबलिस्ततः ।। ४४ ।। हरिद्रान्नंतिलान्नंचपिष्टंचापूपपूरिका ।। सर्पिर्मधुदधिक्षीरंगंधपुष्पाणिवाससी ।। ४५ ।। धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ।। नटीतटेवटेऽरण्येनिक्षिपेन्मंत्रतोबलिम् ।। ४६ ।। मंत्रः ।। स्वलंकृतस्वरूपाचभवसिशिशुमुंडिके ।। शिशोर्विकारान्मुंचस्वचंडिकेचंडविक्रमे ।। ४७ ।।

अब शकुनी देवीके लक्षण कहते हैं–देवताके स्थानमें उच्छिष्ट भोजन करानेसे या मलमूत्रादिक करनेसे बालकको शकुनी देवीग्रहण करती है। अब उसके लक्षण कहते हैं–रात्रिमें बालक सोवे नहीं ।। ३९ ।। और बालकके मुखमें, कंठमें,

गुदामें व्रण हो और दस्त लगे ज्वर होवे, प्यास जादा लगे, वमन करे, वातव्याधि होये ।। ४० ।। यह लक्षण होनेसे शकुनी देवीका दोष जानना । अब इसका बलि-विधान कहते हैं—कच्चा मांस, पकामांस, हलदीसहित अन्न, दूध, घृत, तिलकुट, फल, सफेद कपडा, सफेद फूल, ध्वजा, दीपक, सथिये सुवर्णयुक्त जलका कलस यह संपूर्ण वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें रखकर २१ वार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके स्मशानमें बलि संध्याकालमें धर आये बालक चंगा हो, शकुनी देवीका दोष शांत हो ।। ४१ ।। मूलमें बयालीसका श्लोक है यही मंत्र है इसीको पढना चाहिये ।। ४२ ।। अब शिशुमुंडिका देवीके लक्षण कहते हैं—जो नर या नारी नित्य कर्म करते नहीं हैं और पक्षियोंका पालन करते हैं, उनके बालकको जन्मान्तमें-शिशुमुंडिका देवी ग्रहण करती है ।। ४३ ।। अब उसके लक्षण कहते हैं—बालक बहुत रोवे, हाथोंको पैरोंको उठा उठा पटके और कंपे, आमज्वर हो, निद्रा नहीं आवे, वमन करे आलस्य हो यह लक्षण होनेसे शिशुमुण्डिका देवीका दोष जानना । अब इसका बलिविधान कहते हैं ।। ४४ ।। हरिद्रायुक्त अन्न अर्थात् केशरीभात-तिलकुट, कचोरी, पूडे, पूरी, घृत, सहत, दही, दूध सुगंधीके फल, वस्त्र, लालवस्त्र ।। ४५ ।। धूप, दीपक, मिठाई सुवर्णयुक्त जलका कलश यह सब वस्तु एक मृत्ति-काके पात्रमें धरकर २१ बार मंत्र पढकर ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्या समयमें नदी किनारे या वटवृक्षके या वनमें बलिको देवे बालक चंगा हो, शिशु मुंडिका देवीका दोष शांत हो ।। ४६ ।। मूलमें सैंतालीस का श्लोक है यही मंत्र है इसीको पढना चाहिये ।। ४७ ।।

अथ सामान्यतो ग्रहाविष्टबालस्यचेष्टोद्वर्तनस्नानधूपमंत्राः कथ्यते।। नखदंतविकारीस्यान्निद्राहीनोथवा भवेत् ।। भयोद्वेगीचदुर्गंधीबहुचेष्टो-बलान्वितः ।। बालोबालग्रहाविष्टस्तस्याच्चप्रतिक्रिया ।। ४८ ।। दूर्वास-तिक्ताविषमच्छदत्वक्प्रोद्वर्तनाद्धन्तिशिशुग्रहार्तिम् ।। सप्तच्छदाऽश्वत्थ मधू-कशेलुपत्रैः क्वथाम्भः स्नपनाच्चशीतात् ।। ४९ ।। वंशत्वङ्नतसंयुतंसल-शुनंसारिष्टपत्रंघृतनिर्माल्यंनरकेशसर्पिरगुरुंगोक्षीरराजीचतुः ।। सिद्धार्थं-जतुनिंबपत्रसहितंवंशत्वगाज्यान्वितं धूपानांत्रयमेतदाशुसकलान् बालग्रहा-न्नाशयेत् प्रणवः शंख शब्देनरमापतिर्वदेत्ततः ।। ५० ।। खगेश्वरततोलू-नाकर्षणंकुरुसंवदेत् ।। वह्निजायावधिर्मंतोविलेपनविधौस्मृतः ।। ५१ ।।

अब सामान्य रीतिसे ग्रह से आविष्ट बालककी चेष्टा और उबटना स्नान धूप, मंत्र इन्हींको कहते हैं—जिस बालकके नखोंमें विकार हो और दांतोंमें विकार हो, निद्रा आवे नहीं, भय लगे, मनमें उद्वेग रहे, शरीरमें दुर्गन्धि आये अनेक प्रका-रकी चेष्टा करे, बल अधिक हो जाये, वह बालक ग्रहाविष्ट जानना अब उसकी

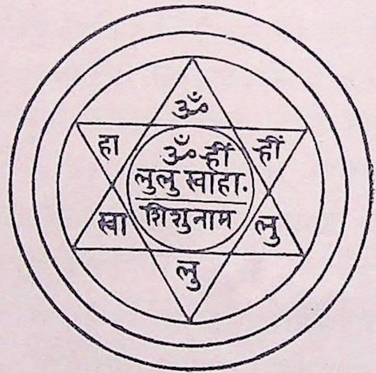
प्रतिक्रिया लिखते हैं ।। ४८ ।। दूर्वा, कुटकी, निंबके पत्ते, तेज यह द्रव्य कूट कपड-छान करके बालकको, उबटना करनेसे और पीछे सातोंनके पत्ते, पीपलके पत्ते, मुलहटी, ल्हसेवाके पत्ते इन औषधियोंका क्वाथ से बालकको स्नान करानेसे बालककी ग्रहपीडा नष्ट हो बालक चंगा हो ।। ४९ ।। अब बालग्रही शांतिके लिये धूप लिखते हैं–बांसका बक्कल तगर, लहसन, निंबके पत्ते, गौका घी, एक धूप यह है। दूसरी-शिवके चढे फूल, मनुष्यके शिरके बाल, गौका घी, अगर गऊका दूध, राई, लाख यह दूसरी है। तीसरी–राई, लाख, नीमके पत्ते, बांसका बक्कल, गौका घी यह तीसरी धूप है। यह तीनों धूप बालकको देनेसे सब बालग्रह नष्ट हो जाते हैं ।५०।। और उबटना विलेपनका यह मंत्र है। इस मंत्रसे बालकके उबटना विलेपन करना चाहिये ।। मंत्रः ।। ॐ शंखशब्देन रमापति खगेश्वर लूनाकर्षणं कुरु स्वाहा ।। ५१ ।।

अथमंत्रंप्रवक्ष्यामित्वभिषेककरंवरम् ।। प्रणवंसर्वसिद्धांतेमातरि-तिपदंवदेत् ।।५२।। इमंग्रहंसंहरतुहुंरोदयचरोदय ।। स्फोटयद्वितयं-गृह्णद्वयमामर्द्दयद्वयम् ।।५३।। शीघ्रंहनद्वयंप्रोक्तमेवंसिद्धोवदेत्ततः ।। रुद्राज्ञापयतिस्वाहास्नानेचैषविधिः स्मृतः ।।५४।। बालकस्यशिरःस्पृष्ट्वांऽजसासर्वग्रहान्हरेत् ।। ५५ खुंखुर्दनसमुच्चार्यखंहुंफट्वह्निबल्लभा ।। नवार्णोयंसमाख्यातोधूपनेसर्वकर्मसु ।। ५६ ।। रक्षरक्षमहादेवनीलग्रीवजटाधर ।। ग्रहैस्तुसहितोरक्षमुंचमुंचकुमारकम् ।।५७।। भूर्जपत्रइमंलिख्यगुटिकांकृत्यबंधयेत् ।। भुजेबालस्य रक्षार्थं सर्वग्रहहरंपरम् ।। ५८ ।। प्रणवं मुकमुकेति एकएकहुवद्वयम् ।। जयद्वयंचआगच्छबालकंठद्वयंवदेत् ।। ५९ ।। वह्निजायावधिमंत्रः सर्वग्रहविमोचनः ।। जपेहोमेतर्पणेचबाल-कस्यसुखावहः ।।६०।। तारंचशक्तिलुयुगान्वितवह्निजायाकोणेषुषड्सु-परिलिख्यषडक्षरांश्च ।। वृत्तत्रयेण परिवीतमिदं हियंत्रंबद्धंतदाशुशिशुरो-दनमुत्क्षिणोति ।।६१।। षट्कोणमध्येचविलिख्यमंत्रेनामान्वितं पूर्णशशांक-युक्तम् ।। षट्कोणमध्येतुषडक्षराणिचंद्रान्वितान्येवमिदंलिखेद्वै ।।६२।।

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे साधारणबालकग्रहरक्षाकथनं नामकादशः पटलः ।। ११ ।।

बालकके अभिषेक करानेमें श्रेष्ठ मंत्रको कहते हैं–ॐ सर्वसिद्धान्ते मातरिमं ग्रहं संहर हुं रोदय स्फोटय स्फोटय गृह्ण आमर्दय आमर्दय शीघ्रं हन हन एवं सिद्धः रुद्राज्ञापयति स्वाहा ।। इस मंत्रसे ग्रहपीडित बालकको स्नान कराये और बालकका शिरस्पर्श करके मन्त्र पढनेसे यह मंत्र बालकग्रहोंको शीघ्र दूर करता

है ।।५२।।५३।।५४।।।।५५।। खुं खुर्दनं खं हुं फटूस्वाहा यह नौ अक्षरका मंत्र है बालकको धूप इस मंत्रसे देना चाहिये ।। ५६ ।। सतावनका जो श्लोक है यह मन्त्र है इसको भोजपत्रमें लिखकर रक्षाके लिये बालकके गलेमें बांधे तो बालकके सब ग्रह नष्ट हों ।। ५७ ।। ५८ ।। ॐ मुक मुक एक एक हुवहुव जय जय आगच्छ आगच्छ बालकं ठःठः स्वाहा इस मन्त्रको जपने से या इससे होम करनेसे या तर्पण करनेसे बालकके सर्व ग्रह दूर हो जाते हैं और सुख हो जाता है ।। ५९ ।।६०।। ॐ ह्री लुलुस्वाहा यह छः अक्षर का मन्त्र है। इसके ६ अक्षर षट्कोण-यंत्रके छः कोणोंमें लिखे ।।और षट्कोण यंत्रके ऊपर तीन आवर्त करने चाहिये उसके मध्यमें पूर्ण चन्द्राकार वृत्त करना चाहिये उसमें मंत्र लिखना चाहिये और बालकका नाम लिखना चाहिये ऐसा यंत्र लिखके बालकके गलेमें बांध-नेसे यह यंत्र बालकके रोदनको दूर करता है।। ६१ ।। ६२ ।।



इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायामेकादशः पटलः ।। ११ ।।

कंदंविदार्याः पयसाप्रपीतंस्तन्यप्रवृद्धिंविदधाति सद्यः ।। गोधूम-धूपःसहगोघृतेनतद्वत्प्रदिष्टःसितया समेतः ।। १ ।। मागधिकायाः-कर्षंसप्ताहंयापयः पिष्टम् ।। ससितंप्रभातेपिबतितस्याः स्रवतः पयोधरौ-सततम् ।। २ ।। अजाजिकर्षंपयसाप्रपिष्टंयासेवतेसप्तदिनानि नारी ।। तस्याःकुचौसंततदुग्धपूर्णौकुमारपुष्टिंकुरुतः सुखेन ।। ३ ।। पिप्पल्याश्च-रजोभिर्गृहधूमरजोयुतः कृतो यूषः ।। श्वेततिलतैलसहितोभुक्तः स्त्रीणां-पयोजनकः ।। ४ ।। कुक्कुरकंदकमूलंविनियतंवदनमध्यगतंनार्या ।। सततं-स्थितंदशाहात्प्रसूतदुग्धप्रदंभवति ।। ५ ।। क्षीरान्नाभ्यां भवं क्षीरं सुश्वे-तसितयान्वितम् ।। क्षीरंसंजनयेन्नार्याःप्रयत्नेननिषेवितम् ।। ६ ।। प्रस्थ-तंडुलरजःसपयस्कंयापिबत्यनुदिनंसघृतेन ।। दुग्धभक्तमशनंविदधाना-साक्षरत्यवितरंबहुदुग्धम् ।। ७ ।। वनकार्पासकेक्षूणांमूलंसौवीरकेनवा ।। विदारीकंदस्वरसंपिबेद्यास्तनवृद्धये ।। ८ ।। शालिषष्टिकदुग्धेक्षुकुशका-सबलान्विता ।। गुंद्रेक्षुबालिकामूली दशैतेस्तन्यवर्धनाः ।। ९ ।। इति-स्तन्यवर्द्धनम् ।।

अब स्तन्यवर्धन प्रयोग लिखते हैं ।। विदारीकंदका चूर्ण ४ मासे गौके दूधके संग पीनेसे तत्काल स्तन्यवृद्धिको करता है और गेहूंका पूडा, घी, मिसरीके खानेसे यह भी स्तन्य वृद्धि करता है ।। १ ।। अथवा एक तोला पीपल छोटी गौके दूधसे पीसकर गौके दूधमें ही छानकर मिसरी डालकर ७ दिन जो स्त्री पीये उसके स्तन निरंतर स्रवने लग जायें ।। २ ।। और जो स्त्री १ तोला सफेद जीराको दूधसे पीसकर ७ दिन दूधसे सेवन करे तो उसके कुच दुग्धसे पूर्ण हो जायें और बालकको तृप्ति करने लायक हो जाये ।। ३ ।। पीपल और गृहधूम इन दोनोंका यूष बनाकर उसमें सफेद तिलीका तेल डालकर जो अदुग्धा स्त्री खाये तो यह योग भी स्तनोंमें दुग्ध पैदा करता है ।। ४ ।। करोंदेकी जडको स्त्री दश दिन निरन्तर मुखमें रक्खे तो बहुत दूध उतरने लग जाये ।। ५ ।। जो स्त्री निरंतर सफेद बूरा डालकर खीर खाया करे तो उसके स्तनोंमें बहुत दूध होये ।। ६ ।। एक सेर चावलोंके आटासे घी दूधके उतरने लग जाये ।। ७ ।। बनकी कपासकी जड और ऊखकी जड इनको कांजीके पानीसे स्त्री पीये अथवा विदारीकंदके स्वरसको पीये तो उसके दूध बहुत उतरने लग जाये और किसी जगह "विदारीकंदं सुरया" ऐसा पाठ है उसका यह अर्थ करना-दूध बढानेके लिये विदारीकंदको मदिराके संग पीये ।। ८ ।। चावल पुराने १ या सांठी चावल २ दूध ३ ऊख ४ कुशाकी जड ५ कांसकी जड ६ खरैटी ७ गूंदनी ८ तालमखाना ९ सफेद मुसली १० यह दश द्रव्य दूधके बढानेवाले हैं ।। ९ ।।

यथोक्तांकारयेद्धात्रींनवयौवनसंस्थिताम् ।। शुचिंनीरोगामक्लिशांजीववत्सामलंकृताम् ।। १० ।। मध्यप्रमाणांश्यामांगींविशेषाच्छीलशोभिताम् ।। कुलजांसुकुचांदुग्धांशुद्धचित्तामलोलुपाम् ।। ११ ।। सुंदरांगीं हसद्वक्त्रांवत्सलांगर्ववर्जिताम् ।। स्तन्यमस्याः परिदत्तंबालानांपुष्टिकारकम् ।। १२ ।। शुद्धेस्तन्येनिरोगःस्यादन्यथारोगसंभवः ।। शीतलंविमलंक्षिप्तमेकीभावंजलेभवेत् ।। नचभिद्यतितच्छुद्धंस्तन्यंफेनविवर्जितम् ।। १३ ।। एतादृशेनबालस्यकश्चिद्रोगोनजायते ।। यदावामातुरेवास्तिस्तन्यंशुद्धंप्रदापयेत् ।। १४ ।। मिथ्याहारविहाराभ्यांदुष्टावातादयः स्त्रियाः ।। दूषयंतिपयस्तेनबालरोगस्यसम्भवः ।। १५ ।। तस्मात्प्रयत्नतो धात्र्याःपथ्यमेकान्ततोहितम् ।। तस्याश्च मनसःकष्टंकदाचिन्नापिकारयेत् ।। १६ ।।

इतिधात्रीलक्षणम्

बालकके लिये धाय जैसी शास्त्रमें लिखी है वैसी करनी चाहिये कैसी होनी चाहिये उसको लिखते हैं। प्रथम जवान उमरकी हो दूसरे पवित्र रहती हो

और उसके शरीरमें किसी तरहका रोग नहीं कृश नहीं हो बालक सब जीवते हों और आभूषण पहरे हुए हो ।। १० ।। न बहुत लंबे शरीरकी हो, न छोटे शरीरकी हो और सुंदर सर्वगात्र जिसके हों और विशेषतासे शीलवाली हो अच्छे कुलकी हो और जिसके सुंदर कुच हो अच्छा निर्मल दूध स्तनोंमें हो और खाने पीनेमें बहुत लोलुपा नहीं हो ।। ११ ।। जिसका मनोहर अंग हो और हास्ययुक्त मुख हो स्नेह-वाली हो और जिसको अभिमान न हों ऐसी धाय करनी चाहिये ऐसी धायका दुग्ध बालकको पुष्ट करता है ।। १२ ।। स्त्रीका दुग्ध शुद्ध होनेसे बालकको रोग नहीं होता और अशुद्ध होनेसे रोगका उदय करता है इस लिये शुद्ध दुग्धके लक्षण कहते हैं। दुग्ध शीतल हो, और जलमें डाला मिल जाये भेदको नहीं प्राप्त हो और जिसमें झाग नहीं हो ऐसा दुग्ध शुद्ध होता है ।। १३ ।। ऐसा दुग्ध पीनेसे बालकके कोई रोग नहीं होता है और जो माताकाही दुग्ध शुद्ध हो, तब वही दुग्ध दना चाहिये ।। १४ ।। स्त्रीके मिथ्या आहारसे और मिथ्याविहारसे वातादिक दोष कुपित हुए दुग्धको दूषित कर देते हैं उसी दूषित दुग्धसे, बालकको रोगका संभव हो जाता है ।। १५ ।। इसी कारणसे धायको या माताको बडे जतनसे पथ्य पदा-र्थोका सेवन कराये और उस धायके चित्तको किसी वक्त न बिगडने दे खूब प्रसन्न रखे ।। १६ ।।

इति धात्रीलक्षणम् ।।

अमृतासप्तपणत्वक्क्वाथः स्तन्यस्यसिद्धये । पाययेदथवापाठा-युक्तंनिष्क्वाथ्यरोहितम् ।। १७ ।। भूनिंबपाठामधुकंमधूकंनिष्क्वाथ्यतो येमधुचार्धकर्षम् ।। प्रक्षिप्यपीतंशिशुरोगशांतिदुग्धस्यशुद्धिंच करोति सद्यः ।। १८ ।। पंचकोलमधुकैः सकुलत्थैर्बिल्वमूलतगरैः कुचलेपः ।। निर्मि-तोहितकरोबहुवारंदुग्धशुद्धिमयमाशुकरोति ।। १९ ।। पाठारसांजनंमूर्वा-सुरदारुप्रियंगवः ।। एभिःस्तनस्यवैवर्ण्यपूतिगंधिहरोमतः ।। २० ।। मुस्ता-पाठाशिवाकृष्णाचूर्णंदुग्धेनपाययेत् ।। एतेनसहसाशुद्धिंध्रुवंस्तत्यस्य-जायते ।। २१ ।। त्रायमाणामृतानिंबपटोलैस्त्रिफलान्वितैः ।। स्तनप्रलेपतः शीघ्रंस्तन्यशुद्धिः प्रजायते ।। २२ ।। पूर्वमालेपनेशुष्कंप्रक्षाल्यनिर्मला-म्बुना ।। स्तनौसदुग्धौविधिपानापाययेवदृालकंततः २३ ।। इतिस्तन्य-शुद्धिः ।। शिशोरोगान्परीक्षेतरोदनान्मुखवर्णतः ।। स्तनाकर्षणतश्चा-पिततः कुर्याच्चिकित्सितम् ।। २४ ।। मात्रयालंघयेद्धात्रींशिशोर्नेष्टं-विशोषणम् ।। सर्वनिवार्य्यंतेर्भस्य क्वचित्स्तन्यं न वारयेत् ।। २५ ।।

गिलोय, शातोन, दालचीनी इनका क्वाथ दुग्धकी शुद्धिके लिये स्त्रीको

पिलावे अथवा कश्मीरी, पट्टा, बहेडेकीजड इनका क्वाथ करके स्त्रीको प्यावे ।। १७ ।। चिरायता, कश्मीरी, पट्ठा, मुलहटी, महुवा इनके क्वाथमें आधा तोला सहत डालकर स्त्री पीये बालकका रोग शांत हो और दुग्धकी शुद्धि हो ।। १८ ।। पीपल, पिप्पलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, मुलहटी, कुलथी, बेलकी जड, तगर इन औषधियोंको जलमें पीसकर स्तनोंमें ऊपर लेप कई बार करनेसे दुग्ध शुद्ध हो जाता है ।। १९ ।। कश्मीरी पट्ठा, रसोत, मोरवेल, देवदारु, प्रियंगु इन द्रव्योंका स्तनों-पर लेप करनेसे यह लेप स्तनकी विवर्णताको और दुर्गन्धको हरता है ।। २० ।। नगरमोथा, कश्मीरी पट्ठा, हरड, पीपल, इनका चूर्ण दुग्धके संग पीनेसे शीघ्र दुग्धशुद्धि हो जाये ।। २१ ।। त्रायमाण, गिलोय, नींबकी छाल; परवल, हरडकी छाल, बहेडा, आंवला इन द्रव्योंका स्तनोंपर लेप करनेसे बहुत जल्दी दुग्धशुद्धि हो जाती है ।। २२ ।। पहिले का लेप सूखजाने पर निर्मल जलसे धोकर पीछे विधिपूर्वक बालकको स्तनपान कराये ।। २३ ।। इति दुग्धशुद्धिः ।। प्रथम बालकके रोनेसे, मुखवर्णसे, स्तनके खींचनेसे बालकके रोगका निश्चय करे पीछे चिकि-त्साको करे ।। २४ ।। बालककी बीमारीमें अनुमान माफिक धायको लंघन कराये बालककी शोषणी क्रिया न करे बालककी सर्व वस्तुका निवारण कर दे और दुग्धका निवारण किसी समय में नहीं करे ।। २५ ।।

बातेनध्मापितांनाभिसहजांतुंडसंज्ञिताम् ।। मारुतघ्नैः प्रशमयेत्स्नेह स्वेदोपतापनैः ।। २६ ।। मृत्पिडेनाग्निवर्णेनक्षीरसिक्तेनसोष्मणा ।। स्वेदयेदुत्थियां नाभिंशोफस्तेनोपशाम्यति ।। २७ ।। दग्धेनच्छागशकृताना-भिपाकेऽवगुंठनम् ।। लेपंक्षीरेणवाशस्तं पर्णत्वग्रेणुचन्दनैः ।। २८ ।। नाभिपाकेनिशारोधः प्रियंगुमधुकैःकृतम् ।। तैलमभ्यंजनेशस्तमेभिर्वाप्यव-चूर्णनम् ।। २९ ।। बालोयोचिरजातः स्तन्यंगृह्णातिनैवतस्याशु ।। सैंधवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केनघर्षयेज्जिह्वाम् ।। ३० ।। गुदपाकेतुबाला-नांपित्तघ्नींकारयेत्क्रियाम् ।। रसांजनंविशेषेणपानालेपनयोर्हितम् ।। ३१ ।। जातीप्रबालकुसुमानि समाक्षिकाणियोज्यानिबालकजनस्यमुखप्रपाके ।। पाकेगुदस्यचरसांजनलोधचूर्णंयोज्यंभिषग्भरुपदिष्टमिदंशिलूनाम् ।। ३२ ।। आम्रसाररजसासहसाऽस्तंयातिनैतिचशिशोर्मुखपाकः ।। गैरिकेणमधुनाथ-चसर्वैः श्वेतसारखदिरांजनयोगैः ।।३३।। बालकस्यापिसुस्नेहैरभ्यंगंसमुपा-चरेत् ।। कोष्णेन पयसास्नानंफलवित्कारयेत्ततः ।।३४।। दुष्टग्रहगृहीता-नांनृणांनेष्टंतुदर्शनम् ।। विशेषाद्रक्षयेदृष्टिदोषंरक्षादिभिः शिशोः ।।३५।।

इति बालकस्य नाभिगुदमुखपाकचिकित्सा ।

अब बालकके रोगोंकी चिकित्सा लिखते हैं—वायुसे बालककी नाभि फूल जाती है। और नाभिमें पीडा बहुत हो, उसको "तुंडसंज्ञक" नाभी कहते हैं ।। अब चिकित्सा लिखते हैं। वायुके दूर करनेवाले स्नेह, स्वेद, उपतापन इत्यादिकोंसे नाभिको स्वेदन करे ।। २६ ।। या मिट्टीके डलेको अग्निमें खूब तप्त करे जब अग्निकी तरह उसका वर्ण हो जाये तब उसको दूधमें बुझायके कपडेमें लपेटके नाभिको सैंके जिससें नाभिका शोजा शांत हो जाये ।। २७ ।। अथवा बकहीकी विष्ठाको जलाकर उस भस्मको नाभिपर लगाकर हाथकी अंगुलीसे दबा देनेसे अथवा नागरपान, दालचीनी मेहँदीके बीज, लालचंदन इनको दूधमें पीसके नाभिपर लेप करनेसे नाभिपाक अच्छा हो जाता है ।। २८ ।। नाभिपाकमें हलदी, लोध मेहंदी, मुलहटी इन द्रव्योंसे तैल पकाके लगावे अथवा इन्हीं द्रव्योंका चूर्ण करके, नाभिपर लगावे ।। २९ ।। जो बालक जन्म होनेके बाद बहुत कालतक दूध न पीये तब सैंधव नमक, आंवला, सहत, घृत, हरडेकी छाल इन द्रव्योंका कल्क करके बालककी जिह्‌वाको घर्षण करे ।। ३० ।। बालककी गुदापाक होनेसे पित्तनाश करनेवाली क्रिया करनी चाहिये। और रसोतपीनेमें लगानेमें विशेषता करके हितकारी हैं ।। ३१ ।। बालकके मुखपाकरोगमें चमेलीके पत्ते और फूल दोनों पीसकर सहतमें मिलाके मुखमें लगाना चाहिये अथवा इसको उबालके और छानकर सहत डालकर कुल्ला करना चाहिये और बालककी गुदापाकमें रसोत, लोध इनका चूर्ण अवगुंठन करना चाहिये ।। ३२ ।। आम्रसारके चूर्णसे अथवा चमेलीके पत्तोंके चूर्णसे या गेरू और सहतसे अथवा कपूर, कत्था, अंजन यह चार योग हैं अलहदा अलहदासे बालकका मुखपाक जाता रहता है और समस्त द्रव्योंसे भी जाता रहता है ।। ३३ ।। और बालकको अच्छे अच्छे चंदनादिक लाक्षादिक तैलोंसे अभ्यंग कराना चाहिये पश्चात् गरम जलसे स्नान करा देना चाहिये ।। ३४ ।। और बालकको दुष्टग्रहगृहीत पुरुषोंका दर्शन नहीं कराये और विशेषरूपसे मंत्र यंत्रोंसे बालकके दृष्टिदोष नहीं होने देवे ।। ३५ ।।

इति बालकस्य नाभिगुदमुखपाकचिकित्सा।

अथ शिशूनां ज्वरचिकित्सा लिख्यते ।। मुस्ताभया निंबपटोलयष्टीक्वाथः शिशूनां ज्वरनाशकारी ।। तद्वद्गुडूची विहितश्चसारः सुप्रत्ययोयं मधुनावलीढः ।। ३६ ।। सितामधुभ्यांकटुकीचलीढा साध्मानमुग्रंज्वरमाशुहन्यात् ।। तत्कल्कलेपश्चकृतः शिशूनां मुहुर्मुहुर्दोषविनाशहेतुः ।। ३७ ।। क्वाथः कृतः पद्मकर्निबधान्यच्छिन्नोद्भवालोहितचंदनोत्थः ।। ज्वरं जये सर्वभवं कृशानुधात्रीशिशुभ्यां प्रकरोतिपीतः ।। ३८ ।। अमृतैकोषितानोरे यावद्यामाष्टकंभवेत् ।। शिशूनांशमयत्याशु सर्वदोष-

भवंज्वरम् ।। ३९ ।। यष्टीमधुतुगाक्षीरीलाजांजनसिताकृतः ।। लेहः प्रदत्तोबालानामशेषज्वरनाशनः ।। ४० ।। क्वाथः स्थिरागोक्षुरविश्वबालक्षुद्राद्वयच्छिन्नरुहाकिरातैः ।। पातज्वरंसंशमयेत्प्रपीतोबालेन धात्र्या च कृशानुकारी ।। ४१ ।। पंचमूलीकृतः क्वाथः पीतो वातज्वरापहः ।। तद्वच्छिन्नरुहाद्राक्षागोपकन्याबलाभवः ।। ४२ ।। गुडूचीसारिवोरचन्दनोत्पलपद्मकैः ।। परूषमधुकाश्मर्यधन्याकैर्विहितोजयेत् ।। ४३ ।।

अब बालकोंके ज्वरकी चिकित्सा लिखते हैं–नागर मोथा, हरडकी छाल; नीमकी छाल, पलवल, गिलोय इन औषधियोंका क्वाथ बालकोंके ज्वरको नाश करता है ऐसे ही गिलोयका चूर्ण या स्वरस सहतसे चाटनेसे ज्वरको नाश करता है यह प्रत्यक्ष फल देनेवाला है ।। ३६ ।। मिसरी सहते कुटकीके चूर्णको चाटे तो आध्मानसहित ज्वरको नाश करे और कुटकीका कल्कभी बालकके लेप करनेसे ज्वरका नाश करता है ।। ३७ ।। पद्मकाष्ठ, नींबकी छाल, गिलोय, लालचन्दन इन द्रव्योंका क्वाथ बालक, बालककी माताको पिलानेसे त्रिदोषके ज्वरको दूर करे और भूखको पैदा करे ।। ३८ ।। खाली गिलोय आठ पहर भिगोकर पीसकर पीनेसे बालकके सब तरहके ज्वरको दूर करता है ।। ३९ ।। मुलहटी, सहत, वंशलोचन, धानकी खील, रसोत कोई वैद्य अंजन करके शुद्ध सुरमाको ग्रहण करते हैं और मिश्री इनका अवलेह बालकको देनेसे अशेषतासे ज्वरका नाश करनेवाला है ।। ४० ।। शालपर्णी, गोखरू, सूंठ, नेत्रवाला, दोनों छोटी बडी कटेहलीकी जड, गिलोय चिरायता इनसे किया हुआ क्वाथ बालकको और धायको पिलानेसे बालकके वातज्वरको शमन करे, तेज करे ।। ४१ ।। लघुपंचमूलका क्वाथ पान किया वातज्वरको दूर करता है। शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटेहली, बडी कटेहली, गोखरू, यह लघुपंचमूलके द्रव्य हैं और ऐसेही गिलोय, मुनक्का, सिरयाई, खरेंटी इनका क्वाथ वातज्वरको दूर करता है ।। ४२ ।। गिलोय, सिरयाई, खस, लाल चंदन, नीलोफर, पद्मकाष्ठ, फालसा, मुलहटी, गंभारी,धनियां इन द्रव्योंका किया क्वाथ पीनेसे वातज्वरको जीतता है ।। ४३ ।।

शरीरवोत्पलकाश्मर्यच्छिन्नापद्मकर्पटः ।। क्वाथः पीतोनिहंत्याशुशिशूनांपैत्तिकंज्वरम् ।। ४४ ।। मुस्तापर्पटकोशीरवारिपद्मकसाधितम् ।। शीतंवारिनिहंत्याशुतृष्णादाहवमिज्वरान् ।। ४५ ।। मधूकंचंदनंद्राक्षाधान्यकंसदुरालभम् ।। एतैः क्वाथःकृतोहन्त्याद्दाहंवातज्वरंतथा ।। ४६ ।। मुस्तकंचन्दनंवासाह्रीबेरंयष्टिकामृता ।। एषांक्वाथोऽस्त्रपित्तघ्नस्तृष्णादाहज्वरापहः ।। ४७ ।। वासापर्पटकोशीरनिंबभूनिंबसाधितः ।।

क्वाथोहंतिवमिश्वासकासपित्तज्वराच्छिशोः ।। ४८ ।। अभयामलकी-कृष्णाचित्रकोयंगणोमतः ।। दीपनः पाचनो भेदीसर्वश्लेष्मज्वरापहः ।। ४९ ।। कट्फलंपुष्करंभृंगीपिप्पलीमधुनासह ।। एषांलेहोज्वरंश्वासं-कासंमंदानलं जयेत् ।। ५० ।। कटुकंकट्फलंभृंगीपुष्करंपिप्पलीतथा ।। समस्तानेकशोवापिद्विशोवापिभिषग्वरः ।। ५१ ।। एतांश्चूर्णीकृतानद्यान्म-ध्वार्द्रकरसप्लुतान् ।। कफज्वरारुचिश्वासच्छर्दिशूलापहाञ्छिशुः ।। ५२ ।। क्षौद्रोपकुल्याः संगस्तुश्वासकासज्वरापहः ।। प्लीहानं हंतिहिक्कांचबाला-
क्षौद्रोपकुल्याः संगस्तुश्वासकासज्वरापहः ।। प्लीहानं हंतिहिक्कांचबाला-
नांतुप्रशस्यते ।। ५३।।

सिरयाई, नीलोफर, गंभीरी, गिलोय; पद्मकाष्ठ, पित्तपापडा इनसे किया क्वाथ, पान करनेसे बालकोंके पित्तज्वरको नष्ट करता है ।। ४४ ।। नागरमोथा, पित्तपापडा, खस, नेत्रवाला, पद्मकाष्ठ इन द्रव्यों से सिद्ध किया क्वाथ शीतल करके पान करनेसे प्यासको, दाहको, वमनको, ज्वरको शीघ्र नष्ट करता है ।। ४५ ।। मुलहटी, लालचंदन, मुनक्का; धनियां धमासा इन से किया क्वाथ पीनेसे दाहको वातज्वरको नाश करता है ।। ४६ ।। नागरमोथा, लालचंदन, वांसाके पत्ते, नेत्रवाला, मुलहटा, गिलोय, इनका क्वाथ रक्तपित्तका, तृषाका, दाहका, ज्वरका नाश करनेवाला है ।। ४७ ।। वांसा, पित्तपापडा, खस, नींबकी छाल, चिरायता, इन करके साधित किया क्वाथ बालकको पिलानेसे वमनको, श्वासको, कासको, पित्तज्वरको नष्ट करता है ।। ४८ ।। हरडैकी छाल; आंवला, पीपल छोंटी, चीता इन चार औषधियोंका योग यह दीपन पाचनगण कहा है दस्तावर है; संनिपातज्वरको, कफज्वरको नष्ट करता है ।। ४९ ।। कायफल; पोहकरमूल, काकडासींगी इनका सहतसे चाटना ज्वरको, श्वासको, कासको, मंदाग्निको जीतता है ।। ५० ।। मिरच, कायफल, काकडासींगी, पोहकरमूल, पीपल छोटी इन द्रव्योंमेंसे, एकको या दोको या सबको चूर्ण करके अदरखका अर्क और सहतके संग चाटनेसे बालकके कफज्वर, अरुचि , श्वास, छर्द्रि, शूल यह सब नष्ट हो जाते हैं ।। ५१ ।। ।। ५२ ।। छोटी पीपलको सहतसे चाटनेसे श्वास कास और ज्वर इनको हरता है प्लीहा, हिचकीको नष्ट करता है। इसका चाटना बालकको बहुत अच्छा है ।। ५३ ।।

मधुकशारिवाद्राक्षा मधूकंचंदनोत्पलम् ।। काश्मरी पद्मकंलोध्रं-त्रिफलापद्मकेसरम् ।। ५४ ।। परूषकं मृणालंचन्यसेदुत्तमवारिणि ।। मधुलाजासितायुक्तंतत्पीतमुषितंनिशि ।। ५५ ।। वातपित्तज्वरंदाहं

तृष्णामूर्च्छारुचिभ्रमान् ।। शमयेद्रक्तपित्तंचजीमूतमिवमारुतः ।। ५६ ।। कैरातोजलदश्छिन्नापंचमूलीलघुस्तथा ।। एषाकषायोहंत्याशुवातपित्तोत्तरं ज्वरम् ।। ५७ ।। मुस्तापर्पकंछिन्नाकिरातंविश्वभेषजम् ।। एषांकषायोदातव्योवातपित्तज्वरापहः ।। ५८ ।। उशीरंमधुकं द्राक्षा काश्मरी नीलमुत्पलम् ।। परूषकंपद्मकंचमधूकंमधुकंबला ।। ५९ ।। एभिः कृतः कषायोयंवातपित्तज्वरंजयेत् ।। प्रलायमूर्च्छासंमोहतृष्णापित्तज्वरापहः ।। ६० ।। त्रिफला पिचुमंदश्चपटोलंमधुकंबला ।। एभिः क्वाथः कृतः पीतः पीतश्लेष्मज्वरापहः ।। ६१ ।। अमृतेन्द्रयवोरिष्टंपटोलंकटुरोहिणी ।। नागरंचंदनंमुस्तंपिप्पलीचूर्णसंयुतम् ।। ६२ ।। अमृताष्टकमित्येतत्पित्तश्लेष्मज्वरापहम् ।। हृल्लासारोचकच्छर्द्दितृष्णादाहनिवारणम् ।। ६३ ।।

मुलहटी, सिरयाई मुनक्का, महुएके पुष्प, लालचंदन, नीलोफर, गंभारी, पद्मकाष्ठ, लोथ, हरडैकी छाल, बहेडा आंवला, कमलगट्टा नागकेशर, पद्मकेशर इस पदसे कमलकेशरको भी ग्रहण करते हैं ।। ५४ ।। फालसा, कमलनाल, धानकी खील, मिसरी इन द्रव्योंको रात्रिमें भिगो रक्खे प्रातःकाल कपडेसे छानकर शहद डालकर पिलानेसे बालकके वातपित्तज्वरको, दाहको, प्यासको, मूर्च्छाको अरुचिको, भ्रमको, रक्तपित्तको शमन करता है, जैसे मेघको वायु शमन कर देता है उसी तरह ।। ५५ ।। ५६ ।। चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, दोनों कटेहली, गोखरू इनका क्वाथ वातपित्तादिक ज्वरको नष्ट करता है ।। ५७ ।। नागरमोथा, पित्तपापडा, गिलोय, चिरायता, सोंठ इनका क्वाथ बालकको देनेसे वातपित्तज्वरको नष्ट करता है ।। ५८ ।। खस, मुलहटी मुनक्का गंभारी, नीलोफर, फालसा, पद्मकाष्ठ, मुलहटी, महुएके फूल, खरैंटी ।। ५९ ।। इन द्रव्यों का किया क्वाथ पीनेसे वातपित्तज्वरको जीतता है, प्रलाप मूर्च्छा, तृषा, पित्तकफज्वर इनको नष्ट करता है ।। ६० ।। अन्योपायः ।। हरडै बडी, बहेडा, आंवला, नींबकी छाल, पलवल, मुलहटी, खरैंटी इन द्रव्योंसे किया क्वाथ पिया हुआ पित्तश्लेष्मज्वरको नष्ट करता है ।। ६१ ।। गिलोय, इंद्रजौ, नींबकी छाल, पलवल, कुटकी, साठें, लालचंदन, नागरमोथा इन द्रव्योंका क्वाथ करके पीपलका चूर्ण उसपर बुरकाके बालकको पिलाये ।। ६२ ।। यह अमृताष्टक पित्तश्लेष्मज्वरको, हृल्लासको, अरुचिको, छर्दिको तृष्णाको, दाहको निवारण करता है ।६३।

मुस्तामृतापर्पटपुष्कराह्वैः पटोलधन्याककिराततिक्तैः ।। सचंदनोशीरबलाजकाख्यैः क्वाथःपरंपत्तिकफज्वरघ्नः ।। ६४ ।। हृल्लासतृष्णामोहांश्चारुचिदाहं च छर्द्दनम् ।। पार्श्वव्यथांहरेत्सद्यः प्रयोगोयंसुशो-

भनः ।। ६५ ।। धान्याकचंदनपद्मकमुस्ताशक्रयवामलकैः सपटोलैः ।। शीतकषायममुंखलुदद्याद्बालकपित्तकफज्वरहृत्स्यात् ।। ६६ ।। वासारसः क्षौद्रसितासमेतो ज्वरंहरेत्पित्तबलासजातम् ।। श्वासंसकासंचवमिंसदाहंसकामलंहंतिसरक्तपित्तम् ।। ६७ ।। सारग्वधः सातिविषः समुस्तस्तिक्ताकषायोज्वरमाशुहन्यात् ।। सामंसशूलं सवमिं सदाहं साध्मानबंधं सकफंसवातम् ।। ६८ ।। किराततिक्तंकंमुस्तंगुडूचीविश्वभषेजम् ।। चातुर्भद्रकमित्याहुर्वातश्लेष्मज्वरापहम् ।।६९।। मुग्दतंडुलसंसिद्धंकेवलैर्वामकुष्ठकैः ।। पथ्यमत्रभिषक् दद्याद्यूषंवातकफज्वरे ।।७०।। दशमूलीकृतः क्वाथः पिप्पलीचूर्णसंयुक्तः।। मोहंसंशमयेत्तद्वत्संनिपातं ज्वरं तथा ।।७१।।

नागरमोथा, गिलोय, पित्तपापडा, पोहकरमूल, पलवल, धनियां, चिरायता, लालचन्दन, खस, खरैंटी, नेत्रवाला, इनसे किया क्वाथ पीनेसे पित्तकफज्वरक, नाश करता है ।। ६४ ।। हृल्लासको, तृष्णाको, मोहको, अरुचिको, दाहको, छर्द्दिको, पार्श्व शूलको तत्काल हरता है, यह प्रयोग बहुत सुन्दर वैद्योंने कहा है ।। ६५ ।। अन्यः ।। धनियां, लालचन्दन पद्माख, नागरमोथा, इंद्रजव आंवला, पलवल इन द्रव्योंका क्वाथ ठंढा करके पीनेसे बालकके पित्तकज्वरको हरता है ।। ६६ ।। बांसाके पत्तोंका पुटपाकद्वारा रस निकालकर मिसरी, शहतके संग चाटनेसे बालकका पित्तकफज्वर, श्वास, कास, छर्दि, दाह, कामला, रक्तपित्त इन सबको शीघ्र हरता है ।। ६७ ।। अन्यः ।। अमलतास, अतीस, नागरमोथा, कुटकी इनका क्वाथ शूलसहित कच्चे ज्वरको, वमनको दाहको, अफरेको, बंधेको, कफको, वायुकोनष्ट करता है ।। ६८ ।। चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ इनको वैद्यचातुर्भद्र कहते हैं इनका क्वाथ करके पीनेसे वातश्लेष्मज्वरको नष्ट करता है ।। ६९ ।। मूंग चावल से सिद्ध किया यूष अथवा केवल मोठसे किया यूष वातकफज्वरमें पथ्य है बालकको ज्वरमें वैद्य देये ।। ७० ।। [1]दशमूकरके किया क्वाथ पीपलका चूर्ण ऊपर डालकर बालकको पिलानेसे मूर्च्छाको संनिपातज्वरको शमन करता है ।। ७१ ।।

छिन्नासटीपुष्करमूलतिक्ताः भृंगीसपाठामृतवल्लरीच ।। दुरालभाविश्वकिराततिक्ताः समस्तदोषज्वरहृग्दणोयम् ।। ७२ ।। भूनिंब-

१ दशमूल लक्षणम्–श्रीफलः सर्वतोभद्रा पाटलागणकारिका ।। स्योनाकः पंचमिश्चेतैः पंचमूलं महन्मतम् ।। १ ।। शालपर्णी पृश्निपर्णी वार्ताकी कंटकारिका ।। गोक्षुरः पंचभिश्चैतैः कनिष्ठं पंचमूलकम् ।। २ ।। उभाभ्यां पञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ।।

दारुदश मूलमहौषधाब्दतिक्तेन्द्रबीजधनिकेभकणाकषायः तंद्राप्रलापकसनारुचिदाहमोहश्वासादियुक्तमखिलंज्वरमाशुहंति ।। ७३ ।। वासाव्याघ्रीकणालेहः शीतज्वरविनाशनः ।। तद्वत्क्षुद्रामृतानंतातिक्तभूनिंबसाधितः ।। ७४ ।। गुडूचीविहितक्वाथः कणाचूर्णसमान्वतः ।। ऐकाहिकंज्वरंहंतिकासश्वासादिदूषितम् ।। ७५ ।। द्राक्षापटोलत्रिफलापिचुमंदवृषैःकृतः ।। क्वाथएकाहिकंहंतिपरार्थमिवदुर्जनः ।। ७६ ।। आमंत्र्य पूर्वं शुचिना गृहीतं मयूरमूलं करकोष्ठवद्धम् ।। प्रातस्तथासूर्यदिनेनिहत्यादैकाहिकंशोणितसूत्रबद्धम् ।। ७७ ।। ऊर्णनाभ्याकृतं जालंरक्तसूत्रसमन्वितम् ।। मिष्टतैलमृतं कृत्वा कज्जलंतेनकारयेत् ।। तेनांजिताक्षः क्षिप्रेणहन्यादेकाद्शोज्वरान् ।। ७८ ।। ज्वरं भूताभिषंगोत्थंरक्षा मंत्रादिभिर्जपेत् ।। विषघ्नौषधयोगेगविषोत्थमपि बुद्धिमान् ।। ७९ ।।

गिलोय, कचूर, पोहकरमूल, कुटली, काकडासींगी, कश्मीरी पट्ठा, गिलोय, थमासा, सोंठ, चिरायता नींबकी छाल, इन औषधियोंका गण सब दोषोंको, सर्वज्वरोंको नाश करनेवाला है इस योगमें दो बार गिलोय पढी है इसलिये दूनी लेनी चाहिये ।। ७२ ।। अन्यः ।। चिरायता, देवदारु, दशमूल, सोंठ, नागरमोथा, कुटकी, इंद्रजौ, धनियां, गजपीपल इनका क्वाथ तंद्रा, प्रलाप, कास, अरुचि, दाह, मूर्च्छा, श्वास इनसे युक्त ज्वरको शीघ्र नाश करता है ।। ७३ ।। बांसा, कटेहलीकी जड पीपल इनका अवलेह शीत ज्वरको नाश करता है और कटेहलीकी जड, गिलोय, जवासा, कुटकी, चिरायता, इन्हीसे किया क्वाथ भी उसी तरह शीतज्वरको नाश करता है ।। ७४ ।। गिलोयका क्वाथ पीपलके चूर्णसहित पीनेसे कासश्वासादिकोंसे दूषित ऐकाहिक ज्वरको नष्ट करता है ।। ७५ ।। अन्यः ।। मुनक्का, गिलोय, हरडैकी छाल, बहेडा, आंवला, नींबकी छाल, बांसाके पत्ते इनसे किया क्वाथ ऐकाहिक ज्वरको ऐसे नाश करता है कि जैसे दुर्जन परद्रव्यको नष्ट कर देता है ।। ७६ ।। अन्योपायः ।। शनिवारको मयूरशिखाजडीको निमंत्रित कर आये रविवारको प्रातःकाल उपाडके ले आये फिर लाल डोरीसे हाथ कमरमें बांधनेसे ऐकाहिक ज्वर नष्ट हो जाता है ।। ७७ ।। अन्यः ।। मकडीके जालेको लेकर लाल सूत ऊपर लपेटके बत्ती बनाले फिर तिलोंके तेलमें भिगोकर कज्जल लोहेकी पत्तीपर उतारले वह कज्जल नेत्रमें डालनेसे ऐकाहिकादिक सब ज्वरको नष्ट करता है ।। ७८ ।। भूतादिकोंके अभिनिवेशसे ज्वर हो उसको रक्षा मंत्रादिकोंसे जीते और जो विषैली वस्तु खानेसे ज्वर हो उसको विषके नाश करनेवाली औषधिसे जीते ।। ७९ ।।

निंबपत्रामृतानन्तापटोलेन्द्रयवैः कृतः ।। क्वाथः सततकं हन्यात्सुप्रभुर्व्यसनंयथा ।। ८० ।। गुडूचीचन्दनोशीरधान्यनागरतोयदैः ।। क्वाथस्तृतीयकंहन्याच्छर्करामधुमिश्रितः ।। ८१ ।। पलंकषावचाकुष्ठं गजचर्माविचर्मच ।। निंबस्यपत्रंमाक्षीकंसर्पिर्युक्तंतु धूपनम् ।। ज्वरवेगंनिहंत्याशु बालानांतुविशेषतः ।। ८२ ।। रसोनहिंगुलवणैः शृंगीमरिचमाक्षिकैः ।। धूपः सर्वग्रहघ्नोयं कुमाराणां ज्वरापहः ।। ८३ ।। निर्मोकामरदारुहिंगुमरिचारिष्टच्छदं माक्षिकं निर्माल्यंनरकेशसर्षपवचागंधंरसोनःशिला ।। यष्टी गुग्गुलुकुष्ठपिच्छलवणामार्जारविष्ठाघृतं सर्जोरुद्रजटार्कपत्रजलदं धूपोवरोयमहान् ।। ८४ ।। निंबकुष्ठवचायष्टिसिद्धार्थकपलंकषैः ।। सर्पिर्लवणसर्पत्वग्यवैर्धूपोज्वरापहः ।। ८५ ।। निर्गुंडयाःसहदेव्याश्चकटौबाद्धंजटाद्वयम् ।। प्रातरादित्यवारेचसर्वज्वरविनाशकृत् ।। ८६ ।। कन्याकर्तितसूत्रेणबद्धापामार्गमूलिका ।। ऐकाहिकंज्वरं हंतिशिखायामपि वेगतः ।। ८७ ।। कर्णबद्धारवौश्वेततुरंगरिपुमूलिका ।। सर्वज्वरहराश्वेतमंदारस्यचमूलिका ।। ८८ ।। काकमाचीशिफाकर्णेबद्धारात्रिज्वरापहा ।। पाणिस्थंवृकवंदाकमूलंवितनुतेशिम् ।। ८९ ।। ॐनमोवानरस्यमुखंघोरमादित्यसमतेजसम् ।। तस्यस्मरणमात्रेणज्वरंनश्यतितत्क्षणात् ।। ९० ।।

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे ज्वरहरणोपायकथनं नाम
द्वादशः पटलः ।। १२ ।।

अन्यः ।। नीमकी छाल, पतरज, गिलोय, जवासा, पलवल, इंद्रजौ इन द्रव्योंसे किया क्वाथ सततज्वरको नष्ट करता है जैसे ईश्वर सर्व दुःखोंको नाश करते हैं एवम् ।। ८० ।। गिलोय, लालचंदन, खस, धनियां, सूंठ, नागरमोथा, इनसे किये क्वाथमें मिसरी, सहत डालकर बालकको पिलानेसे तृतीयक ज्वरको नष्ट करता है ।। ८१ ।। गूगल, वच, कूट, हाथीका चमडा, भेडका चमडा, नीमके पत्ते, सहत, घी इन सब द्रव्योंको कूटकर धूप देनेसे ज्वरके वेगको शीघ्र नाश करता है । बालकोंका विशेषतासे ज्वर नाश करता है ।। ८२ ।। अन्यो धूपः ।। लहषन, हींग, नमक, काकडासिंगी मिरच सहत, इनसे किया धूप संपूर्ण ग्रहोंका नाश करनेवाला है और बालकोंका ज्वर नाश करनेवाला है ।। ८३ ।। अन्योबृहद्धूपः ।। सांपकी कांचली, देवदार, हींग, मिरच, नींबके पत्ते, सहत, आकके पुष्प, मनुष्यके मस्तकके बाल, सिरसम, बच, गंधक, लहसन, मनिशिल, मुलहटी, गुगल, कूट मोरपंख, नमक, बिल्लीकी विष्ठा, घृत, राल, बालछड, आकके पत्ते, नागरमोथा इन द्रव्योंकी धूप बहुत श्रेष्ठ है बालकके सर्व दोषोंको नष्ट करती है ।। ८४ ।। अन्यो-

धूप: ।। नींबके पत्ते, कूट, वच, मुलहटी, राई, गुगल, घृत, नमक, सांपकी कांचली, जौ अन्न इनकी धूप सर्व ज्वर नष्ट करनेवाली र ।। ८५ ।। रविवारके दिन प्रातः-काल निगुंडीकी जडको और सहदेईकी जड़को लाकर कमरमें बांधनेसे सब ज्वरोंका नाश करता है ।। ८६ ।। कन्याके पास सूत कताकर उसकी डोरीसे ऊंगेकी जड चोटीमें बांधनेसे ऐकाहिक ज्वरका नाश होता है ।। ८७ ।। रविवारके दिन सफेद कनेरकी जड या सफेद आककी जड लाकर कानमें बांधनेसे वह सब तरहके ज्वरको हरता है ।। ८८ ।। मकोईकी जड कर्णमें बांधनेसे रात्रिमें होनेवाले ज्वरको नष्ट करता है और मूषाकन्नीकी जडको या बांदाकी जडको हस्तमें बांधनेसे ज्वरका नाश होता है, बालकको आनंद पैदा करता है ।। ८९ ।। कोरी मिट्टीकी ढकनी लेकर उसके ऊपर यह मंत्र लिखकर शीतज्वर आता हो तो अग्निकी अंगीठीमें रखकर बीमारकी खाटके नीचे रखदे ।। और उष्ण ज्वरहो तो जलपात्रमें रखकर रोगीकी खाटके नीचे चला जाये बालक अच्छा हो जाये मन्त्रका श्लोक मूलमें लिखाही है ।। ९० ।।

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां
द्वादशः पटलः ।। १२ ।।

अथबालानामतीसारोपायोलिख्यते ।। लोध्रंसमंगा जलधातघोभिः समानिताभिर्विहितः कषायः ।। बालातिसारंसहसानिहन्यादेकाथमुस्तामधुतावलीढा ।। १ ।। बिल्वंचपुष्पाणिचधातकीनांजलंसलोध्रं गजपिप्पलीच ।। क्वाथावलेहौमधुनाविमिश्रौबालेतु योज्यावतिसारितेषु ।। २ ।। मुस्ताविषाशक्रयवांबुभिश्चशिशोरतीसारहरः कषायः ।। आम्रांघ्रिवल्कस्वरसश्चतद्वद्बुद्धिद्वयंवामधुनावलीढम् ।। ३ ।। नागरातिविषामुस्ताकुटजैःक्वथितंजलम् ।। प्रातः पीतं कुमाराणांशीघ्रं सर्वातिसारनुत् ।। ४ ।।

अब बालकोंके अतिसारकी चिकित्सा लिखते हैं। लोध, मंजीठ, नेत्रवाला, धायके फल इनको समान लेकर क्वाथ बनाके बालकको पिलानेसे बालकका अतिसार शीघ्र नष्ट हो जाता है अथवा खाली नागरमोथेके रज शहतसे चाटनेसे बालकका अतिसार जाता रहता है ।। १ ।। बेलगिरी, धायके फूल, नेत्रवाला, लोध, गजपीपल इन द्रव्योंका क्वाथ या अवलेह बनाकर उसमें शहद डालकर बालकोंके अतिसारमें देने चाहिये ।। २ ।। अन्यच्च ।। नागरमोथा, अतीस, इन्द्रजौ, नेत्रवाला इन द्रव्योंमा क्वाथ बालकके अतिसारको हरता है, अथवा आमकी जडका स्वरसे बालकके अतिसारको हरता है तैसे ऋद्धि वृद्धि दोनों शहदसे चाटनेसे अतिसारको नष्ट करती है ।। ३ ।। अन्यच्च ।। सूंठ, अतीस,

नागरमोथा, कूडेकी छाल इन द्रव्योंसे क्वथित जल बालकोंको पिलानेसे सब तरहके अतिसारको शीघ्र नष्ट कर देता है ॥ ४ ॥

पिष्ट्वापटोलमूलंचशृङ्गवेरंवचामपि॥ विडंगान्यजमोदांचपिप्पलीतंडुलान्यपि ॥ ५ ॥ एतान्यालोडचसर्वाणिसुखंतप्तेनवारिणा ॥ आमप्रवृत्तेऽतीसारेकुमारं पाययेद्भिषक् ॥ ६ ॥ नागरातिविषमुस्ताक्वाथः स्यादामपाचनः ॥ विषंवासगुडंलीढमधुनामहरं परम् ॥ ७॥ मुस्तमोचरसः पाठाबिल्वंलोध्रं सनागरम् ॥ तक्रेणपीतंदुर्वारंशिशोर्हन्त्युदरामयम् ॥ ८ ॥ ॥ इत्यतीसारः ॥ हरिद्राद्वययष्टयाह्वासिंहीशक्रयवैः कृतः ॥ शिशोर्ज्वरातिसारघ्नः कषायः स्तन्यदोषजित् ॥ ९ ॥ घनकृष्णारुणाशुंठीचूर्णंक्षौद्रेण योजितम् ॥ शिशोर्ज्वरातिसारघ्नंकासश्वासवमीर्जये ॥ १० ॥ धातकीबिल्वधन्याकलोध्रेन्द्रयववालकैः ॥ लेहःक्षौद्रेणबालानांज्वरातीसारवांतिहृत् ॥ ११ ॥ इतिज्वरातिसारः ॥ यवानीजीरकं व्योषंकुटजंविश्वभेषजम् ॥ एतन्मधुयुतंलीढंबालानां ग्रहणीं जयेत् ॥१२॥

पलवलकी जड, सूंठ, वच, वायविडंग, अजमोद, पीपल छोटी, सांठी चावल ॥ ५ ॥ यह सब द्रव्य पीसकर जलमें छानकर जरा गरम करके बालकको आमातीसारमें पान कराये ॥ ६ ॥ अन्यच्च ॥ सूंठ, अतीस, नागरमोथा इनका क्वाथ आमका पकानेवाला है, अथवा अतीस गुड दोनों समान सहतसे चाटे हुए आमको हरते हैं ॥ ७ ॥ नागरमोथा, मोचरस, पाठा, बेलगिरी, लोध्र, सूंठ इनका चूर्ण तक्रसे पान किया बालकके दुर्वार अतीसारको नाश करता है ॥ ८ ॥ अतीसार-चिकित्सा ॥ हलदी, दारुहलदी, मुलहटी, कंटकारीकी जड, इंद्रजौ इन द्रव्योंसे सिद्ध किया क्वाथ बालकके ज्वरातिसारको नष्ट करता है; । और दुग्ध दोषको भी नष्ट करता है ॥ ९ ॥ नागरमोथा, पीपल, मंजीठ, सूंठ इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे बालकके ज्वरातिसारको नष्ट करता है और खांसी श्वासको जीतता है ॥ १० ॥ धायके फूल, बिल्व, धनिहां, लोध, इंद्रजौ, नेत्रबला इन छ द्रव्योंका चूर्ण करके सहतसे चाटे तो बालकोंके ज्वरातिसारको और वमनको हरता है ॥ ११ ॥ इति ज्वरातिसारचिकित्सा ॥ अजवायन, सफेदजीरा, सूंठ, मिरच, पीपल छोटी, कूडेकी छाल, सूंठ इन सब द्रव्योंका चूर्ण सहतसे चाटनेसे बालकोंकी ग्रहणीको जीतता है ॥ १२ ॥

पिप्पलीविजयाशुंठीचूर्णंमधुयुतंभिषक् ॥ दत्त्वा निर्जित्यग्रहणींपूजांनियतमाप्नुयात् ॥ १३ ॥ कृष्णामहौषधंबिल्वंकुटजंसयवान्वितम् ॥ मधुसर्पियुतंलीढंवातलांग्रहणींजयेत् ॥१४॥ नागरमुस्तकं बिल्वंचित्रकंग्रंथि

कंशिवा ।। चूर्णमेतन्मधुयुतं कफजांग्रहणींजयेत् ।। १५ ।। सगुडंनागरं बिल्वंयः खादतिहिताशनः ।। त्रिदोषग्रहणीरोगान्मुच्यते नात्रसंशयः ।। १६ ।। मुस्तकातिविषाबिल्वंचूर्णितं कौटजंतथा ।। क्षौद्रेणलीढाग्रहणीं सर्वदोषोद्भवां जयेत् ।। १७ ।। इतिसंग्रहणी ।। यवानीनागरंपाठा दाडिमं-कुटजंतथा ।। चूर्णोयंगुडतक्राभ्यांपीतोर्शः शमनः परः ।। १८ ।। अजाजी पौष्करंपाठात्र्यूषणं दहनः शिवाः ।। गुडेनगुटिकाकार्यासर्वार्शोनाशनीपरा ।। १९ ।। नवनीततिलाभ्यासात्केसरनवनीतशर्करा भ्यासात् ।। दधि-स्वरमथिताभ्यासाद्गुदजाः शाम्यंति रक्तवहाः ।। २० ।। कुटजंकौटजं-बीजंकेसरंपद्मकेसरम् ।। एतन्मधुयुतंलीढंरक्तार्शोनाशनंपरम् ।। २१ ।। एवंवाकौटजंबीजंरक्तार्शोमधुनाहरेत् ।। तद्वन्मुस्ता मोचरसकपित्थच्छद-जोरजः ।। २२ ।। इत्यर्शः ।।

पीपल, भांग, सूंठ इनका चूर्ण सहतसे बालकको चटानेसे वैद्य संग्रहणीको जीतकर पूजाको यशको प्राप्त होता है ।। १३ ।। अन्यच्च ।। पीपल, सूंठ, बेलगिरी, कूडेकी छाल, अजवायन इनका चूर्ण करके घृतमें किंचित् मरकोके सहतसे चाटनेसे वायुकी संग्रहणी नष्ट करता है ।। १४ ।। अन्यच्च ।। सूंठ, नागरमोथा, बेलगिरी, चीता, पीपलामूल, हरडै इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे कफकी संग्रहणीको जीतता है ।। १५ ।। हित वस्तुका खानेवाला, गुड, साठ, बिल्व इनके अवलेहको खाता है वह त्रिदोषकी संग्रहणीसे मुक्त होता है इसमें संदेह नहीं ।। १६ ।। अन्यच्च ।। नागरमोथा, अतीस, बिल्व, इंद्रजौ इनका चूर्ण सहतसे चाटकर त्रिदोषकी संग्र-हणीको जीतलेये ।। १७ ।। इति संग्रहणीचिकित्सा ।। अजवायन, सोंठ, पाठा, अनारदाना, कूडेकी छाल इनका चूर्ण गुड तक्रसे पान किया बवासीरको शमन करता है ।। १८ ।। अन्यच्च ।। जीरासफेद, पोहकरमूल, कश्मीरीपट्‌ठा, सोंठ, मिरच, पीपल, चीता, हरडै इनका चूर्ण करके गुडसे गोली बनाकर खानेसे संपूर्ण तरहकी बवासीरको नाश करती है ।। १९ ।। माखन, तिल इनके अभ्याससे अथवा नागकेशर माखन मिसरी इनके अभ्याससे अथवा दहीके ऊपरकी मलाई उसको मथकर तक्र बनाकर उसको पीनेके अभ्याससे खूनी बवासीरके मस्से शमन हो जाते हैं ।। २० ।। अन्यच्च ।। कूडेकी छाल, इंद्रजौ, नागकेशर, कमलकेशर यह चार द्रव्य सहतसे चाटनेसे खूनी बवासीरको नाश करते हैं ।। २१ ।। इसी तरह इंद्रजौ पीसकर सहतसे चाटनेसे खूनी बवासीरको हरता है और नागरमोथा, मोचरस, कैथके पत्ते इनका चूर्ण करके सहतसे चाटनेसे यह चूर्ण भी उसी तरह खूनी बवासीरको नष्ट करता है ।। २२ ।।

धान्यनागराजःक्वाथः शूलामाजीर्णनाशनः ।। चूर्णंतक्रयुतंपीतंतत्द्व्योषाग्निजीरकैः ।। २३ ।। पिप्पलीरुचकंपथ्याचूर्णमस्तुजलंपिबेत् ।। सर्वाजीर्णहरंशूलगुल्मानाहाग्निमांद्यजित् ।। २४ ।। त्वक् पत्ररास्नागुरुशिग्रुकुष्ठैरम्लप्रपिष्टैः सर्वचाशताह्वैः ।। उद्वर्तनं खल्लिविषूचिकाघ्नं तैलं विपक्वंचतदर्थकारि ।। २५ ।। इत्यजीर्णविषूचिका ।। अन्नपानैर्गुरुस्निग्धैर्महत्सांद्रहिमस्थिरैः ।। पीतादिरेचनैर्धीमान् भस्मकंप्रशमंनयेत् ।। २६ ।। औदुंबरंत्वचंपिष्ट्वानारीक्षीरयुतांपिबेत् ।। ताभ्यांचपायसंसिद्धं भुक्तंजयतिभस्मकम् ।। २७ ।। मयूरतंडुलैः सिद्धं पायसंभस्मकंजयेत् ।। विदारी स्वरसक्षीरसिद्धंवा माहिषंघृतम् ।। २८ ।। इतिभस्मकः ।। कल्कः प्रियंगुकोलास्थिमधुमुस्तांजनैः कृतः ।। क्षौद्रलीढः कुमारस्यच्छर्दितृष्णातिसारजित् ।। २९ ।। यवानी कुटजारिष्टसप्तपर्णपटोलकैः लेहश्छर्द्दिमतीसारंज्वरंबालस्यनाशयत् ।। ३० ।। पीतश्चंदनचूर्णेनमधुनामलकीरसः । छर्दिसदाहांसतृष्णांशीघ्रमेवविनाशयेत् ।। ३१ ।।

धनियां, सोंठ इनका क्वाथ शूलको और आमाजीर्णको नाश करता है ऐसेही सोंठ, मिरच, पीपल, चीता, सफेदजीरेका चूर्ण तक्रसे पान किया शूलको, आमाजीर्णको नष्ट करता है ।।२३ ।। अन्यच्च । पीपल, कालानमक हरडै इनका चूर्ण खाकर ऊपरसे दहीका जल पीनेसे सब तरहके अजीर्णको हरे और शूल, गुल्म, आनाह, अग्निकी मंदता इनको जीते ।। २४ ।। अन्यच्च । दालचीनी, पत्रज रासना, अगर, सहाजनेका बक्कल, कूट, वच, सौंफ इनको कांजीमें पीसकर उद्वर्तन करनेसे अथवा इन द्रव्योंसे तैल पकाकर मालिश करनेसे वायटोंका और हैजेका नाश हो जाता है ।। २५ ।। इत्यजीर्ण चिकित्सा ।। गुरु, स्निग्ध, अतिसांद्र, शीतल, स्थिर ऐसे पदार्थोंके खिलाने पिलानेसे दस्त करानेसे बुद्धिमान् वैद्य भस्मक रोगको शांत करे ।। २६ ।। गूलरका फल, दालचीनी, इनको पीसकर स्त्रीके दूधके संग पीनेसे अथवा इन दोनोंसे सिद्ध की हुई खीरको खानेसे भस्मकको जीत लेता है ।। २७ ।। अन्यच्च । ऊंगा वृक्षके चावलोंसे सिद्ध की पायसको खानेसे भस्मक नष्ट हो जाता है । अथवा । विदारीकंदका स्वरससे और दूध से सिद्ध किये घृतके खानेसे भस्मक नष्ट हो जाता है ।। २८ ।। इति भस्मचिकित्सा ।। मेंहदी, बेरकी गुठली, मुलहटी, नागरमोथा, शुद्ध सुरमा इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे बालककी छर्दी, प्यास, अतिसार जाते रहते हैं ।। २९ ।। अजवायन, कूडेकी छाल, नींबकी छाल, सातोनकी छाल, पलवल, इनसे किया अवलेह बालककी छर्दीको, अतिसारको, ज्वरको नाश करता है ।। ३० ।। अन्यच्च । सफेद चंदनका बुरादा, सहत, आंवलेका

रस यह सामिल करके चाटनेसे बालककी छर्दिको, दाहको, प्यासको बहुत जलदी नाश कर देता है ।। ३१ ।।

हरीतक्याः कृतं चूर्णं मधुना सहलेहयेत् ।। अधस्ताद्विहितेदोषे-शीघ्रंछर्दिः प्रशाम्यति ।। ३२ ।। पटोलनिंबत्रिफलागुडूचीभिः शृतंजलम् पीतं क्षौद्रयुतंछर्दिमम्लपित्तभवां हरेत् ।। ३३ ।। अश्वत्थवल्कंसंशुष्कं-दग्धंनिर्वापितंजले ।। तज्जलंपानमात्रेणछर्दिजयतिदुर्जयाम् ।। ३४ ।। इति छर्दिः ।। सलाजांजनमुस्तानांचूर्णपीतंसमाक्षिकम् ।। तृष्णां छर्दिमतीसारंशिशूनामुद्धतांहरेत् ।। ३५ ।। पिप्पलीमधुकंजंबूरसालतरुपल्लवाः ।। चूर्णोयं मधुना चेतितृष्णाप्रशमनः शिशोः ।। ३६ ।। दाडिमस्य च बीजानिजीरकंनागकेशरम् ।। चूर्णंसशर्कराक्षौद्रलेहात्तृष्णाहरं शिशोः ।। ३७ ।। हिंगुसैंधवपालाशंचूर्णंमाक्षिकसंयुतम् ।। लीढंनिर्वापयत्याशुशिशूनामुद्धतांतृषाम् ।। ३८ ।। इति तृषा ।। सुवर्णगैरिकंपिष्ट्वामधुनासहलेहयेत् ।। शीघ्रंसुखमवाप्नोतितेनहिक्वार्दितः शिशुः ।। ३९ ।। शुंठीधात्रीकणाचूर्णंलेहयेत्मधुनाशिशुः ।। हिक्कानांशांतयेतद्वदेकंवामाक्षिकंसकृत् ।। ४० ।। पिप्पलीरेणुकाक्वाथः सहिंगुः समधुस्तथा ।। हिक्कांबहुविधांहन्यादिदंधन्वन्तरेर्वचः ।। ४१ ।। इति हिक्का ।।

छोटे हरडैको पीसकर चूर्ण करले फिर सहतसें चाटनेसे दोष नीचेको चला जाता है इस हेतुसे छर्दि शीघ्रशमन हो जाये ।। ३२ ।। अन्यच्च । पलवल, नींबकी छाल, त्रिफला, गिलोय इनसे किया क्वाथ सहत डालकर पीनेसे अम्लपत्तिसे पैदा होनेवाली छर्दिको शीघ्र हरता है ।। ३३ ।। अन्यच्च ।। पीपल वृक्षका वक्कल सूखा लाकर फिर जलाकर पानीमें बुझावे वह पानी पीनेसे दुर्जय छर्दिको जीतता है ।। ३४ ।। इति छर्दिचिकित्सा ।। धानकी खील, शुद्ध, सुरमा नागरमोथा इनका चूर्ण करके पानीमें भिगो देवे फिर पानीको छानकर सहत डालकर बालकको पिलानेसे अत्यंत प्यासको, छर्दिको, अतिसारको हरे है ।। ३५ ।। अन्यच्च । पीपल, मुलहटी, जामुनके पत्ते, आमके पत्ते इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे बालककी प्यासको शमन करता है ।। ३६ ।। अन्यच्च । अनारदाना, सफेदजीरा, नागकेसर इनका चूर्ण करके बराबरकी मिसरी मिलाकर सहतसे चाटनेसे बालककी प्यासको हरता है ।। ३७ ।। अन्यच्च । घीका भुना हींग, सेंधानमक, पलासपापडा इनका चूर्ण सहत मिलाके चाटनेसे बालकोंकी बढी हुई तृषाको निवारण कर देता है ।। ३८ ।। इति तृषाचिकित्सा ।। सोनागेरूको पीसकर सहतसे चाटनेसे हिचकियोंसे पीडित हुए बालकको शीघ्र आराम हो जाता है ।। ३९ ।। सूंठ, आंवला,

पीपल इनका चूर्ण हुचकियोंकी शांतिके लिये बालक सहतसे चाटे अथवा खाली मक्खीकी विष्ठाका चूर्ण सहतसे चाटे ॥ ४० ॥ पीपल रेणुकबीज इनके क्वाथमें हींग भुना और सहत डालकर पीनेसे सब तरहकी हिचकी जाती रहती है यह धन्वंतरिका वचन है ॥ ४१ ॥

इति हिक्काचिकित्सा ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलनागरंमधुनालिहन् ॥ कासं पंचविधंश्वासंशिशुराशुविनाशयेत् ॥ ४२ ॥ विहितो मधुनालेहोव्याघ्रीकुसुमकेसरैः ॥ लीढोविनाशयत्याशुकासंपंचविधंशिशोः ॥ ४३ ॥ क्षौद्रयुक्तातुगाक्षीरीकासश्वासावपोहति ॥ बालस्यनियतंकृष्णा शृङ्गीवामूलसंयुता ॥ ४४ ॥ एका शृंगी निहंत्याशु मूलकस्यफलान्विता ॥ घृतेन मधुनालीढाकासंबालस्यदुस्तरम् ॥ ४५ ॥ इतिकासश्वासौ ॥ विडंगंमधुनालीढ्वापौष्करंवासशिग्रुकम् ॥ आखुकर्णीतथैकांबाक्रिमिभ्योमुच्यतेशिशुः ॥ ४६ ॥ मुस्तंविडंगंमगधाखुकर्णीकंपिल्लकोदाडिमवल्कलंच ॥ एतन्कृमीत्सत्वरमुग्रवेगान्क्षौद्रेण लीढं शमयत्यवश्यम् ॥ ४७ ॥ यवक्षारंकृमिरिपुमगधामधुनासह ॥ भक्षयेत्कृमिरोगघ्नंपंक्तिशूलहरंपरम् ॥ ४८ ॥ इतिक्रिमिरोगः ॥ अयोरजस्त्रैफलचूर्णयुक्तं गोमूत्रसिद्धं मधुनावलीढम् ॥ पांडुंकासंसकृशानुमांद्यं शूलं सशोफं शमयेदवश्यम् ॥ ४९ ॥ इतिपाण्डुरोगः ॥ पथ्याश्वगंधासवरीविदारीसमंत्रिकंटश्चबलात्रयेण ॥ पुनर्नवैतत्क्षयरोगमुग्रंक्षौद्रेणलीढंक्षपयत्यवश्यम् ॥ ५० ॥ शिलाजतुव्योषविडंगलोहताप्याभयाभिर्विहितोऽवलेहः ॥ सर्पिर्मधुभ्यांविधिनाप्रयुक्तः क्षयंविधत्तेसहसा क्षयस्य ॥५१॥ नवनीतंसिताक्षौद्रंलीढंक्षीरभुजः पराम् ॥ करोतिपुष्टिंकायस्य शतक्षयमपोहति ॥५२॥ वासामहौषधीव्याघ्रीगुडूचीभिः शृतजलम् ॥ प्रपीतंशमयत्युग्रंश्वासकासक्षयज्वरान् ॥५३॥ इतिक्षय रोगः ।

पीपल छोटी पीपलामूल, सूंठ, यह द्रव्य शहदसे बालक चाटकर पांच रकमके कासको श्वासको नष्ट कर देता है ॥ ४२ ॥ अथवा कटकारीके फूलोंका केशरसे और शहदसे सिद्धि किया अवलेह बालककी पांच प्रकारकी खांसीको नाश करदेता है ॥ ४३ ॥ वंशलोचन शहदसे चाटनेसे बालकके कास, श्वास दूर हो जाते हैं अथवा पीपल, काकडासींगी मूलीके बीज यह द्रव्य शहदसहित चाटनेसे बालकके कास श्वासको दूर करते हैं ॥ ४४ ॥ अन्यच्च । केवल काकडासींगी मूलीके बीजोंसे युक्त घृतसे व शहदसे चाटी हुई बालकके दुस्तर कासको नाश करती है ॥ ४५ ॥ इति कासश्वासचिकित्सा ॥ वायविडंग अथवा पोहकर मूल

सहिंजनेका बक्कल अथवा एकली मूसाकन्नी यह तीन योग न्यारे न्यारे शहदसे चाटनेसे बालक क्रिमियोंसे मुक्त होता है ॥ ४६ ॥ अन्यच्च। नागरमोथा, वायविडंग, पीपल मूसाकर्णी, कवीला, अनारका बक्कल इनका चूर्ण शहदसे चाटनेसे बालकके बढे हुए क्रिमियोंको अवश्य शमन कर देता है ॥ ४७ ॥ जवाखार, वायविडंग, पीपल यह द्रव्य शहदसे चाटनेसे क्रिमिरोगको नष्ट करके पंक्तिशूलका शमन करता है ॥ ४८ ॥ इति क्रिमिरोगचिकित्सा ॥ गोमूत्रसे सिद्ध किया लोहचूर्ण जिसको वैद्य मंडूर कहते हैं, त्रिफलाकी बराबर शहदसे चाटनेसे बालकके पांडुको, कासको, श्वासको, मंदाग्निको, शूलको, सोजाको अवश्य शमन कर देत है ॥ ४९ ॥ इति पांडुरोगाचिकित्सा ॥ हरडैकी छाल, असगंध, शतवार विदारीकंद, गोखरू, बला, अतिबला, नागबला, पुनर्नवा यह द्रव्य सब समान लेकर शहदसे बालकको चटानेसे अवश्य क्षयरोगको नष्ट करदेता है ॥ ५० ॥ शिलाजीत, सूंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, लोहभस्म, सुवर्णमाक्षिकभस्म, हरडैकी छाल इन द्रव्योंको घृतसे शहदसे अवलेह करके बालकको विधिपूर्वक सेवन करानेसे शीघ्र क्षयरोगका नाश हो जाता है॥ ५१ ॥ अन्यच्च ॥ माखन, मिसरी शहद यह द्रव्य बालकको चटानेसे बालकके शरीरको पुष्ट करते हैं, क्षयरोगको दूर करते हैं॥ ५२ ॥ अन्योपायः ॥ बांसाके पत्ते, सोंठ, कंटकारीकी जड, गिलोय इनसे सिद्ध किया क्वाथ पीनेसे बालकके श्वासको, कासको, क्षयरोगको तथा ज्वरको शमन करदेता है ॥ ५३ ॥ इति क्षयरोगचिकित्सा।

मागधीमागधीमूलंनागरंमरिचान्वितम् ॥ क्षौद्रेणलीढंसकफंस्वरभेदमपोहति ॥ ५४ ॥ यष्ट्याह्वाजीवनीमूर्वाकाकोलीद्वयसाधितम् ॥ पयःपित्तोद्भवं हंति स्वरभेदंसुदारुणम् ॥ ५५ ॥ इति स्वरभेदः ॥ जीरकद्वयमम्लीकावृक्षाम्लंदाडिमान्वितम् ॥ चित्रकार्द्रकसंयुक्तमरुचिहंतिहंतिदुष्कराम् ॥५६॥ द्वेपलेदाडिमादष्टौखण्डाद्व्योषपलत्रयम्। त्रिसुगंधिपलंचैकंचूर्णमेकत्रकारयेत् ॥ ५७ ॥ दीपनंरोचनंपथ्यंपीनसं ज्वरकासजित् ॥ विचार्यैवं तुमतिमानौषधं च प्रयोजयेत् ॥ ५८ ॥ इत्यरोचकम् ॥ कोलास्थिपद्मकोशीरंचंदनंनागकेशरम् ॥ लीढंक्षौद्रेणबालानांमूर्च्छानाशनमुत्तमम् ॥ ५९ ॥ द्राक्षामामलकंस्विन्नंपिष्ट्वा क्षौद्रेणसंयुतः ॥ सर्वदोषभवांमूर्च्छासज्वरांनाशयेदध्रुवम् ॥ ६० ॥ शीताः प्रदेहामणयः सहाराः सेकावगाहाव्यजनस्यवाताः ॥ लेह्यान्नपानादिसुगंधिशीतं मूर्च्छासुसर्वासुपरंप्रशस्तम् ॥ ६१ ॥ इति मूर्च्छा ॥

पीपल, पीपलामूल, सूंठ, मिरच इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे कफसहित,

स्वरभेद दूर करे है ।। ५४ ।। अन्यच्च ।। मुलहटी, हरडै, मोरवेल, काकोली क्षीरकाकोली इनसे सिद्ध किया दुग्ध पीनेसे पित्तके स्वरभेद नष्ट होते हैं ।। ५५ ।। अति स्वरभेदचिकित्सा ।। जीरा सफेद, जीरा स्याह, इमली, अंबाडा, अनारदाना, चित्रक, सूंठ इनका चूर्ण दुर्वार अरुचिको नष्ट कर देता है ।। ५६ ।। अनारदाना ८ तोले, खांड ३२ तोले, सोंठ ४ तोले, मिरच ४ तोले, पीपल ४ तोले, दालचीनी, इलायची, पत्रज यह तीनों मिलाकर ४ तोले इस माफिक सब दवा लेकर एक जगह चूर्ण करले ।। ५७ ।। यह चूर्ण जठराग्निको तेज करता है रुचिको पैदा करता है, पीनसको, ज्वरको तथा कासको जीतता है। ऐसे मतिमान् वैद्य पथ्य विचारके औषधीकी योजना करे ।। ५८ ।। इत्यरोचकम् ।। बेरके काकडाकी गिरी, पद्माख, खस, सफेद, चन्दन, नागकेसर यह द्रव्य सहतसे चाटनेसे बालकोंको मच्छाकी नाश करता है ।। ५९ ।। अन्यो योगः ।। मुनक्का, आंवला स्विन्न करा हुआ इनको पीसके सहतसे सेवन करनेसे त्रिदोषसे होनेवाली मूर्छाको ज्वरको नाश कर देता है ।। ६० ।। अन्यच्च ।। शीतल लेपनादिक मणियोंके हार, शीतल सेंक, शीतल अवगाहन, पंखाकी हवा और जो चाटनेकी वस्तु या खानेकी या पीनेकी या सुगंध लगानेके लिये यह सब शीतल मूर्छामें श्रेष्ठ हैं अर्थात् सर्व वस्तु ठंढी होनी चाहिये ।।६१।। इति मूर्च्छाचिकित्सा ।।

पद्मकंचंदनंतोयमुशीरंश्लक्ष्णचूर्णितम् ।। क्षीरेणपीतंबालानां-दाहंनाशयति ध्रुवम् ।। ६२ ।। कर्पूर चंदनोशीरलिप्तांगंकदलीदलैः ।। प्रशस्ते संस्तरेधीमान्स्वापयेद्दाहपीडितम् ।। ६३ ।। परिषेकावगाहादिव्य-जनानांचसेवनम् ।। शस्यतेशिशिरंतोयंतृषादाहोपशांतये ।। ६४ ।। इति दाहः ।। शिरीषनक्तमालानांबीजैरंजितलोचनः ।। चेतोविकारंहंत्या-शुसापस्मारापतंत्रिकम् ।। ६५ ।। सिद्धार्थकवचाहिंगुशिवनिर्माल्यगंधकैः ।। निर्मोकपिच्छलवणैर्नृकेशैः कुष्ठसंयुतैः ।। ६६ ।। गृहसूकरमार्जारविष्ठा-रिष्टकपत्रकैः ।। एतैर्घृतप्लुतै धूंपः सर्वोन्मादग्रहापहः ।। ६७ ।। इत्यु-न्मादः ।। कूष्माडकरसंदत्त्वामधुकंपरिपेषयेत् ।। अपस्मारविनाशयतत्पि-बेत्सप्तवासरान् ।। ६८ ।। गोसर्पिःसाधितंमूत्रदधिक्षीरशकृद्रसैः ।। चातुर्थिकज्वरोन्मादसर्वापस्मारनाशनम् ।। ६९ ।। इत्यपस्मारः ।।

पद्मकाष्ठ, सफेद चंदनका बुरादा, नेत्रवाला, खस इन द्रव्योंका बारीक चूर्ण करके दूधके संग पीनेसे बालकोंके दाहको निश्चय नाश कर देता है ।। ६२ ।। अन्योयोगः ।। कपूर, मलयागिर, सफेद चंदन, खस इनको खूब बारीक पीसकर दाहपीडित बालकके अंगको लेपन करके केलाके पत्तोंका बिस्तर बनवाके उस पर बालकको वैद्य शयन कराये ।। ६३ ।। शीतल जलसे परिषेक करना और शीतल

जलका अवगाहन बीजनेकी वायुका सेवन शीतल जलपान इनका सेवन तृषाकी दाहकी शांतिके लिये बहुत उत्तम है ।। ६४ ।। इति दाहचिकित्सा ।। सिरसके बीज, करंजुवाके बीज इनको पानीमें पीसकर बालकके नेत्रमें आंजनेसे चित्त-विकार जिसको उन्माद बोलते हैं और अपस्मारको अपतंत्रिकको शीघ्र नाश करता है ।। ६५ ।। धूपमाह–राई, वच, हींग, आकके फूल, गंधक आंवलासार सांपकी कांचली, मोरकी पाँख, नमक, मनुष्यके माथेके बाल, कूट ।। ६६ ।। सूकरकी विष्ठा, बिलावकी विष्ठा, नींबके पत्ते इन सब द्रव्योंको थोडा कूटके धूप घी मिलाकर बालकको देनेसे सब तरहके उन्मादोंका और बालग्रहोंका शमन हो जाता है।। ६७ ।। इत्युन्माद चिकित्सा ।। पुराने पेठेका रस देकर मुलहटीको पीसे फिर पेठेके रसमें ही छानकर मृगीके नाश करनेके लिये बालक ७ सात दिन पीये ।। ६८ ।। अन्योयोग: ।। गौका मूत्र, दही, दूध और गोबरका रस इनसे सिद्ध किया गौका घृत बालकको सेवन करनेसे चातुर्थिक ज्वरको उन्मादको, मृगीको नाश करता है ।। ६९ ।।

इत्यपस्मारचिकित्सा ।

पुनर्नवैरंडयवातसीभिः कार्पासिजैरस्थिभिरारनालैः ।। स्विन्नैरमीभिस्त्रिभिः षड्भिरेवस्वेदः समीरार्तिहरोनराणाम् ।। ७० ।। इति वातव्याधिः ।। वासायाः स्वरसः पीतः सितामधुसमन्वितः ।। तथावटप्ररोहाणांरक्तपित्तंविनाशयेत् ।। ७१ ।। पालाशपुष्पक्वाथेनवासायाः स्वरसेनच ।। चतुर्गुणेसनसंसिद्धंरक्तपित्तहरंघृतम् ।। ७२ ।। रसोदाडिमपुष्पाणांदूर्वायाःस्वरसोऽथवा ।। नस्येननाशयेत्तूर्णंनासिकारक्तमुद्धृतम् ।। ७३ ।। इति रक्तपित्तरोगः ।। हिंगुमाक्षिकसिंधूत्थैः कृत्वावर्तिंसुवर्तिताम् ।। घृताभ्यक्तांगुदेदद्यादुदावर्तविनाशनीम् ।। ७४ ।। इत्युदावर्तः ।। त्रिकटुकमजमोदासैंधवंजीरकेद्वेसमधरणधृतानामष्टमोहिंगुभागः ।। प्रथमकवलभुक्तंसर्पिषा चूर्णमेतज्जनयति जठराग्निं वातगुल्मं निहंति ।। ७५ ।। इति वातगुल्महरंहिंग्वष्टकम् ।। शुंठीकणापुष्करकेतकीनांविधायचूर्णंककुभस्त्वचोवा ।। रास्नान्वितं वामधुनावलीढंहृद्रोगमेतच्छमयत्युदग्रम् ।। ७६ ।। इति हृद्रोगः ।।

सांठीकी जड अरंडकी अरंडोली, जौ, अन्न, अलसी, कपासके बिनोल यह सब द्रव्य कांजीजलमें स्विन्न करके बालकके जहां पर वातव्याधि हो उस अंगको प्रथम स्वेदित करे सेंके पीछे उसस्थानपर बांधदे ऐसे तीन रोज छः रोज करने से

बालककी वातपीडा सब नष्ट हो जाये ।। ७०।। इति वातव्याधिचिकित्सा बांसके पत्तोंका स्वरस निकालकर उसमें मिसरी सहत डालकर पीनेसे रक्तपित्तका नाश होंता है। इसी तरह वटवृक्षकी डालीका स्वरस, मिसरी, सहतसहित रक्तपित्तको नाश कर देता है ।। ७१ ।। पालाशवृक्षके फूलोंका क्वाथसे या बांसके पत्तोंका स्वरस करके चतुर्थांश घृत सिद्ध करके सेवन करनेसे रक्तपित्तको हरता है ।। ७२ ।। अन्यच्च। अनारके फूलोंका रस अथवा दूर्वाका स्वरस नासिकासे सूंघनेसे नासिकासे गिरता हुआ रक्त बन्द हो जाता है ।। ७३ ।। इति रक्तपित्त-चिकित्सा ।। हींग, सहत, सेंधानमक इन द्रव्योंसे दृढवर्ती कपडेकी या सूत्रकी बत्ती बनाकर सुखाकर फिर उसको घृत लगाकर बालककी गुदामें देनेसे उदावर्तरोग अर्थात् आनाह कोष्ठवात यह सब नाश हो जाते हैं ।। ७४ ।। इत्युदावर्तचिकित्सा ।। सोंठ, मिरच, पीपल, अजवायन, सेंधानमक, सफेदजीरा, स्याहजीरा यह द्रव्य सर्व समान ले और हींग आठवां भाग लेना चाहिये यह हिंवाष्टक चूर्ण है इउसको घृतमें मरकोके भोजनसे पहिले एक ग्रास चूर्णका खाकर फिर भोजन करनेसे जठराग्निको तेज करता है, वायुगोलेका नाश होता है ।। ७५ ।। इति बातगुल्मा-ध्मानचिकित्सा ।। सोंठ, पीपल, पोहकरमूल, केतकीकी जड इन द्रव्यों का चूर्ण अथवा अर्जुन वृक्षकी छाल, रासना इनका चूर्ण सहतसे चाटा हुआ उग्र हृदरोग को शमन करता है ।। ७६ ।।

इति हृद्रोगचिकित्सा ।।

मेघामृतानागरवाजिगंधाधात्रीत्रिकंटैर्विहितःकषायः ।। क्षौद्रेण पीतःशमयत्यवश्यंमूत्रस्यकृच्छ्ंपवनप्रसूतम् ।। ७७ ।। कुशेक्षुकाशाः शरद-र्भयुक्ताः प्रक्षुण्णमेतत्तृणपंचमूलम् ।। निष्क्वाथ्यपीतंमधुनाविमिश्रंकृच्छ्ं सदाहंसरुजंनिहन्ति ।। ७८ ।। यवक्षारयुतःक्वाथः स्वादुकंटकसंभवः ।। पीतःप्राणाशयत्यांशुमूत्रकृच्छ्ं कफोद्भवम् ।। ७९ ।। श्वदंष्ट्राविहितः क्वाथः शिलाजतु समन्वितः ।। सर्वदोषोद्भवंहंतिकृच्छ्ंनास्त्यत्रसंशयः ।। ८० ।। कषायोतिबलामूलत्रपुसीबीजसाधितः ।। शिलाजतुयुतः पीतो-मूत्रकृच्छ्ंविनाशयेत् ।। ८१ ।। इति मूत्रकृच्छ्ंरोगः ।। पीत्वादाडिमतो-येनविश्वैलाबीजजंरसम् ।। मूत्रघातात्प्रमुच्येत वरांवालवणात्विताम् ।। ८२ ।। कर्पूरर्वर्तिमृदुर्नालिंगचिछद्रेनिधापयेत् ।। शीघ्रतयामहाघोरा-न्मूत्रबंधात्प्रमुच्यते ।। ८३ ।। क्वाथैः किंशुकपुष्पाणांसेकस्तैरेवनिर्मितः ।। उपनाहोथवाहंतिमूत्रकृच्छ्ंसुदारुणम् ।। ८४ ।। इति मूत्राघातः ।। एरंड-तैलंसपयः पिबेद्योगव्येनमूत्रेणतदेववापि ।। सगुग्गुलुप्रौढरुजंप्रवृद्धांसर्वा-त्रवृद्धिसहसा निहंति ।। ८५ ।। इत्यंत्रवृद्धिः ।।

नागरमोथा, गिलोय, सूंठ, अगसन्ध, आंवला, गोखरू इन द्रव्योंसे सिद्ध किये क्वाथमें सहत डालकर पीनेसे वायुसे होनेवाला मूत्रकृच्छ् अवश्य शमन हो जाता है ।। ७७ ।। कुशाकी जड, ऊखकी जड, कांसकी, जड, नरसलकी जड, मूजकी जड यह तृणपंचमूल है इनको लेकर कूटकर क्वाथ बनाकर सहत डालकर पीनेसे दाह, पीडायुक्त मूत्रकृच्छ्र नष्ट होता है ।। ७८ ।। अन्यच्च ।। विलायती गोखरूके क्वाथमें जवाखार डालकर पीनेसे कफसे होनेवाला मूत्रकृच्छ्रको शीघ्र नाश कर देता है ।। ७९ ।। विलायती गोखरू से सिद्ध किये क्वाथमें शिलाजीत डालकर पीनेसे त्रिदोषसे पैदा होनेवाले मूत्रकृच्छ्रको नष्ट कर देता है इसमें संदेह नहीं ।। ८० ।। अन्योयोग: ।। गंगेरनकी जड, ककडाके बीज इनसे सिद्ध किया क्वाथ शिलाजीत सहित पीनेसे मूत्रकृच्छ्का नाश होता है ।। ८१ ।। इति मूत्रकृच्छ्रचि-कित्सा ।। सूंठ छोटी इलायचीकी जड इनको पीसकर अनारके दानोंके जलमें छान-कर पीनेसे मूत्राघातसे बालक मुक्त होजाता है। अथवा त्रिफला, नमक दोनोंकी फंकीलेकर ऊपरसे अनारदानोंका अर्क पीनेसे मूत्राघातसे मुक्त हो जाता है ।। ८२ ।। कपूरको जलमें पीसकर बारीक कोमल कपडा उसमें भिगोकर बत्ती बनाकर लिंगच्छिद्रमें देनेसे बहुत जल्दी मूत्रके बंधसे बालक मुक्त हो जाता है ।। ८३ ।। अन्यच्च ।। केशूके फलोंका क्वाथ करके सेंक करनेसे अथवा वही बस्ति-देशके ऊपर बांधनेसे अतिदु:खका देनेवाला मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो जाता है ।। ८४ ।। इति मूत्राघात चिकित्सा ।। एरंडके तेलको दूधमें डालकर पीनेसे अथवा गौमूत्रको एरंडका तैल डालकर गूगल डालकर पीनेसे तकलीफयुक्त बढी हुई अंत्रवृद्धि शीघ्र नाश कर देता है ।। ८५ ।।

इत्यंत्रवृद्धिचिकित्सा ।।

वनकार्पासिकामूलंतंडुलैः सहयोजितम् ।। पक्त्वापूपा लिकांखा-देदपचीनाशकारिणीम् ।। ८६ ।। इतिगंडमाला ।। कांचनारत्वचःक्वा-थस्ताप्यचूर्णावचूर्णितः ।। निर्गत्यांतः प्रविष्टांतु मसूरींबाह्यतोनयेत् ।। ८७ ।। गर्द्दभीदुग्धपानेनतुलसीपत्रभक्षणात् ।। मसूरीबहिरन्वेतित-त्क्षणान्नात्र संशयः ।। ८८ ।। भस्मनाकेचिदिच्छंतिकेचिद्गोमयरेणुना ।। कृमिवातभयाच्चापिधूपयेत्सुरसादिभिः ।। ८९ ।। वेदनां दाहशांत्यर्थं शिशूनां च विशुद्धये ।। मौक्तिकंकाच्छपं पृष्ठं प्रवालं प्रपिबेन्नरः ।। ९० ।। घृष्टंकुसुमतोयेनक्षुद्रशीतलिकांजयेत् ।। स्तोत्रमेतत्सदापाढ्यंरोगिणोऽ-ग्रेमुहुर्मुहुः ।। ९१ ।।

वन में होनेवाली कपासकी जड लाकर कूट पासकर चांवलोंके आटेमें मिलाकर घृतमें पूडी बनाकर खानेसे अपची अर्थात् परिपक्व गण्डमाला नष्ट

हो जाती है ।। ८६ ।। इति गण्डमालाचिकित्सा ।। कचनारवृक्षकी छालका क्वाथ करके छानके उसके ऊपर सुवर्णमाक्षिक भस्म १ रत्ती बुरकाकर बालकको पिलानेसे भीतर बढी हुई शीतला बाहर निकल आती है ।। ८७ ।। अन्योयोगः ।। गर्दभीका दूध पीनेसे अथवा तुलसीके पत्र खानेसे बालकके भीतर बढी हुई शीतला बाहर निकल आती है ।। ८८ ।। शीतलाके व्रणोंमें क्रिमि पकड़नेके भयसे कोई वैद्योंका मत है वनोपलकी भस्म से व्रणोंको अवधूलितकर देवे ।। और कोई वैद्योंका यह मत है भस्म करनेमें क्षार उत्पन्न हो जाता है इस लिये हितकारी नहीं है खाली वनोपलको पीसकर बारीक कपडेसे छानकर वह सूक्ष्म रज व्रणोंमें लगादेवे ।। और तुलसीके पत्रोंकी धूप देनी चाहिये ।। ८९ ।। मसूरिकावाले बालककी पीडाकी शांतिके अर्थ बालकोंकी शुद्धिके किये मोती अथवा मोतीकी सींप कछुवेकी खोपडी मूंगा इनको जलसे पीसकर बालकको पिलावे ।। ९० ।। उक्त द्रव्य लवंगके जलमें घिसकर बालकको पिलाकर क्षुद्रशीतलाको जीते और शीतलावाले बालकके आगे शीतलाष्टक स्तोत्र वारंवार पढे ।। ९१ ।। इससे आगे शीतला स्तोत्र लिखते हैं यह केवल पाठ करनेके योग्य है इसकी भाषा नहीं होनी चाहिये इस लिये नहीं किया ।।

अथशीतलास्तोत्रं लिख्यते ।। ॐ नमःशीतलायै ।। स्कंद उवाच ।। भगवन्देवदेवेशशीतलायाः स्तवं शुभम् ।। वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयापहम ।। १ ।। ईश्वर उवाच ।। वंदेऽहंशीतलांदेवींसर्वरोगभयापहाम् ।। यामासाद्यनिवर्तेतविस्फोटकभयंमहत् ।। २ ।। शीतलेशीतलेलेचेतियोब्रूयाद्दाहपीडितः ।। विस्फोटकभयंघोरंक्षिप्रंतस्यविनश्यति ।। ३ ।। यस्त्वामुदकमध्येतुधृत्वापूजयतेनरः ।। विस्फोटकभवंघोरं भयंतस्यनजायते ।। ४ ।। शीतलेतनुजान्रोगान्नृणां हरसिदुस्तरान् ।। विस्फोटकविशीर्णानांत्वमेकामृतवर्षिणी ।। ५ ।। गलगंडग्रहारोगायेचान्येरुणानृणाम् ।। त्वदनुध्यानमात्रेणशीतलेयांतिसंक्षयम् ।। ६ ।। नमंत्रोनौषधंकिंचित्पापरोगस्यविद्यते ।। त्वमेकाशीतलेत्रात्रीनान्यांपश्यामिदेवताम् ।। ७ ।। मृणालतंतुसदृशींनाभिहृत्पद्मसंस्थिताम् ।। यस्त्वांसंचितयेद्देवितस्यमृत्युर्नजायते ।। ८ ।। अष्टकंशीतलादेव्या यः पठेन्मानवः सदा ।। विस्फोटकभयंघोरंकुलेतस्य नजायते ।। ९ ।। श्रोतव्यंपठितव्यंचश्रद्धाभक्तिसमन्वितैः ।। उपसर्गविनाशायपरंस्वस्त्ययनंमहत् ।। १० ।। शीतलाष्टकमेवेदंनदेयंयस्यकस्यचित् ।। दातव्यं हि सदा तस्मै भक्तिश्रद्धान्वितश्च यः ।। ११ ।। इतिस्कंदपुराणेशीतलाष्टकम् ।। शीतलेनजलेनैव

चिंचयाच समन्विताम् ।। हरिद्रांयःपिबेत्पिष्यनदोषः शीतलाभवः ।। ९२ ।। शीतलासुक्रियाकार्याशीतलारक्षया सह ।। बध्नीयान्निबपत्राणिपरितोभवनान्तरे ।। ९३ ।। चन्दनंवासकोमुस्तंगुडूचीद्राक्षयासह ।। एषांशीतकषायस्तु शीतलाज्वरनाशनः ।। ९४ ।। कदाचिदपि नोकार्यमुच्छिष्ठस्यप्रवेशनम् ।। स्फोटेष्वधिकदाहेषुरक्षा रेणूत्करोहितः ।। ९५ ।। इतिशीतलारोगः ।।

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रेशीतलाचिकित्साकथनं नाम-
त्रयोदशः पटलः ।। १३ ।।

शीतल जलसे हलदी और इमलीका बीज इनको पीसकर बालकको पिलानेसे शीतला से किया विकार नहीं होये ।। ९२ ।। शीतलामें रक्षापूर्वक ठंढी क्रिया करे मकानके चारों तरफ नीमकी डाली बांध देनी चाहिये ।। ९३ ।। लालचंदन बांसके पत्ते, नागरमोथा, गिलोय, मुनक्का इन द्रव्योंका क्वाथ करके फिर शीतल करके बालकको पिलानेसे शीतलासे होनेवाला ज्वर नाश होता है ।। ९४ ।। जिस स्थानमें शीतलावाला बालक हो उस स्थानमें उच्छिष्ट पुरुषका या नारीका प्रवेश नहीं होने दे और अपवित्रका भी प्रवेश नहीं होने दे अधिक दाहवाले फोडे हों, तब व्रण विधानपूर्वक व्रणीकी रक्षा रखनी चाहिये और व नोपलकी रज या भस्म फोडोंको लगानी चाहिये ।। ९५ ।। इति शीतलारोगचिकित्सा ।

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषा टीकायां त्रयोदशः पटलः ।।१३।।

मनःशिलाचंदनलोध्रपथ्यारसांजनैर्मुस्तनिशाभयाक्षैः ।। सगैरिकाह्वैर्विहतः प्रलेपो बहिः प्रसन्नेनयने करोति ।। १ ।। ससैंधवंलोध्रमथाज्यभृष्टंसौवीरपिष्टंसितवस्त्रबद्धम् ।। आश्च्योतनंतन्नयनस्यकुर्यात्कंडूंचदाहंचरुनंचहन्यात् ।। २ ।। चंदनंमधुकंलोध्रंजातिपुष्पाणिगैरिकम् ।। प्रलेपोदाहरोग घ्नस्तोयाभिष्यंदनाशनः ।। ३ ।। शंखस्यभागाश्चत्वारस्तदर्द्धाचमनशिला ।। मनःशिलार्द्धमरिचंमरिचार्द्धाचपिप्पली ।। ४ ।। वारिणातिमिरंहंतिह्यर्बुदं हंतिमस्तुना ।। चिपिटंमधुनाहंतिस्त्रीक्षीरेणतदुन्नतम् ।। ५ ।। धत्तूरफलकर्पूरेनिघृष्यमधुनांजयेत् ।। नेत्ररोगाः प्रणश्यंतिसिंहत्रस्तामृगाइव ।। ६ ।। इति नेत्ररोगः ।। हिंगुव्योषविडंगकट्फलवचारुक्तीक्ष्णगंधायुतैर्लाक्षाश्वेतपुनर्नवाकुटजकैः पुष्पोद्भवैःसौरसैः ।। इत्येभिःकटुतैलमेतदनले मंदेसमूत्रं श्रृतंपीतंनासिकयांयथाविधिभवेन्नासामयिभ्योहितम् ।। ७ ।। इति नासारोगः ।। कंपिल्लमातुलुंगाम्लश्रृंगवेररसैः

शुभैः ।। सुखोष्णैः पूरयेत्कर्णंकर्णशूलोपशांतये ।। ८ ।। अर्कस्यपत्रंपरिणामपीतंतैलनलिप्तंशिखिनाच तप्तम् ।। आपीडचतोयंश्रवणेनिषिक्तंनिहंतिशुशूलं बहुवेदनांच ।। ९ ।। घृष्टंरसांजनं नार्याः क्षीरेणक्षौद्रसंयुतम् ।। प्रशस्यतेशिरोरोगेसस्त्रावेपूतिकर्णिके ।। १० ।।

इति कर्णरोगः ।।

मनशील, लालचंदन, लोध, हरडै, रसोत, नागरमोथा हलदी, कूट, बहेडा, गेरू इन द्रव्योंको कूट कपडेसे छानकर जलमें पीसकर नेत्रोंके बाहर लेप करनेसे नेत्र निर्मल हो जाते हैं ।। १ ।। अन्योयोगः ।। सेंधानमक, घीका भुना, लोध, दोनोंको कांजीजलसे पीसकर गोली बनाकर सफेद वस्त्रमें बांधकर पोटली बना लो फिर कांजी जलमें डुबोडुबोके नेत्रमें आश्च्योतन करने से नेत्रकंडूको, नेत्रदाहको, नेत्रपीडाको नष्ट कर देती है ।। २ ।। अन्यच्च ।। लालचंदन, मुलहठी, लोध, चमेलीके फूल, गेरू इन द्रव्योंको पीसकर नेत्रपर लेप करनेसे नेत्रदाहको नष्ट करे और जलके पडनेको नेत्र दूखनेको नष्ट करता है ।। ३ ।। अन्योयोगः ।। शंखकी नाभिके ४ भाग मनशिलके २ भाग मिरच १ भाग पीपल आधा भाग ।। ४ ।। यह द्रव्य जलमें पीसकर नेत्रमें डालनेसे धुंधको नष्ट करता है। दधि जलमें पीसकर डालनेसे अर्बुदको नष्ट करता है ।। शहदमें पीसकर डालनेसे चिपिटपनाका नाश करता है। स्त्रीके दूधमें पीसकर डालनेसे नेत्रमें मांस फूलता है वह शांत हो जाये ।। ५ ।। धतूराके बीज, कपूर इनको खूब बारीक सहतमें घिसके नेत्रोंमें डालनेसे सर्व नेत्ररोग नाश हो जाते हैं जैसे सिंहके भयसे मृग नष्ट हो जाते हैं ऐसे ।। ६ ।। इति नेत्ररोगचिकित्सा ।। हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, कायफल, वच, कूट नकछीकनी, लाख, सफेद सांठीकी जड, कूडेकी छाल, लौंग इनका क्वाथ, करके और कल्क करके गोमूत्रसहित मंदाग्निसे कटु तैलको पकावे फिर विधिपूर्वक नासिकासे पीनेसे नासिकाके कुल रोगोंको शमन कर देता है ।। ७ ।।इति नासारोगचिकित्सा ।। कमेरा, बिजोरा, नींबूका अर्क, अदरखका अर्क यह सब द्रव्य मिलाकर गरम करके कानमें डालनेसे कर्णशूल शांत हो जाता है ।। ८ ।। अन्यच्च।। आकके पीले पत्तेको तैल चुपडके अग्निमें तप्त करके कानमें निचोडनेसे कर्णशूल और कर्णकी सर्व पीडा नष्ट हो जाती है ।। ९ ।। अन्यच्च ।। स्त्रीके दुग्धमें रसोतको घिसकर फिर शहद मिलाकर कर्णमें डालनेसे कानके बहनेको, कानकी बदबूको और कर्ण, शूलसे शिरमें शूल हो इन सबोंको शमन करता है ।। १० ।।

गुडेनशुण्ठीसहसैंधवेनकृष्णाऽथवाकेवलमच्छमंम्भः । पयोघृतंवाविनिहंतिशीघ्रंशिरोविरेकेण शिरोविकारान् ।। ११।। इतिशिरोरोगः।। मंदोष्णंधारयेच्छुद्धंहिंगुदन्तान्तरेस्थितम् ।। तेनप्रणाशयत्याशुक्रमिदंशंम-

महागदम् ।। १२ ।। ओष्ठप्रकोपेसंजातेरक्तमोक्षंचकारयेत् ।। त्रिफला-
खदिरक्वाथैर्धावनंलेपनंतथा ।। १३ ।। जातिपत्रमृताद्राक्षापाठादार्वी-
फलत्रिकैः ।। क्वाथः क्षौद्रयुतः शीतोगंडूषान्मुखपाकजित् ।। १४ ।।
पंचवल्ककषायोवात्रिफलाक्वाथएववा ।। सक्षौद्रःशमयत्याशुगंडूषैः-
पाकमास्यजम् ।। १५ ।। पटोलनिंबजंम्बाम्रमालतीनवपल्लवैः ।। पंच-
वल्कलजःक्वाथोगंडूषैर्मुखपाकजित् ।। १६ ।। दार्वीगुडूचीसुमनःप्रवाल-
द्राक्षायवासत्रिफलाकषायः ।। क्षौद्रेणयुक्तः कवलग्रहोयंमुखस्यपाकंश-
मयेत्युदीर्णम् ।। १७ ।। इतिमुखरोगचिकित्सा ।। वंध्याककोंटकोमूलंतं-
डुलीयकसं युतम् ।। अगदोयंमहावीर्यः पीतः सर्वविषापहः ।। १८ ।।
बलांशिफांबाणपुंखांशिखांवासववारुणीम् ।। लीढ्वाघृतेनसर्वाणिविषा-
षाणिक्षपयेन्नरः ।। १९ ।। इति सर्पादिविषम् ।। शिखिकुक्कुटबर्हाणि-
सैंधवं तैलसार्षपम् ।। धूपोहन्तिप्रयुक्तोयंकीटवृश्चिकजंविषम् ।। २० ।।
पलाशबीजंरविदुग्धपिष्टंघृतेनपिष्टासशिरीषबीजा ।। कृष्णाथवाहंति-
कृतोग्रपीडांविषप्रलेपाद्भुविवृश्चिकस्य ।। २१ ।।

अन्यच्च ।। गुडसे सोंठकी गोली बनाकर खानेसे शिरो रोगोंको नष्ट करता है अथवा सेंधानमक, पीपल इनका सेवन करनेसे या केवल निर्मजल प्रातःकाल-नासिका द्वारा सेवन करनेसे अथवा दुग्ध, घृत, प्रातःकाल सेवन करनेसेया शिरो-विरेचन करनेसे शिरके सर्व विकार नष्ट हो जाते हैं ।। ११ ।। इतिशिरोरोग चिकित्सा ।। हिंगको अग्निद्वारा कदुष्ण करके दंतमें रखनेसे शीघ्र कृमिदंश रोग नष्ट हो जाता है ।। १२ ।। ओष्ठप्रकोपरोग होनेसे ओष्ठोंका खून निकलवावे और त्रिफला, खैरका बक्कल इनका क्वाथ करके ओष्ठोंको धोना और झारना चाहिये इन्हींको पीसकर लेप करना चाहिये ।। १३ ।। अन्यच्च ।। जावित्री, पत्रज, गिलोय, मुनक्का, कश्मीरी पिट्ठा, दारुहलदी, हरडै, बहेडा, आंवला इन द्रव्यों का क्वाथ करे फिर ठंढा होनेसे सहत डालकर कुल्ली करनेसे मुखका पाक साफ हो जाये ।। १४ ।। पंचबक्कलका क्वाथ या त्रिफलाका क्वाथ सहत सहित कुल्ले करनेसे मुख पाकको शीघ्र शमन करता है ।। आम्रका बक्कल, पीपलका बक्कल, वटका बक्कल, पिलखनका बक्कल, गूगलका बक्कल इन पांच वृक्षोंके बक्कलोंको पंच वल्कल कहते हैं ।। १५ ।। परवलके पत्ते, नींबके पत्ते, जामुनके पत्ते, आमके पत्ते, चमेलीके पत्ते इनका क्वाथ करके या पंचवल्कल सहित इनको क्वाथ करके कुल्ले करनेसे मुखपाक शमन हो जाता है ।। १६ ।। अन्यच्च ।। दारुहलदी गिलोय, सुमननामकपुष्प वृक्षविशेष होता है उसके पत्ते लेने चाहिये अगर न मिले तो

चमेलीके पत्ते लेये, मुनक्का; जवासा, हरडै, बहेडा, आंवला इनका क्वाथ करके सहत डालकर कुल्ले करनेसे मुखकाशमन हो जाता है ।। १७ ।। इति मुखरोग-चिकित्सा । बांझककोडाकी जड, चौलाईकी जड इनको पानीमें पीसकर पीनेसे सब तरहके विषका नाश होता है । यह विषके नाश करनेके लिये बडा पराक्रमी अगद संज्ञक योग है ।। १८ ।। अन्यच्च ।। खरेंटीकी जड, शरपुंखाकी जड इनको पीसकर घृतसे चाटनेसे संपूर्ण विष, नाश हो जाते हैं ।। १९ ।। इति सर्पादिविष-चिकित्सा ।। मोरका पंख, मुरगेका पंख, सेंधानमक, तेल, सिरसम न्हींको कूटकर धूप देनेसे कीडेका वृश्चिकका विष नष्ट हो जाता है ।। २० ।। पलाशपापडेको आकके दूधमें पीसकर लेप करनेसे, अथवा सिरके बीज, पीपल छोटी इनको घृतमें पीसकर लेप करनेसे वृश्चिकके विषका होनेवाली उग्रपीडा नष्ट हो जाती है ।। २१ ।।

अजांघ्रिकल्कःसहसैन्धवेनमध्वाज्यमिश्रोविहितःकदुष्णः ।। दंशे-प्रलिप्तोहनेनतुल्यांपीडांक्षणात्कृंततिवृश्चिकस्य ।। २२ ।। इतिवृश्चिक-विषचि० ।। कर्षोन्मितंहाटकबालपुंखामूलंपिबेत्तंडुलतोयमिश्रम् ।। शिफा-मथैकांकनकस्ययुक्तांदुग्धेन नाशायशुनांविषस्य ।। २३ ।। इतिश्वविष-चिकित्सा ।। असिततिलसमेतैर्भोङ्गराजस्यपत्रैः प्रतिदिनमपियुक्तैः स्या-न्नरःकामरूपः ।। अमृतफलसिताद्यैश्चूर्णितैस्तैर्द्विमासात्प्रहतगदसमूहः कृष्णकेशश्चिरायुः ।। २४ ।। पीताश्वगंधापयसार्द्धमासंघृतेनतैलेनसुखा-म्बुनावा ।। कृशस्यपुष्टिंवपुषोविधत्ते बालस्यसस्यस्ययथाम्बुवृष्टिः ।। ।। २५ ।। इतिरसायनभेषजम् ।। ग्रंथान्विलोक्य प्रचुरप्रयोगान्पद्यैः स्व-कीयैः कतिचित्तदीयैः ।। प्रोक्ताश्चिकित्सारुचिराः शिशूनांतादेशकाला-दिसमीक्ष्यकुर्यात् ।। २६ ।। अहिक्षत्रान्वयेजातः पंडितैकशिरोमणिः ।। रामचंद्रार्चनरतोरामदासः सतांप्रियः ।। २७ ।। विद्वज्जनाह्लादकरोम-नस्वीमहीधरः सर्वजनाभिवंद्यः ।। लक्ष्मीनृसिंहांघ्रिसरोजभृंगस्तदात्म-जोभूद्विदितागमार्थः ।। २८ ।। कल्याणइत्युद्गतनामधेयस्तदात्मजोग्रंथ-वरान्विलोक्य ।। परोपकारायबबंधतंत्रंसतांसमालोकनयोग्यमेतत् ।। ।। २९ ।। युगवेदरसाकारमिते वर्षे नभेरवो ।। पूर्णिमायांचकारेदं लिलेख-चशिवालये ।। ३० ।।

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे नानाप्रयोगकथनं नाम चतुर्दशः पटलः ।। १४ ।।

समाप्तोयं ग्रंथः ।। शुभमस्तु ।।

बकरीका खुर, सेंधानमक इनको पीसकर सहत, घृत मिलाकर किंचित् गरम करके जहां पर बीछूने काटा हो वहां पर लेप करनेसे अग्निकी माफिक पीडाको एक क्षणमें नष्ट कर देता है ।। २२ ।। इतिवृश्चिकविषचिकित्सा ।। कचनारकी जड, झोझरूकी जड दोनों एक तोला लेकर चावलोंके पानीके साथ, बावले कुत्तेका विषनाश करनेके लिये पीना चाहिये अथवा केवल अकेली कचनारकी जड दुग्धसे पीनेसे कुत्तेक विष नष्ट हो जाता है ।।२३।। इति श्वविषचिकित्सा ।। काले तिल, और जल भंगराके पत्ते इनका नित्य सेवन करनेसे अथवा अमरफल मिसरी इनका दो मास सेवन करनेसे सर्व रोगोंके समूह नष्ट हो जाते हैं, काले बाल हो जाते हैं आयु निरोग होती है कामदेवकी माफिक रूपवान् मनुष्य हो जाता है ।। २४ ।। अन्योयोगः ।। पंद्रह १५ रोजतक असगंध गौके दूधके संग या जलसे पीनेसे कृस बालकके शरीरकी पुष्टि होती है जैसे सस्यकी पुष्टिको जलवृष्टि करती है ऐसे ।। २५ ।। इति रषायनभेषजम् ।। कल्याणवैद्य कहते हैं आत्रेयादिक बहुत से तंत्रों को देखकर और बहुतसे सिद्ध प्रयोगोंको देखकर अपने रचे पद्योंसे और कितने तंत्रोंके पद्योंसे बालकोंकी सुन्दर चिकित्सा कही है इनको वैद्यवर देशकालादिकोंको देखकर करे ।। २६ ।। कल्याणवैद्य अपने उद्धवको कहते हैं, अहिक्षत्र वंशमें होनेवाले पंडितोंमें शिरोमणि श्री रामचंद्रजीके पूजनमें रत संतोंके प्यारे ऐसे रामदासनामक वैद्य हुये उन्हींके पुत्र विद्वानोंके मनको आनंद करनेवाले समर्थ सब जनों से वंदित लक्ष्मीनृसिहके चरणकमलमें भ्रमररूप ऐसे महीधर नामक वैद्य हुये उन्हींके पुत्र हुये हैं वेदोंका अर्थ जिसने ऐसा वह कल्याणनामक वैद्य हुये कि जो कल्याण वैद्य बहुत श्रेष्ठ श्रेष्ठ ग्रथोंको देखकर और जनोंके उपकारके लिये श्रेष्ठ जनोंके देखनेलायक इस तंत्रकी रचना की ।। २७ ।। ।।२८ २९ ।। कब यह ग्रंथ बनाया है इस अपेक्षामें संवत मास तिथि कल्याण वैद्य लिखते हैं। संवत् १६४४ में श्रावणशुक्ल १५ पूर्णिमा रविवार शिवालयमें इस ग्रंथको पूर्ण करके लिखा था ।।३०।।

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां चतुर्दशः पटलः ।।१४।।

अथाश्विन्यादिसप्तविंशतिनक्षत्रेषूद्भवस्य रोगस्यशान्तिरभिधीयते ।।

अश्विन्यादिषुपीडास्याज्ज्वरोदाहःकलेवरे ।। तद्दोषशमनार्थायज्वरतापादिशान्तये ।। १ ।। दानंकुर्याद्विधानेनरोगशान्तिस्तदाभवेत् ।। औषधीनांप्रयोगाश्चभवन्तिफलदाका ।। २ ।। तत्रादावश्विन्यांरोगशान्तयेऽश्विनीदानम् ।। तथाचोक्तमादित्यपुराणे ।। सितमश्वंसमादायसुव-

र्णप्रतिमांरवेः ।। टंकप्रमाणतः कुर्यात्कांस्यपात्रेनिधारयेत् ।। ३ ।। घृतपूर्णेमुखं पश्यन्मंत्रंद्वादशभिःपठेत् ।। ४ ।। मंत्रः ।। भास्करायनमश्चैव कौमारायनमोनमः ।। अश्विनीसंभवांपीडांनिवारयनवाह्निकाम् ।। ५ ।। पुनर्मंत्रंत्रिभिरुक्त्वा दद्याद्दानंद्विजातये ।। ज्वरबाधाविनिर्मुक्तस्नानसारोग्यमाप्नुयात् ।। ६ ।। इत्यश्विन्यांरोगसंभवेऽश्विनीदानम् ।। १ ।।

अश्विनीसे लेकर सत्ताईस नक्षत्रोंमें होनेवाले रोगकी शांति लिखते हैं– अश्विन्यादिक नक्षत्रोंके रोज शरीरमें ज्वर दाहादिक पीडा हो तबतक नक्षत्र दोषशांतिके लिये और ज्वरतापादिकी शांतिके लिये मनुष्य विधिपूर्वक दान करे, दान करनेसे रोगशांति उसी वक्त हो जाती है और औषधियोंके प्रयोग फल देनेवाले हो जाते हैं। अब आदिमें अश्विनीनक्षत्रमें हुए रोगकी शांतिके लिये दानविधि लिखते हैं। आदित्यपुराणमें लिखा है ।। एक सफेद घोडेको मंगाकर तदनंतर ४ मासे सुवर्णकी सूर्यमूर्ति बनवाकर कांसीके पात्रम रखकर घृतसे पूर्णकरके १२ वार मन्त्र पढकर उसमें अपना मुख देखकर फिर मूलोक्त मन्त्र ३ वार पढकर ब्राह्मणको अश्वसहित दान देवे, दान देनेसे सर्व पीडासे निवृत्त होकर रोगी स्नान करलेता है ।। इत्यश्विनीदानशांतिविधिः ।। १ ।।

अथ भरण्यांरोगसंभवेभरणीदानशांतिः ।। उक्तंच विष्णुधर्मोत्तरे ।। द्विप्रस्थपरिमाणेनकांस्यपात्रं चकारयेत् ।। सार्द्धप्रस्थत्रयंनीत्वातिलंश्यामंसुनिर्मलम् ।। ७ ।। धर्मराजस्वरूपंचकृत्वासौवर्णनिर्मितम् ।। कर्षमात्रप्रमाणेनतिलपात्रेनिवेशयेत् ।। ८ ।। मंत्रेणानेनतत्पात्रंकृष्णविप्रायदापयेत् ।। मंत्रः ।। धर्मराजनमस्तुभ्यमेकादशदिनात्मकोम् ।। पीडांवारयहेदेवयमदोषसमुद्भवाम् ।। ९ ।। इति याकथिताशांतिर्भरण्यानैरुजात्मको ।। १० ।। इति भरण्यांरोगसंभवेभरणीदानशांतिविधिः ।। २ ।।

अब भरणी नक्षत्रमें रोग होनेसे भरणीकी शांति लिखते हैं– विष्णुपुराणके धर्मोत्तरखंडमें लिखा है ।। दो सेरका वजन में कांसीका पात्र लेकर ।। ३ ।। साढेतीन सेर काले तिल उसमें डालकर १तोला सुवर्णकी धर्मराजकी मूर्ति बनाकर तिलोंके ऊपर रखकर मूलोक्त मन्त्र पढकर काले ब्राह्मणको दे देवे रोगीको निरोगता प्राप्त होनेकी शांति यह कही है । इति भरणीदानशांति विधिः ।। २ ।।

अथ कृत्तिकादानशांतिर्लिख्यते ।। अग्निदोषसमुद्भूताकृत्तिकासंभवारुजा ।। तद्दोषशमनार्थायदानमुत्तममीरितम् ।। ११ ।। कर्षमात्रसुवर्णस्यवह्नेर्मूर्तितुकारयेत् ।। तंडुलंपात्रमाधायप्रतिमांतत्रपूजयेत् ।। १२ ।। मंत्रंसंलिख्यपात्रेऽस्मिन्दानंविप्रायदापयेत् ।। मंत्रः ।। कृपीटायनमस्तु-

भ्यंबाधांमेविनिवारय ।। नवसारसंभूतांवह्निदोषसपमुद्भवाम् ।। १३ ।। इत्येषाकथिता शांतिः कृत्तिकायानिरोगिकी ।। आयुरारोग्यतां यातिवह्निदोषविवर्जितः ।। १४ ।।

इति कृत्तिकारोगसंभवेकृत्तिकादानशांतिविधिः ।। ३ ।।

कृत्तिका नक्षत्रकी दानशांति लिखते हैं। अग्निदेवके दोषसे कृत्तिका नक्षत्रमें पीडा होती है ।। तद्दोषशमनके लिये यह उत्तम दान करना चाहिये १ तोला सुवर्णकी अग्निदेवकी मूर्ति बनवाकर एक पात्रमें मूलोक्त कृत्तिकाका मंत्र लिखकर उसमें तंडुल डालकर तंडुलके ऊपर मूर्ति रखकर पूजन करके ब्राह्मणको दे देवे यह कृत्तिकाकी शांति मुनियोंने कही है इसके करनेसे मनुष्य वह्निके दोषसे रहित होकर नीरोग आयुको प्राप्त हो जाता है ।।

इति कृत्तिकादानशांतिविधिः ।। ३ ।।

अथरोहिण्यांरोगसंभवेरोहिणीदानशांतिर्लिख्यते ।। उक्तंचब्रह्माण्डे ।। विप्रदोषाच्चरोहिण्यांज्वरोभवति दारुणः ।। तद्दोषशमनार्थायशांतिदानं समाचरेत् ।। १५ ।। पीतांगांब्रह्मणोमूर्तिसुवर्णस्यचकारयेत् ।। पीतवस्त्रइमंमंत्रंसंलिख्यतांचछादयेत् ।। १६ ।। टंकमात्रसुवर्णस्यप्रतिमा ब्रह्मणः शुभा ।। मंत्रः ।। पितामहनमस्तुभ्यंसप्तवासरसंभवाम् ।। निवारयमहाभागपीडामेतांज्वरोद्भवाम् ।। १७ ।। ब्राह्मणायददेद्दानंरोगान्निर्मुक्ततांनयेत् ।। १८ ।।

इति रोहिणीरोगसंभवेरोहिणीदानशांतिविधिः ।। ४ ।।

इसके बाद रोहिणी नक्षत्रकी दानशांति लिखते हैं।। ब्रह्माण्डपुराणमें लिखा है ।। ब्राह्मणके दोषसे रोहिणी नक्षत्रमें पीडा होती है तद्दोषकी शांतिके लिये यह दान करना चाहिये पीली गौ मंगाकर और ब्रह्माकी मूर्ति ४ मासे सुवर्णकी कराकर १ हाथ भर पीला वस्त्र लेकर उसपर मूलोक्त मंत्र लिखकर उससे मूर्ति आच्छादित करके ब्राह्मणको गौ सहित दे देये यह दान देनेसे रोगी रोगसे निर्मुक्त हो जाता है ।।

इति रोहिणीदानशांतिविधिः ।। ४ ।।

अथमृगशीर्षेरोगसंभवेमृगशीर्षदानशान्तिर्लिख्यते ।। मृगशीर्षेभवेद्रोगश्चंद्रदोषसमुद्भवः ।। तज्ज्वरशमनार्थायशांतिदानंसमाचरेत् ।। १९ ।। कांस्यपात्रंसमादायप्रस्थद्वयप्रमाणकम् ।। तन्मध्येपायसं धृत्वाचंद्रमूर्तिंचधारयेत् ।। पंचकर्षप्रमाणेनरुक्मेणनिर्मितांवराम् ।। २० ।। मंत्रः ।।

समुद्रतनयोदेवमासबाधांनिवारय ॥ रोहिणीपतयेतुभ्यंद्विजरूपायते-नमः ॥ २१ ॥ इमंमंत्रंसमुच्चार्यदशभिः प्रणतिंचरेत् ॥ ब्राह्मणायददेद्दानंरोगंनिर्मुक्ततां नयेत् ॥ २२ ॥ इति मृगशीर्षदानशांतिविधिः ॥ ५ ॥

इसके अनंतर मृगशिर नक्षत्रमें रोग होनेसे मृगशिरकी शांति लिखते हैं। चंद्रमाके दोषसे मृगशिर नक्षत्रमें ज्वरादिक रोग होते हैं। तद्दोषके शमनके लिये शांतिदान करना चाहिये, दो सेर वजनमें कांसीका पात्र लाकर इसको पायस अर्थात् खीरसे पूर्ण करके, तदनंतर ५ पांच तोले सुवर्णकी चंद्रमाकी मूर्ति बनवाकर इसमें पात्र रखकर मूलोवत मंत्रदश वार पढकर फिर नमस्कार करके ब्राह्मणको दे देवे यह दान देनेसे रोगी रोगसे । मुक्त हो जाता है ॥

इति मृगशिरदानशांतिविधिः ॥ ५ ॥

अथार्द्रायांरोगसंभवेचार्द्रादानशांतिर्लिख्यते ॥ लिंगपुराणे ॥ आर्द्रायांजायतेरोगः शिवदोषसमुद्भवः ॥ तज्ज्वरशमनार्थायदानंशांति चकारयेत् ॥ २३ ॥ श्वेतवर्णवृषंनीत्वाधूम्रवस्त्रेणछादितम् ॥ कर्षमानेन रुक्मेणशिवमूर्तिंप्रकल्पयेत् ॥ २४ ॥ मंत्रः ॥ वृषारूढनमस्तुभ्यंशूलिने-वरदायिने ॥ आर्द्रारोगनिवृत्त्यर्थंरुद्रबाधांनिवारय ॥ २५ ॥ इत्येकादभिर्मंत्रैर्जप्त्वाचप्रणमेच्छिवम् ॥ दत्त्वादानंचविप्रायरोगान्निर्मुक्ततांव्रजेत् ॥ २६ ॥ इत्यार्द्रादानशांतिविधिः ॥ ६ ॥

आर्द्रा नक्षत्रमें रोग होनेसे आर्द्राकी शांति लिखते हैं ॥ लिंगपुराणमें लिखा है ॥ शिवके दोषसे आर्द्रामें रोग होता है तद्दोषशमनके लिये शांति दान करना चाहिये सुपेद वर्णका बैल मंगाकर उसको खाकीवस्त्र उढादे फिर १ तोले सुवर्णकी शिवकी मूर्ति बनवाकर वृषभके ऊपर स्थापन करके मूलोक्त मंत्र एकादशवार पढ़कर नमस्कार करके ब्राह्मणको दे देवे यह दान देनेसे रोगी रोगसे छूट जाता है ॥ इत्यार्द्रादानशांतिविधिः ॥ ६ ॥

अथपुनर्वसौरोगसंभवेपुनर्वसुदानशांतिर्लिख्यते ॥ स्कंदपुराणे ॥ पुनर्वसोभवेद्रोगोदेवदोषसमुद्भवः ॥ तज्ज्वरशमनार्थायदानंशांतिचकारयेत् ॥ २७ ॥ पलार्द्धपरिमाणेनसुवर्णप्रतिमांशुभाम् ॥ स्वशरीरानुसारेण-सूत्रेणपरिवेष्टयेत् ॥ २८ ॥ रक्तपट्टेन संछाद्यहस्तेनीत्वानरःसुधीः ॥ मंत्रः ॥ देवतेदितिरूपत्वांनमामिकामरूपिणीम् ॥ सप्तवासरजांबाधां निवारयशुभानने ॥ २९ ॥ इतिमंत्रंसमुच्चार्यसप्तभिःप्रणतिंचरेत् ॥ द्विजायचददौदानंदक्षिणाभिमुखोभवेत् ॥ ३० ॥ एवंपुनर्वसोःशांतेरोग-निर्मुक्ततां व्रजेत् ॥ ३१ ॥ इतिपुनर्वसुदानशांतिविधिः ॥ ७ ॥

पुनर्वसु नक्षत्रमें रोग होनेसे पुनर्वसुनक्षत्रकी शांति लिखते हैं—स्कंदपुराणमें लिखा है—अदिति देवताओंकी माताके दोषसे पुनर्वसुनक्षत्रमें रोग होत्ता है तद्दोषशमनके लिये शांति करानी चाहिये । २ दो तोले सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर रोगीकी शरीरके अनुमान तीन तारका कच्चा सूत लेकर उस मूर्तिको वेष्टन करदे फिर लालवस्त्रसे मूर्ति ढककर रोगी अपने दक्षिण हाथमें लेकर मूलोक्तमंत्र सप्तवार पढके नमस्कार करके दक्षिणदिशाकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको दान दे देवे, ऐसे पुनर्वसुकी शांति करने से रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है । इति पुनर्वसुदानशांति विधि ॥ ७ ॥

अथपुष्ये रोगसंभवे पुष्यदानशांतिर्लिख्यते ॥ हरिवंशपुराणे ॥ पुष्यर्क्षेजायतेरोगोगुरुब्राह्मणदोषतः ॥ शांतिदानं समाचक्रे ज्वरपीडादिशांतये ॥ ३२ ॥ बृहस्पतेः कृतां मूर्ति कर्षमात्रसुवर्णतः ॥ चणकद्विदलप्रस्तसप्तके परिधाय च ॥ ३३ ॥ श्वेतवस्त्रेलिखेन्मंत्रंहरिद्राभिःसुधीर्नरः ॥ ३४ ॥ मंत्रः ॥ बृहस्पतेसुराचार्य्यनमस्तेपुष्यनायक ॥ सप्तवासरजांबाधां निवारय सुदारुणाम् ॥ ३५ ॥ सूत्रं शरीरमात्रेणपीतं तत्र निवेशयेत् ॥ पश्चिमाभिमुखोभूत्वादानंदद्याद्विजायते ॥ ३६ ॥ रोगोनिर्मुक्ततांयातिगुरुपुष्यस्यदानतः ॥ इतिपुष्यदानशांतिविधिः ॥ ८ ॥

पुष्यनक्षत्रमें रोग होनेसे पुष्यकी शांति लिखते हैं—हरिवंशपुराणमें लिखा है——गुरुके दोषसे और ब्राह्मणके दोषसे पुष्य नक्षत्रमें ज्वरादिक पीडा होती हैं; तद्दोषके शमनके लिये शांति दान करना चाहिये । १ एक तोला सुवर्णकी बृहस्पतिकी मूर्ति बनवाकर पीछे एक सफेदवस्त्रपर हलदीसे मूलोक्त मंत्र लिखकर सातसेर चनेकी दाल उसमें डालकर उसपर मूर्ति स्थापन करे फिर अपने शरीरके अनुसान पीला सूत्र नापकर उसी चनेकी दालमें रखकर पश्चिमकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको दान दे । ऐसे बृहस्पतिके दान से रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है ॥

इति पुष्यदानशांतिविधि ॥ ८ ॥

अथाश्लेषायांरोगसंभवआश्लेषादानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचपाद्मेपातालखंडे ॥ आश्लेषायांभवेद्रोगोनागदोषसमुद्भवः ॥ तद्दोषशमनार्थायमृत्युयोगप्रशांतये ॥ ३७ ॥ शेषस्यप्रतिमांकुर्य्यात्पलमात्रसुवर्णतः ॥ द्वादशांगुलमानेनश्वेतवस्त्रेण छादयेत् ॥ ३८ ॥ शरीरसूत्रमानेनपुच्छंचपरिवेष्टयेत् ॥ प्रस्थत्रयप्रमाणे च तंडुलेपरिधायच ॥ ३९ ॥ तन्मध्येलेखयेन्मंत्रमुत्तराभिमुखोविशन् ॥ मंत्रः ॥ पातालवासिनेतुभ्यं मृत्युयोगादि-

शांतये ।। नमोऽश्लेषापतेदेवशेषनागप्रसीदमे ।। ४० ।। इत्येतत्क्रियते-दानंब्राह्मणायतपस्विने ।। मृत्युयोगाद्विमुच्चेतपरमायुः सजीवति ।। ४१ ।।

इत्याश्लेषादानशांतिविधिः ।। ९ ।

आश्लेषानक्षत्रमें रोग होनेसे आश्लेषाकी शांति लिखते हैं—पद्मपुराणके पातलखंडमें लिखा है-सपाक दोषसे आश्लेषायें रोग होता है तद्दोषकीशांतिके लिये और मृत्युयोगकी शांतिके लिये दान कराना चाहिये ४ चार तोले सुवर्ण की शेष नाग की मूर्ति बनवाकें उसपर १२ अंगुलका सफेद वस्त्र अच्छादित करके रोगीके शरीरके अनुमान सूत लेकर नागके पुच्छको वेष्टित करदे फिर एक पत्र-लेकर उसमें मूलोक्त मंत्र लिखकर तीन सेर चावल डालकर उसमें शेषनागको स्थापन करके उत्तराभिमुख होकर तपस्वी ब्राह्मणको दे देवे इस दानके करनेसे रोगी मृत्युयोगसे छूटकर बहुत वर्षों तक जीता है ।।

इत्याश्लेषादानशांतिविधि ।। ९ ।।

अथमघायांरोगसंभवेमघादानशांतिर्लिख्यते ।। उक्तं चगारुडे ।। मघायां जायते पीडाज्वरदाहसमन्विता ।। विंशतिवारसंभूतापितृदोष समुद्भवा ।। तद्दोषविनिवृत्त्यर्थं पितृशांति समाचरेत् ।। ४२ ।। पलतुर्य-प्रमाणेनस्वर्णमूर्ति च कारयेत् ।। श्वेतवस्त्रे लिखेन्मंत्रंछादयेत्तेनतन्मु-खम् ।। ४३ ।। मंत्रः ।। विंशतिवारजांपीडांनिवारयगदाधर ।। पितृदेवन-मस्तुभ्यं शरीरारोग्यतांकुरु ।। ४४ ।। मघानक्षत्ररोगस्यशांतिर्दानवि-धानतः ।। द्विजायऋक्पाठकायदानंवृद्धायदापयेत् ।। ४५।। इतिमघा-दानशांतिविधिः ।। १० ।।

मघा नक्षत्रमें रोग होनेसे मघाकी शांति लिखते हैं। गरुडपुराणमें लिखा है—पितृदोषसे मघानक्षत्रमें ज्वरदाहादिककी पीडा २० दिन रहनेवाली होती है। तद्दोषशमनताके लिये पितृशांति करानी चाहिये। १ तोला सुवर्णकी पितृमूर्ति बनवाकर सफेद वस्त्रपर मूलोक्त मंत्र लिखकर उससे मूर्तिका मुख अच्छादित करके विधानपूर्वक वेद पढे हुए वृद्ध ब्राह्मणको दान में दे देये ।।

इति मघादानशांतिविधिः ।। १० ।।

अथपूर्वाफाल्गुन्यांरोगसंभवेपूर्वा फाल्गुनीदानशांतिर्लिख्यते ।। रोगः स्यात्पूर्वफाल्गुन्यांदेवदोषसमुद्भवः ।। मृत्युयोगः समाख्यातस्तद्दोषश-मनाय च ।। ४६ ।। शांतिदानं समाचक्रे गोदानं दानमुत्तमम् ।। रक्त-वर्णमयीं धेनुं रक्तवस्त्रेण छादिताम् ।। ४७ ।। भगस्यप्रतिमांकुर्यात्सुवर्ण-

पलमात्रतः ।। रक्तवस्त्रेलिखेन्मंत्रंमूर्तिचपरिछादयेत् ।। ४८ ।। मंत्रः ।। भगायचनमस्तुभ्यंमृत्युद्भवकलेवर ।। मृत्ययोगभवांबाधां निवारयसि मे प्रभो ।। ४९ ।। उतराभिमुखं विप्रंकृत्वादानंप्रदापयेत् ।। मृत्युयोगाद्विमुच्येत परमायुर्भवेन्नरः ।। ५० ।।

इति पूर्वाफाल्गुनीदानशांतिविधिः ।। ११ ।।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें रोग होनेसे पूर्वाफाल्गुनीकी शांति लिखते हैं, भगदेवके दोषसे होनेवाला रोग पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें होता है मृत्यु योग ऋषियोंने वर्णन किया है तद्दोषशमनके लिये गौका उत्तम दान शांति कराना चाहिये लाल रंगकी गौ लाकर लालवस्त्रसे आच्छादित कर दे फिर ४ तोले सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर लालवस्त्र पर मूलोक्त मंत्र लिखकर मूर्तिको उससे अच्छादितकर उत्तराभिमुख ब्राह्मणको दान करके गौसहित दे देये यह दान देनेसे रोगी मृत्युयोगसे छूटकर और बडी आयुको प्राप्त होता है ।।

इति पूर्वाफाल्गुनीशांतिविधि ।। ११ ।।

अथोत्तरफाल्गुन्यांरोगसंभवे चोत्तरफाल्गुनीदानशांतिर्लिख्यते ।। उक्तं च नृसिंहपुराणे ।। रोगोह्युत्तरफाल्गुन्यांराक्षसीदोषसंभवः ।। सप्तवासरजापीडाज्वरादियुक्तदारुणा ।। ५१ ।। तद्दोषशमनार्थायशांतिदानं समाचरेत् ।। दध्योदनं महाश्रेष्ठं बहुशर्करयान्वितम् ।। ५२ ।। ब्राह्मणान्सप्तसंख्याकान्भोजनं कारयेद्बुधः ।। पत्रेऽश्वत्थस्यसंलिख्यमंत्रंलाक्षारसेनच ।। ५३ ।। दक्षिणस्यांचदिग्भागेतडागेजलसंक्षये ।। रोगिणं दर्शयित्वाचक्षिपेज्ज्वरप्रशांतये ।। ५४ ।। मंत्रः ।। भगदेवपतेतुभ्यंनमःसलिलवासिने ।। सप्तवासरजां पीडां निवारयप्रसीदमे ।। ५५ ।। रोगान्निर्मुक्ततांयातिचिरजीवीभवेन्नरः ।। अल्पाद्विमुच्यतेरोगी भगदेवप्रसादतः ।। ।। ५६ ।। इत्युत्तराफाल्गुनीदानशांतिविधिः ।। १२ ।।

उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रमें रोग होनेसे उत्तराफाल्गुनीकी शांति लिखते हैं। नृसिंहपुराणमें लिखा है–राक्षसके दोषसे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें ज्वरादिक पीडा ७ रोज रहनेवाली होती है, तद्दोषके शमनके लिये शांति करानी चाहिये, ७ सात ब्राह्मणोंको दही भात चीनी भोजन कराना चाहिये, फिर पीपलवृक्षके पत्ते पर लाखके रससे मूलोक्त मंत्र लिखकर रोगीको दिखाकर दक्षिणदिशामें सूखे तालाबमें डाल देये ऐसे यत्न करनेसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है और बहुतकाल जीता है ।।

अथ हस्तेरोगसंभवेहस्तदानशांतिर्लिख्यते ।। उक्तं च भविष्योत्तर ।। हस्तर्क्षे जायते रोगोरविदोषसमुद्भवः ।। पक्षवासरजापीडाज्वर-

दाहातिदारुणा ।। ५७ ।। तद्दोषशमनार्थाय शांति दानंसमाचरेत् ।। द्विरदंगजमादायसूर्यमूर्तिविराजितम् ।। ५८ ।। दशकर्षप्रमाणेन सुवर्णप्रतिमाशुभा ।। ततस्तंडुलमादायदक्षिणे चशुभे करे ।। मंत्रं त्रिभिःसमुच्चार्य गजोपरिपरिक्षिपेत् ।। ५९ ।। मंत्रः ।। नमस्तुभ्यंगजेन्द्राय द्विरदायजयैषिणे ।। पक्षवासरजां पीडां निवारये प्रसीदमे ।। ६० ।। कंबलेन समाच्छाद्य दद्याद्दानं द्विजायच ।। पूर्वाभिमुखमास्थायनरोनैरुज्यतां व्रजेत् ।। ६१ ।। इतिहस्तदानशांतिविधिः ।। १३ ।।

हस्तनक्षत्रमें रोग होनेसे हस्तकी शांति लिखते हैं—सूर्यके दोषसे हस्तनक्षमें रोग होता है रोग उत्पन्न होकर पंद्रह दिन तक ज्वरदाहादिककी दारुणपीडा रहती है, तद्दोषशमनके लिये शांति करनी चाहिये, दो दांतका हाथी मंगाकर उसपर १० तोले सुवर्णकी सुन्दर मूर्ति बनवाकर स्थापन करके दक्षिण हाथमें तंडुल लेकर ३ तीन वार मूलोक्त मंत्र पढकर हस्तीपर रखे, फिर कंबलसे आच्छादन करके पूर्वको मुखकरके ब्राह्मणको दे देये यह दान करनेसे रोगी निरोगताको प्राप्त हो जाता है।

इति हस्तशांतिविधिः ।। १३ ।।

अथ चित्रायां रोगसंभवे चित्रादानशांतिर्लिख्यते ।। चित्रायांजायते रोगोविप्रद्रोहसमद्भवः ।। रुद्रवासरजा पीडातद्दोषशमनाय च ।। ६२ ।। शांतिदानकरो धीमानोगनिर्मुक्ततांव्रजेत् ।। धूम्रवर्णं वृषं नीत्वागोधूमोन्मानसंख्यकम् ।। ६३ ।। ताम्रपात्रेनिधायात्ररक्तवस्त्रेणछादयेत् ।। तद्वस्त्रेलिख्यतेमंत्रंनमस्कृत्यविधानतः ।। ६४ ।। मंत्रः ।। त्वाष्ट्रंदेवनमस्तुभ्यं चित्रेशाय नमोस्तुते ।। रुद्रवासरजं रोगं निवारय सदा प्रभो ।। ६५ ।। ब्राह्मणाय ददौ दानमीशानाभिमुखोनरः ।। त्वाष्ट्रदानविधिः प्रोक्तो नराणां रोगमुक्तये ।। ६६ ।। इति चित्रादानशांतिविधिः ।। १४ ।।

चित्रामें रोग होनेसे चित्राकी शांति लिखते हैं। ब्राह्मणके द्रोहसे उत्पन्न होनेवाला रोग चित्रानक्षत्रमें होता है वह पीडा ११ रोज रहती है तद्दोषकी शांति के लिये बुद्धिमान रोगी दान करनेसे रोगसे छूट जाता है खाकीरंगका बैल मंगाकर फिर १ मन भर गेहूं तांबेके पात्रमें भरकर लालवस्त्र पर मूलोक्त मंत्र लिखकर उसपर ढककर ईशानदिशाकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको वृषभसहित दान करके दे देये मनुष्योंके रोग दूर होनेके लिये चित्राकी दान विधि यह कही है ।।

इति चित्राशांतिविधिः ।। १४ ।।

अथस्वात्यां रोगसंभवे स्वातिदानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तं च वायुपुराणे ॥ स्वात्यांसंजायतेपीडावायुदोषसमुद्भवा ॥ मृत्युयोगःसमाख्यातस्तस्मिन्रोगीनजीवति ॥ ६७ ॥ शतौषधीकृतेवापि विना शांत्या न जीवति ॥ मृत्युयोगविनाशायशांतिदानं समाचरेत् ॥ ६८ ॥ सुंदरंवृषभंनीत्वासितश्याममहोज्ज्वलम् ॥ शतप्रस्थप्रमाणेनतंडुलंसितवस्त्रके ॥ ६९ ॥ वृषपृष्ठे समाधायधूम्रवस्त्रपरिवृतम् ॥ वायुकोणेसमास्थाय व्यजनेमंत्रमालिखेत् ॥ ७० ॥ मंत्रः ॥ अंजनीपतयेतुभ्यंवायवेस्वामिनेनमः ॥ मृत्ययोगभवांबाधां निवारयप्रसीदमे ॥ द्विजायचददेद्दानं परमायुः सजीवति ॥ ७१ ॥ इति स्वातिदानशांतिविधिः ॥ १५ ॥

स्वातिनक्षत्रमें रोग होनेसे स्वातीकी शांति लिखते हैं। वायुके दोषसे स्वातिमें पीडा होती है यह मृत्युयोग शास्त्रमें वर्णन किया है शत औषधीके करनेसे भी वगैर शांतिके स्वातिमें होनेवाली पीडा शमन नहीं होती है इसीतलिये मृत्युयोग दूर करनेको शांतिदान करना चाहिये बहुत सुंदर कुछ श्याम कुछ सफेद ऐसा बैल मंगाये फिर ॥ २ ॥ अढाई मन चावल सफेदवस्त्रमें बांधकर बैलकी पीठपर रखकर खाकी वस्त्र उसपर और ढककर फिर १ बीजनेपर मूलोक्त मंत्र लिखकर वह भी वृषभपर रखकर वायुकोणमें स्थित होकर ब्राह्मणको दान दे देये यह दान देनेसे रोगी रोगसे छूटकर बहुत दिनतक जीता है ॥

इति स्वातिशांतिविधिः ॥ १५ ॥

अथविशाखायांरोगसंभवेविशाखादानशांतिर्लिख्यते॥उक्तं च स्कंदपुराणे ॥ विशाखायां भवेद्रोगो देवाग्न्योर्दोषसंभवः ॥ तिथिवासरजापीडातद्दोषशमनाय च ॥ ७२ ॥ शक्राग्न्योःकारयेन्मूर्तिकर्षमात्रसुवर्णजाम् ॥ चतुःप्रस्थप्रमाणेन कांस्यपात्रं च कारयेत् ॥ ७३ ॥ पंचप्रस्थप्रमाणेनतिलंश्वेतं निधारयेत् ॥ मंत्रंतत्रलिखेद्धीमान्पीतरक्तेचवाससी ॥ पूर्वाभिमुख आविश्यदद्याद्दानंद्विजातये ॥ ७४ ॥ मंत्रः ॥ देवेन्द्राय नमस्तुभ्यमग्नयेब्रह्मसाक्षिणे ॥ पक्षवासरजांपीडांनिवारयप्रसीदमे ॥ ॥ ७५॥ ऊर्द्धाधोमुखमास्थायनमस्कारद्वयं चरेत् ॥ रोगीनिर्मुक्ततांयातिविशाखादानशांतितः ॥ ७६ ॥ इतिविशाखादानशांतिविधिः ॥ १६ ॥

विशाखामें रोग होनेसे, विशाखाकी शांति लिखते हैं। स्कंदपुराणमें लिखा है—इंद्रके और अग्निके दोषसे विषाखा नक्षत्रमें रोग होता है वह पीडा १५ दिन-

तक रहती है तद्दोषकी शांतिके लियें १ एक तोला सुवर्णकी इंद्रकी और अग्निकी मूर्ति बनवाकर ४ सेर वजनका कांसेका पात्र लेकर उसमें ५ सेर सफेद तिल डालकर उसमें मूर्तियोंको स्थापन करके फिर पीला और लाल वस्त्रपर मूलोक्त मंत्र लिखकर मूर्तियोंको उठकर पूर्वको मुख करके ब्राह्मणोंको दे देये तत्पश्चात् ऊपरको मुख करके और नीचेको मुख करके दो नमस्कार करे ऐसे विशाखाकी शांति करानेसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है ।।

इति विशाखाशांतिः ।। १६ ।।

अथानराधायांरोगसंभवेऽनुराधादानशांतिर्लिख्यते ।। रोगः स्यादनुराधायां मित्रदेवस्य दोषतः ।। षष्टिवासरजाबाधातद्दोषशमनायतु ।। ७७ ।। कर्षार्द्धपरिमाणेनमूर्ति रुक्मेण कारयेत् ।। विधिनामित्रदेवस्य रक्तवस्त्रेण छादितम् ।। ७८ ।। प्रस्थत्रयप्रमाणेनकांस्यपात्रंचकारयेत् ।। तत्र मंत्रं लिखित्वा च दधिप्रस्थंसमावपेत् ।। ७९ ।। उत्तराभिमुखोभूत्वाब्राह्मणाय प्रदापयेत् ।। मंत्रः ।। मित्रदेवनमस्तुभ्यमनुराधापतयेनमः ।। निवारयसिमे बाधां षष्टिवासरसंभवाम् ।। ८० ।। कुर्याच्छान्तिविधानेनरोगान्निर्मुक्ततांनयेत् ।। ८१ ।। इत्यनुराधादानशांतिविधि ।। १७ ।।

अनुराधा नक्षत्रमें रोग होनेसे अनुराधाकी शांति लिखते हैं मित्रदेवके दोषसे अनुराधामें रोग होता है ६० दिनतक पीडा रहती है तद्दोषकी शमनताके लिये ६ मासे सुवर्णकी मूर्ति मित्रदेवकी बनवाकर लाल वस्त्रसे आच्छादित करके फिर तीन सेरके वजनमें कांसीका पात्र लेकर उसमें मूलोक्त लिखकर सेर दही डालकर उत्तर की तरफ मुखकरके ब्राह्मणको दे देवे विधानपूर्वक शांति करनेसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है ।। इत्यनुराधाशांतिविधिः ।। १७ ।।

अथज्येष्ठायारोगसंभवे ज्येष्ठादानशांतिर्लिख्यते ।। उक्तंचशक्रयामले ।। ज्येष्ठायांसंभवोरोगोमृत्ययोगसमाह्वयः ।। नजीवतिकदारोगीदानशांत्यादिभिर्विना ।। ८२ ।। तद्दोशमनार्थायशांतिदानंसमाचचरेत् ।। कर्षमात्रं सुवर्णं च पीतवस्त्रे निवेशयेत् ।। तन्मध्येलेखयेन्मंत्रंपूर्वाभिमुखआविशन् ।। ८३ ।। मंत्रः ।। शक्रायदेवदेवाय नमस्तुभ्यं प्रसीदमे ।। मृत्युयोगभवांबाधांनिवारयशचीपते ।। ८४ ।। इति गुप्तंकृतंदानंरोगान्मृत्योर्विमुंचति ।। दीर्घायुर्जीवतेलोकेदानशांतिप्रभावतः ।। ८५ ।।

इति ज्येष्ठादानशांतिविधिः ।। १८ ।।

ज्येष्ठानक्षत्रमें रोग होनेसे ज्येष्ठाकी शांति लिखते हैं। शक्रयामलमें लिखा है–ज्योष्ठा नक्षत्रमें यदि रोग उत्पन्न होये वह मृत्युयोगकी माफिक होता है वगैर दानशांतिके रोगीका अच्छा होना असंभव है इसलिये तद्दोषशमनके हेतु शांति करना चाहिये एक पीला कपडा लेकर उस पर मूलोक्तमंत्र लिखकर १ तोला सुवर्ण बांधकर पूर्वको मुखकरके ब्राह्मणको दे देवे यह गुप्तदान करनेसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है और दीर्घायु होजाती है॥

इति ज्येष्ठादानशांतिविधिः॥ १८॥

अथमूलेरोगसंभवेमूलादानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचादिपुराणे ॥ मूले सञ्जायते रोगोह्यनाचारसमद्भवः ॥ नववासरजापीडातद्दोषशमनायच ॥८६॥ पलद्वयसुवर्णेननैर्ऋतप्रतिमाकृता ॥ श्यामवस्त्रेणसंछाद्य दक्षिणाभिमुखोविशन् ॥८७॥ प्रस्थद्वयघृतंनीत्वालोहपात्रेनिधापयेत् ॥ नवभिरुच्चरेन्मंत्रंमुखंतत्रविलोकयेत् ॥८८॥ मंत्रः नमस्तेदैत्यराजायनैर्ऋतायकृतार्थिने ॥ नववासरजांपीडांनिवारयचतुष्टिद ॥ दत्त्वादानञ्चविप्रयरोगंनिमुक्ततां नयेत् ॥८९॥

इति मूलदानशांतिविधिः॥ १९॥

मूलनक्षत्रमें रोग होनेसे मूलकी शांति लिखते हैं। आदि पुराणमें लिखा है आचार रहित रहनेसे मूलनक्षत्रमें रोग पैदा होता है नौ रोजतक पीडा रहती है पद्दोषकी शांतिके लिये ८ तोले सुवर्णकी नैर्ऋत देवकी मूर्ति बनवाकर काले वस्त्रसे आच्छादित करदे फिर दो सेर घृत लोहके पात्रमें डालकर दक्षिणकी तरफ मुखकरके ९ नौवार मूलोक्त मंत्र पढकर रोगी अपना मुखदेखकर मूर्तिसहित ब्राह्मणको दान देनेसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है॥

इति मूलशांतिविधिः॥ १९॥

अथपूर्वाषाढेरोगसंभवेपूर्वाषाढदानशन्तिर्लिख्यते ॥ उक्तं च कौर्मे ॥ पूर्वाषाढे भवेद्रोगो जलदोषसमद्भवः ॥ मृत्ययोगः समाख्यातस्तद्दोषविनिवृत्तये ॥ पंचहस्तप्रमाणेन सितवस्त्रं समाददेत् ॥९०॥ पश्चिमाभिमुखोभूत्वातंडुलंप्रस्थसप्तकम् ॥ तत्रैव लेखयेन्मंत्रं जलमादौ प्रपूज्य च ॥९१॥ मंत्रः ॥ नमः पावनरूपायव्यापिनेपरमात्मने ॥ मृत्युयोगभवांबाधांनिवारयचकेशव ॥९२॥ दानंदत्त्वाब्राह्मणाय मृत्युबन्धाद्विमुंचति ॥ मृत्ययोगकृताद्दानात्परमायुः सजीवति ॥९३॥ इति पूर्वाषाढदानशांतिविधिः ॥२०॥

पूर्वाषाढ नक्षत्रमें रोग होनेसे पूर्वाषाढकी शांति लिखते हैं ।। कूर्मपुराणमें लिखा है—जलके दोषसे पूर्वाषाढ़ नक्षत्रमें रोग मृत्युयोगकी माफिक होता है तद्दोषकी शमनताके लिये ५ पांच हाथका सफेद वस्त्र लेकर उसपर मूलोक्त मंत्र लिखकर ७ सात सेर चावल उसमें बांधकर पश्चिम दिशाकी तरफ मुख करके प्रथम जलका पूजन करके ब्राह्मणको दान देनेसे मृत्युकी बाधासे रोगी छूटकर बहुत दिनतक जीता है ।।

इति पूर्वाषाढशांतिविधिः ।। २० ।।

अथोत्तराषाढेरोगसंभवेरोगदानशांतिर्लिख्यते ।। रोगःस्यादुत्तराषाढेश्राद्धलोपसमुद्भवः ।। मासपीडा समुद्भूतातद्दोषशमनायच ।। ।। ९४ ।। पलद्वयप्रमाणेन सुवर्णेनचकारयेत् ।। प्रातर्मांविश्वदेवस्यश्वेतवस्त्रपरिवृताम् ।। ९५ ।। दश प्रस्थानुमानेनसिततंडुलमुत्क्षिपेत् ।। लिखेन्मंत्रंचतत्रैवपश्चिमाभिमुखोवसन् ।। ९६ ।। मंत्रः ।। नमोविश्वप्रबोधायविश्वदेवनमोस्तुते ।। मासोद्भवमहापीडांनिवारयसनातन ।। ।। ९७ ।। ब्राह्मणायददेद्दानंरोगनिर्मुक्ततांनयेत् ।। इत्युत्तराषाढदानशांतिविधिः ।। २१ ।।

उत्तराषाढनक्षत्रमें रोग होनेसे उत्तराषाढकी शांति लिखते हैं श्राद्धकर्म्मके लोप करनेसे उत्तराषाढनक्षत्रमें रोग एक मासतक पीडा देने वाला उत्पन्न होता है तद्दोषके शमनके लिये विश्वेदेवकी मूर्ति ८ तोले सुवर्णकी बनवाकर सफेद वस्त्रमें मूलोक्त मंत्र लिखकर मूर्तिको उठाकर एक पात्रमें दश सेर चावल डालकर ऊपर मूर्ति स्थापन करके पश्चिमकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको देनेसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है ।।

इत्युत्तराषाढशांति ।। २१ ।।

अथश्रवणे रोगसंभवे श्रावणदानशांतिर्लिख्यते ।। उक्तंचवामनपुराणे ।। श्रीवणर्क्षे भवेद्रोगो मातृपित्रोस्तुदोषजः ।। शिववासरजापीडाज्वरातिसारसंभवाः ।। ९८ ।। तद्दोषशमनार्थाय शांतिदानं समाचरेत् ।। निमंत्र्यब्राह्मणंश्रेष्ठं सितवस्त्रं मनोहरम् ।। ९९ ।। पंच हस्तमितं वस्त्रं मंत्रं तत्र लिखेद्बुधः ।। सिततंडुलपूर्णंचघटंमृन्मयमत्तमम् ।। १०० ।। दशपूगफलं मध्ये दशमुद्रासमाकुलम् ।। पूर्वाभिमुखआविश्य चंदनेन समर्चयेत् ।। १०१ ।। मंत्रः ।। विष्णवे श्रवणेशायगोविंदायनमोनमः ।। रुद्रवासरजांपीडांविनाशयमहोत्कटाम् ।। १०२ ।। इतिशांत्या-

देद्दानंब्राह्मणायविशेषतः ।। रोगोनिर्मुक्ततांयातिपरमायुः सजीवतिद ।। १०३ ।। इतिश्रवणदानशांतिविधिः ।। २२ ।।

श्रवणनक्षत्रमें रोग होनेसे श्रवणकी शांति लिखते हैं ।। वामनपुराणमें लिखा है–माता पिताके दोषसे श्रवण नक्षत्रमें रोग होता है ११ दिनतक ज्वरातिसारकी पीडा रहती है. तद्दोषकी शांतिके लिये दानविधि करानी चाहिये. ब्राह्मण निमंत्रित करके सफेद वस्त्र पहिराने चाहिये. फिर ५ पांच हाथका सफेद वस्त्र लेकर उसपर मूलोक्त मंत्र लिखकर फिर मृत्तिक का कलश तंडुलोंसे पूर्ण करके १० सुपारी उसमें डालदे और १० रुपये डालदे कलशपर वह वस्त्र ढककर पूर्वको मुख करके चंदनसे कलशका पूजन करके ब्राह्मणको दान दे देये ऐसे दान करनेसे रोगी रोगसे छूट जाता है और बहुत दिन तक जीता है ।। इति श्रवणशांति ।। २२ ।।

अथधनिष्ठायांरोगसंभवेधनिष्ठिादानशांतिर्लिख्यते ।। उक्तंचभविष्योत्तरे ।। रोगःस्याच्चधनिष्ठायामपमानसमुद्भवः ।। पक्षवासरजापीडातद्दोषशमनायच ।। १०४ ।। प्रस्थत्रयप्रमाणेनकांस्यपात्रंचकारयेत् ।। विलिप्य चन्दनेनैवशुष्कंकुर्य्याद्विधानतः ।। १०५ ।। तन्मध्ये लिख्यतंमंत्रंसुवर्णस्यशलाकया ।। पंचप्रस्थप्रमाणेन तंडलंतत्रनिक्षिपेत् ।। १०६ ।। हरितवस्त्रेणसंछाद्यपश्चिमाभिमुखोभवन् ।। रुक्ममुद्राद्वयंधृत्वादानं दद्याद्विजातये ।। १०७ ।। मंत्रः ।। वासुदेवायदेवाय धनिष्ठेशायतेनमः ।। पक्षवासरजांपीडांनिवारयवसुप्रद ।। १०८ ।। शांतिदानकृतेनापिरोगान्निर्मुक्ततां व्रजेत् ।। इति धनिष्ठादानशांतिविधिः ।। २३ ।।

धनिष्ठा नक्षत्रमें रोग होनेसे धनिष्ठाकी शांति लिख ते हैं। भविष्योत्तरपुराण में लिखा है–किसीका अपमान करनेसे धनिष्ठा नक्षत्रमें रोग होता है १५ पंद्रह रोज तक पीडा रहती है तद्दोषकी शमनताके लिये तीन सेर वजनका काँसेकापात्र लेकर उसके मध्य चंदनसे लेपन करके सुखा लेये फिर स्वर्णकी शलाकासे उस पात्रके मध्यमें मूलोक्त मंत्र लिखकर पांच सेर चावल डालकर हरे कपडेसे आच्छादन करके उसमें २ सुवर्णकी मुद्रा रखकर पश्चिमदिशाकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको दे देये यह दान देनेसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है ।। इति धनिष्ठादानशांतिविधिः ।। २३ ।।

अथशतभिषायांरोगसंभवे शतभिषादानशांतिर्लिख्यते ।। शतभिषाभिधनक्षत्रेरोगः स्याज्ज्वालदोषतः ।। रुद्रवासरजापीडातद्दोषशमनायच ।। १०९ ।। रीत्याश्चपंचप्रस्थेनघटंकृत्वामनोहरम् ।। प्रस्थत्रयंघृतनीत्वाकर्षंस्वर्णंतुप्रक्षिपेत् ।। ११० ।। समंताच्चंदनेनैव लेपयेच्-

ष्कमाचरेत् ।। तत्रैवले खयेन्मंत्रंसितवस्त्रेण छादयेत् ।। १११ ।। मन्त्रः ।। वरुणायनमस्तुभ्यंदेवायवरदायिने ।। रुद्रवासरजांपीडांनिवायरकलाधर ।। ११२ ।। उत्तराभिमुखोभूत्वादानंदद्याद्द्विजातये ।। नैरोग्यतांव्रजेद्रोगीपरमायुः सजीवति ।। ११३ ।।

इति शतभिषादानशांतिविधि ।। २४ ।।

शतभिषानक्षत्रमें रोग होनेसे शतभिषाकी शांति लिखते हैं जलके दोषसे शतभिषानक्षत्रमें रोग होता है ११ दिन तक पीडा रहती है तद्दोषके शमनके लिये ५ सेर पीतलका कलश मनोहर करके ३ सेर घृत डालकर १ तोला सुवर्ण उसमें डालदे फिर चारों तरफ चन्दनसे लेप करके सुखालेये उसमें मूलोक्त मंत्र लिखकर सफेदवस्त्रसे आच्छादन करके उत्तरकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको दान देये यह दान देनेसे रोगी निरोगी होकर बहुत दिनतक जीता है ।। इतिशतभिषादानशांति विधिः ।। २४ ।।

अथपूर्वाभाद्रपदेरोगसंभवे पूर्वाभाद्रपददानशांतिर्लिख्यते । उक्तंचमार्कंडेये ।। पूर्वाभाद्रपदेरोगोजायते जीवघातजः ।। मृत्ययोगस्समाख्यातस्तद्दोषशमनायच ।। ११४ ।। लोहपात्रंसमानीयनवप्रस्थप्रमाणतः ।। सप्तप्रस्थतिलंनित्वाश्यामवर्णशवोपमम् ।।११५ ।। कृष्णवर्णामजांनीत्वाऽसितवस्त्रेण छादयेत् ।। ग्राह्यंप्रस्थद्वयंतैलंतस्मिन्दृष्ट्वा मुखंशुभम् ।। ११६ ।। तत्रैवसप्तभिर्मंत्रंपठित्वामाषमुत्क्षिपन् ।। उत्तराभिमुखोभूत्वादानंदद्याद्द्विजातये ।।११७ ।। मंत्रः ।। अजपादनमस्तुभ्यंमृत्युबाधाव्यपोहक ।। मृत्युयोगभवांबाधांनिवारयप्रसीदमे ।। ११८ ।। मृत्ययोगभवाद्रोगान्मच्यतेनात्रसंशयः ।। इति पूर्वाभाद्रपददानशांतिविधिः ।। २५ ।।

पूर्वा भाद्रपदनक्षत्रमें रोग होनेसे पूर्वाभाद्रपदकी शांति लिखते हैं–मार्कंडेय पुराणमें लिखा है–जीवके घात करनेसे पूर्वाभाद्रपदक्षत्रमें रोग होता है वह मृत्यु रोगके माफिक मुनियोंने कहा है तद्दोषकी शांतिके लिये ९ सेर वजनमें लोहका पात्र लेकर उसमें ७ सेर काले तिल भर देये फिर एक कालीबकरी लाकर उसको काला कपडा उढाकर दो सेर तिलोंका तेल एक पात्रमें डालकर रोगी अपना मुख देखकर सात वार मूलोक्त मंत्र पढकर ऊपरको उडद फेंकर फिर उत्तरको मुख करकेलोहपात्र, बकरी, तेल सब वस्तु दान करके ब्राह्मणको देदेये यह दान करनेसे रोगी रोगसे छूट जाता है इसमें कुछ संशय नहीं ।।

इति पूर्वाभाद्रपदशांति ।। २५ ।।

अथोत्तराभाद्रपदरोगसंभवेतद्दानशांतिर्लिख्यते ।। उक्तंचवायुपुराणे ।। रोगः स्यादुत्तराभाद्रेदेवदोषसमुद्भवः ।। सप्तवासरजा पीडा तद्दोषशमनाय च ।। ११९ ।। नीत्वाकर्षसुवर्णंतुताम्रपात्रंचप्रस्थकम् ।। चणकद्विदलंप्रस्थंपीतवस्त्रेणवेष्टितम् ।। १२० ।। रुक्ममुद्राद्वयं न्यस्य पश्चिमाभिमखोभवन् ।। पीतवस्त्रेलिखेन्मंत्रंसप्तभिःप्रणतिं चरेत् ।। ।।१२१।। मंत्रः ।। अहिर्बुध्न्यनमस्तुभ्यमुग्रवेगनमोस्तुते ।। सप्तवासरजांपीडांनिवारयप्रसीदमे ।। १२२ ।। ब्रह्मणायददौदानंरोगनिर्मुक्ततांव्रजेत् ।। इत्युत्तराभाद्रपददानशांतिविधिः ।। २६ ।।

उत्तराभाद्रपदानक्षत्रमें रोग होनेसे उत्तराभाद्रपदकी शांति लिखते हैं, वायु पुराणमें लिखा है, देवके दोषसे उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें सातदिनतक रहनेवाला रोग उत्पन्न होता है तद्दोषके शमनके लिये १ सेर वजनका ताम्रपात्र लेकर उसमें चनोंकी दाल १ सेर भर डालकर उसपर १ तोला सुवर्ण रखकर पीला वस्त्रपर मूलोक्त मंत्र लिखकर पात्र आच्छादन कर देये फिर पश्चिम दिशाकी तरफ मुख करके सात वार नमस्कार करके वह सब वस्तु और सुवर्णकी मुद्रा ब्राह्मणको दे देये, यह दान देनेसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है ।। इत्युत्तराभाद्रपदशांतिविधि ।। २६ ।।

अथ रेवत्यांरोगसंभवेरेवतीदानशान्तिर्लिख्यते ।। उक्तंचब्रह्मयामले ।। रेवत्यांजायतेरोगः पर्वदोषसमुद्भवः ।। षष्टिवासरजापीडातद्दोषशमनायच ।। १२३ ।। रक्तवर्णमयींधेनुंपीतवस्त्रेणछादिताम् ।। कांस्यपात्रंशुभंकार्यंपंचप्रस्थप्रमाणकम् ।। १२४ ।। कर्षमात्रसुवर्णस्यपूष्णोमूर्तिसमाचरेत् ।। मंत्रंपात्रसमंतात्तु चन्दनेनलिखेद्बुधः ।। १२५ ।। मंत्रः पूषणेरेवतीशायदेवदेवायतेनमः ।। षष्टिवासरजांबाधांनिवारय कृपाकर ।। १२६ ।। उत्तराभिमखोभूत्वादद्याद्दानं द्विजातये ।। रोगीनिर्मुक्ततांयातिपरमायुःसजीवति ।। १२७ ।। नक्षत्रसप्तविंशत्यांरोगेचशांतिमाचरेत् ।। दानंदद्याद्विधानेनरोगान्निर्मुक्ततांययौ ।। १२८ ।। ऋक्षेषु वर्तमानेषुनित्यंदानंकरोति यः ।। रोगं कदापि नो पश्येन्नीरोगःसर्वदाभवेत् ।।१२९।। आयुरारोग्यतांयातिकुटुंबी सौख्यमाप्नुयात् ।। १३० ।। इति सप्तविंशतिनक्षत्रेषुरोगसंभवेसप्तविंशतिनक्षत्रदानशांतिविधिसमाप्तोऽभूत् ।। २७ ।।

रेवतीनक्षत्रमें रोग होनेसे रेवतीकी शांति लिखते हैं । ब्रह्मयामलमें लिखा है पर्वदोषसे रेवतीनक्षत्रमें होनेवाला रोग ६० दिनतक तकलीफ देनेवाला होता है.

तद्दोषकी शांतिके लिये लालरंगकी गौ लाकर पीलेवस्त्रसे उसको आच्छादित करके पांचसेरवजनका कांसीका पात्र लेकर उसमें १ तोला सुवर्णकी मूर्ति पूषा देवकी बनवाकर स्थापन करदेये फिर उस पात्रके चारोंतरफ चंदनसे मंत्र लिखकर उत्तर को मुख करके ब्राह्मणको दान देये। यह दानकरनेसे रोगी रोगसे मुक्त होकर बहुत दिनतक जीता है इन सप्तविंशति २७ नक्षत्रोंमें जिस नक्षत्रमें रोग हो उसी नक्षत्र की शांति करनेसे रोगी तत्काल रोगसे मुक्त होजाता है और जो पुरुष नित्य नक्षत्रों का दान करता रहता है उसके किसी समयमें भी रोग नहीं होता है उसकी आयु नीरोग होती है, कुटुम्बमें सुख रहता है॥ २७॥

इति सप्तविंशतिनक्षत्राणां शांतिविधि समाप्तः॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्री वेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅंक रोड कार्नर
मुंबई - ४०० ००४
दूरभाष / फैक्स -०२२-२३८५७४५६

खेमराज श्रीकृष्णदास,
२२, चिंतामणी इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
रामटेकडी, पुणे- ४११०१३
दूरभाष - ०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र-४२१३०१
दूरभाष- ०५४२-२४२००७८

खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक, वाराणसी (उ.प्र) २२१००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

